डाक पंजीयन नं. 99/2021–23

E-mail:-adhuniksamachar2014@gmail.com website:www.aadhuniksamachar.com

आधुनिक भारत का आधुनिक नजरिया

PG-5

आधुनिक समाचार

प्रयागराज से प्रकाशित हिन्दी दैनिक

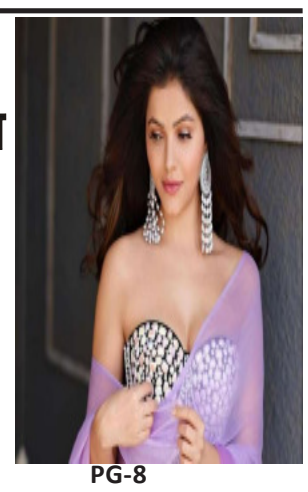

PG-8

सिनेमाःटीवी की 'छोटी बहू' रुबीना दिलैक ने साड़ी छोड़ पहनी मोनोकिनी

वर्ष -08 अंक -14 | प्रयागराज, मंगलवार 15 मार्च, 2022 | पृष्ठ- 8 | मूल्य : 2.00 रूपये

संक्षिप्त समाचार

देश में अब 12-14 साल के बच्चों को भी लगेगी कोरोना वैक्सीन, प्रीकाशन डोज को लेकर बड़ा एलान

नई दिल्ली। देश में बच्चों के लिए कोरोना वैक्सीन को लेकर बड़ा एलान किया गया है। अब 12 साल से 14 साल की उम्र के बच्चों को भी कोरोना की वैक्सीन लगेगी। केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री मनसुख मंडाविया ने इसका एलान किया है। 16 मार्च से 12 साल से 14 साल के बच्चों के लिए टीकाकरण अभियान शुरू किया जाएगा।

रूस ने यूक्रेन पर रातभर किए जोरदार हमले, तेल डिपो तबाह, खाद्य उत्पादों के गोदाम में लगी आग

नई दिल्ली। रूस और यूक्रेन के बीच चल रहे युद्ध का आज 17वां दिन है। 17 दिन के बाद भी रूस के यूक्रेन पर हमले लगातार जारी है। वहीं, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने गांधीनगर के दहेगाम में रोड शो किया। इसके बाद पीएम मोदी राष्ट्रीय रक्षा विश्वविद्यालय (आरआरयू) पहुंचे। यहां पीएम राष्ट्रीय ने राष्ट्रीय रक्षा विश्वविद्यालय (आरआरयू) की इमारत का उद्घाटन किया। इस दौरान उनके साथ गृह मंत्री अमित शाह मौजूद रहे।

यूक्रेन से लौटे भारतीय छात्रों की देश में मेडिकल की शिक्षा जारी रखने के लिए याचिका, जानें क्या दी गई दलीलें

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट में एक जनहित याचिका दाखिल की गई है जिसमें युद्धग्रस्त यूक्रेन से निकाले गए मेडिकल छात्रों के देश में ही प्रवेश और उनकी पढ़ाई जारी रखने के मुद्दे पर निर्देश दिए जाने की मांग की गई है। याचिका में सर्वोच्च अदालत से उन्हें भारतीय पाठ्यक्रम में प्रवेश देने के लिए मेडिकल सब्जेक्ट इक्यूवेलेंसी ओरिएंटेशन प्रोग्राम उपलब्ध कराने की मांग भी की गई है।अधिवक्ता राणा संदीप बुस्सा और अन्य द्वारा दाखिल याचिका में कहा गया है कि उन्होंने अनुच्छेद-21 के तहत जीवन की सुरक्षा और व्यक्तिगत स्वतंत्रता के मौलिक अधिकार को लागू करने की मांग की है। रूस और यूक्रेन के बीच युद्ध शुरू होने और यूक्रेन से छात्रों के लौटने के बाद से हाई कोर्टों और सुप्रीम कोर्ट में कई याचिकाएं दाखिल हुई हैं जिनमें इन छात्रों की पढ़ाई जारी रखने में मदद के लिए केंद्र को निर्देश देने की मांग की गई है।इस संबंध में एक याचिका प्रवासी लीगल सेल ने दिल्ली हाई कोर्ट में दाखिल की है। सुप्रीम कोर्ट में दाखिल याचिका में कहा गया है कि केंद्र सरकार ने यूक्रेन से भारतीय छात्रों को स्वदेश वापस लाने में बेहतरीन काम किया है। मौजूदा वक्त में बड़ी समस्या इन दी है। ऐसे में सरकार को इन छात्रों की परेशानियों पर गौर करना चाहिए। इस बीच प्रधानमंत्री मोदी

छात्रों को पढ़ाई जारी रखने की है ऐसे सरकार को भारतीय चिकित्सा पाठ्यक्रम में विदेशी मेडिकल छात्रों को शामिल करने के लिए कदम उठाना चाहिए। याचिका में यह भी कहा गया है कि राष्ट्रीय आयुर्विज्ञान आयोग ने बाहर से आए मेडिकल के छात्रों को भारत में अपनी इंटर्नशिप पूरी करने की अनुमति ने यूक्रेन में जारी लड़ाई को देखते हुए मौजूदा वैश्विक परिदृश्य की समीक्षा की। पीएम मोदी ने रविवार को सुरक्षा मामलों की मंत्रिमंडल समिति यानी सीसीएस की बैठक की अध्यक्षता की। जारी बयान के मुताबिक पीएम मोदी ने भारत की सुरक्षा तैयारियों संबंधी प्रगति की जानकारी ली।

ट्रांसफर पोस्टिंग मामले में देवेंद्र फडणवीस से पूछताछ करेगी साइबर पुलिस, जानें क्या है पूरा मामला

मुम्बई। महाराष्ट्र में ट्रांसफर पोस्टिंग मामला अब तूल पकड़ता दिख रहा है। मामले में आज मुंबई साइबर पुलिस देवेंद्र फडणवीस से पूछताछ करने वाली है। बता दें कि कल ही पुलिस ने फडणवीस से जुड़ी जानकारी न दें। बता दें कि देवेंद्र फडणवीस ने मार्च 2021 में एक आरोप लगाया था कि महाराष्ट्र में बड़े पदों पर अफसरों की तैनाती के लिए रिश्वतखोरी चल रही है। इस पर उन्होंने

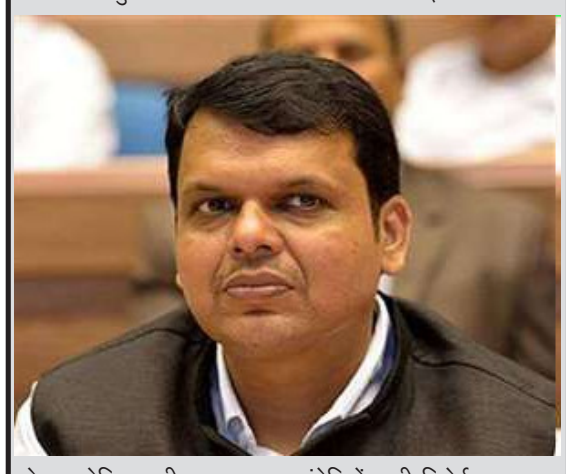

को एक नोटिस जारी कर बुलाया था। लेकिन जानकारी के अनुसार मुंबई साइबर पुलिस आज उनके आवास पर ही बयान दर्ज करेगी। गौरतलब है कि कल फडणवीस ने कहा था कि विपक्ष का नेता होने के नाते उन्हें यह अधिकार है कि वह ट्रांसफर पोस्टिंग घोटाले इंटेलिजेंस की रिपोर्ट का हवाला भी दिया था। लेकिन अब सरकारी दस्तावेज लीक होने के मामले में साइबर पुलिस ने उन्हें तलब कर लिया है। बता दें कि पूर्व सीएम ने पुलिस विभाग में हो रहे तबादलों में रिश्वतखोरी का आरोप लगाया था।

कोरोना मामलों में गिरावट जारी 24 घंटे में आए 3116 नए मामले 40000 से कम हुए एक्टिव केस

नई दिल्ली। देश में कोरोना मामलों में लगातार गिरावट देखने को मिल रही है। बीते 24 घंटे में देशभर में कोरोना के 3,116 नए मामले सामने आए हैं। कल यह आंकड़ा 3,614 का था। अब मौत के आंकड़ों में भी कमी दिख रही है। केंद्रीय स्वास्थय मंत्रालय द्वारा जारी रिपोर्ट के अनुसार पिछले 24 घंटे में कोरोना से 47 लोगों ने अपनी जान गंवाई है। कोरोना से हुई कुल मौतों की संख्या 5,15,850 हो गई है। देश में कोरोना के अब कुल मामले 4,29,90,991 हो गए हैं। एक्टिव केसों में भी अब लगातार कमी देखने को मिल रही है। कुल एक्टिव केसों की संख्या अब 38,069 हो गई है जो की करीब ढाई माह बाद ऐसा देखने को मिला है। वहीं बीते 24 घंटों में 5559 लोगों के कोरोना को मात दी है। कुल रिकवरी की बात करें तो यह संख्या 4,24,37,072 पर आ गई है। भारत सरकार द्वारा चलाया जा रहा वैक्सीनेशन अभियान भी तेजी से काम कर रहा है और अपना असर दिखा रहा है। इसी रफ्तार के चलते देश में अब तक लोगों को वैक्सीनेशन की 1,80,13,23,547 डोज लगाई जा चुकी है। कोरोना के मामले अब हर रोज कम हो रहे हैं और लोगों ने भी सावधानी बरतनी कम कर दी है। ज्यादातर राज्यों में कोरोना पाबंधियों को भी हटा लिया गया है। विशेषज्ञयों न लेकिन इस रवैये को लेकर चिंता जताई है। टाटा इंस्टीट्यूट फॉर जेनेटिक्स एंड सोसाइटी के निदेशक राकेश मिश्रा के अनुसार अभी कोरोना वायरस के अंतिम स्टेज में नहीं पहुंचा है अभी लोगों को सावधानी बरतने की जरूरत है।

पिछले 676 दिन में कोविड के सबसे कम मामले सामने आए, भारत में 24 घंटे के दौरान कोविड-19 के 3,116 नए मामल

नई दिल्ली। भारत में 24 घंटे के दौरान कोविड-19 के 3,116 नए मामले सामने आए। ये पिछले 676 दिनों में संक्रमण के सबसे कम दैनिक मामले हैं। इसके साथ ही देश में संक्रमितों की कुल संख्या बढ़कर 4,29,90,991 हो गई है। सक्रिय मामलों की संख्या घटकर 38,069 रह गई है। केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय की ओर से शनिवार सुबह आठ बजे अपडेट किए गए आंकड़ों के अनुसार, पिछले 24 घंटे के दौरान 47 मरीजों की मौत हुई। कुल संक्रमितों के मुकाबले इलाज करा रहे मरीजों की संख्या 0.09 प्रतिशत है। राष्ट्रीय स्तर पर कोविड से ठीक होने की दर में भी सुधार हुआ है तथा यह 98.71 प्रतिशत तक पहुंच गई है। पिछले 24 घंटे के दौरान सक्रिय मामलों की संख्या में 2,490 की कमी आई है। महामारी से अब तक कुल 5,15,850 लोगों की मौत हो चुकी है। महाराष्ट्र में सबसे ज्यादा 1,43,752 मौतें हुई हैं। देशभर में चल रहे टीकाकरण अभियान के तहत अब तक कोविड रोधी वैक्सीन की 180.13 करोड़

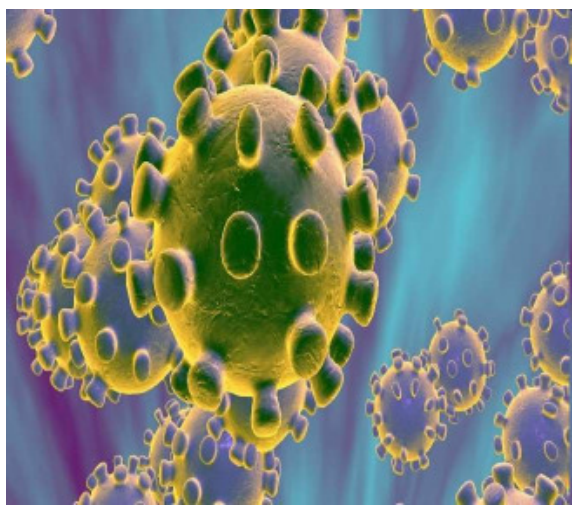

डोज लगाई जा चुकी है। पिछले 24 घंटों के दौरान वैक्सीन की 20,31,275 डोज लगाई गई। एक्टिव केसों में भी अब लगातार कमी देखने को मिल रही है। कुल एक्टिव केसों की संख्या अब 38,069 हो गई है जो की करीब ढाई माह बाद ऐसा देखने को मिला है। वहीं बीते 24 घंटों में 5559 लोगों के कोरोना को मात दी है। कुल रिकवरी की बात करें तो यह संख्या 4,24,37,072 पर आ गई है। भारत सरकार द्वारा चलाया जा रहा वैक्सीनेशन अभियान भी तेजी से काम कर रहा है और अपना असर दिखा रहा है। इसी रफ्तार के चलते देश में अब तक लोगों को वैक्सीनेशन की 1,80,13,23,547 डोज लगाई जा चुकी है। कोरोना के मामले अब हर रोज कम हो रहे हैं और लोगों ने भी सावधानी बरतनी कम कर दी है। ज्यादातर राज्यों में कोरोना पाबंधियों को भी हटा लिया गया है। विशेषज्ञयों न लेकिन इस रवैये को लेकर चिंता जताई है। टाटा इंस्टीट्यूट फॉर जेनेटिक्स एंड सोसाइटी के निदेशक राकेश मिश्रा के अनुसार अभी कोरोना वायरस के अंतिम स्टेज में नहीं पहुंचा है अभी लोगों को सावधानी बरतने की जरूरत है।

तमिलनाडु की पेरुमल पहाडियों के जंगल में लगी भीषण आग, तस्वीरों में दूर तक दिख रहीं लपटें

डिंडीगुल (तमिलनाडु)। तमिलनाडु के डिंडीगुल जिले में पेरुमल पहाडियों के जंगल में गुरुवार से लगी आग अब और भी भीषण हो गई है।

चारों ओर आग का मंजर नजर आ रहा है। आग इतनी ज्यादा है कि उसे बुझाने में लगे वन अधिकारियों की हर कोशिश नाकाम साबित हो रही है। बता दें कि गुरुवार को ही वन विभाग को इन पहाडियों के पास एक वन क्षेत्र के कुछ हिस्सों में आग लगने की सूचना मिली थी। वन विभाग के अधिकारियों के अनुसार गुरुवार को मिली जानकारी के बाद एक टीम का गठन किया गया था ।उसी दिन से आग पर काबू पाने की कोशिश की जा रही है लेकिन अभी तक कोई सफलता हाथ नहीं लगी है। अधिकारियों की मानें तो आग अब पूरे जंगल में फैलती जा रही है। तमिलनाडु डिंडीगुल में पेरुमल पहाडियों के वन क्षेत्र में लगी हुई आग फैलते जा रही है। वन अधिकारी आग बुझाने में लगे हैं। डिंडीगुल जिला वन विभाग के अधिकारियों का कहना है, ठयहां अभी तक वन्यजीवों को इससे कोई नुकसान नहीं हुआ है। डिंडीगुल जिला के वन विभाग के अधिकारियों की मानें तो इस जंगल में काफी वन्यजीव हैं और अब उनकी जान को भी खतरा हो गया है। जानकारी के अनुसार आग इतनी भयावह है कि इसमें कई जानवरों की जान जा सकती है।

असम में 5 साल के बच्चे की हत्या पर भीड़ का फूटा गुस्सा, आरोपी को पीट कर किया आग के हवाले

असम। असम से एक अमानवीय घटना की खबर सामने आई है। डिब्रूगढ़ के रोहमोरिया इलाके के धालाजन चाय बागान में एक व्यक्ति को भीड़ ने पीट-पीटकर मार डाला

और फिर उसे आग के हवाले कर दिया। बता दें कि इस व्यक्ति पर पांच साल के बच्चे की हत्या का आरोप था, जिसकी गुस्से से पागल भीड़ ने जान ले ली। एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी ने इस पूरी घटना की जानकारी दी। इस घटना की पूरी जानकारी देते हुए वरिष्ठ पुलिस अधिकारी ने कहा, 'डिब्रूगढ़ के रोहमोरिया पुलिस थाने के ढालजन चाय बागान में पांच साल के एक बच्चे की 35 वर्षीय सुनील तांती ने चाकू मारकर हत्या कर दी थी।' अधिकारी ने आगे कहा, 'घटना के बाद, गुस्साई भीड़ ने तांती को चाकू और डंडों से बेरहमी से पीटा और बाद में धान के खेत में आग लगा दी। गुस्से में अपना आपा खो बैठी भीड़ और स्थिति को नियंत्रित करने के लिए डिब्रूगढ़ के पुलिस अधीक्षक श्वेतांक मिश्रा, चबुआ सर्कल इंस्पेक्टर, रोहमोरिया थाना प्रभारी के साथ केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ) मौके पर पहुंचे।

अंडमान और निकोबार द्वीप में भूकंप के झटके, जानें रिक्टर स्केल पर कितनी रही तीव्रता

पोर्ट ब्लेयर। अंडमान और निकोबार द्वीप पर आज भूकंप के झटके महसूस किए गए हैं। द्वीप के डिगलीपुर के 225 किमी उत्तर-पूर्व में यह कंपन हुआ है। नेशनल सेंटर फार सीस्मोलाजी से मिली गई है। भूकंप से किसी भी तरह के जान माल का नुकसान होने की जानकारी फिलहाल नहीं मिली है। अंडमान और निकोबार द्वीप में पिछले महीने भी भूकंप के झटके महसूस किए गए थे। द्वीप के

जानकारी के अनुसार भूकंप सुबह 8 बजकर 58 मिनट पर आया। हालांकि भूकंप की तीव्रता ज्यादा नहीं रही, केवल हलके झटके ही महसूस किए गए। रिक्टर स्केल पर 4.1 मैगिनट्यूड की तीव्रता दर्ज की कैंपबेल बे में यह भूकंप आया था। हालांकि तब भी भूकंप की तीव्रता ज्यादा नहीं रहीं थी। नेशनल सेंटर फार सीस्मोलाजी के अनुसार रिक्टर स्केल पर भूकंप की तीव्रता 4.4 मैगिनट्यूड रही थी।

यूक्रेन में मारे गए भारतीय छात्र नवीन के शव को लाने में लग सकता है समय जानें-सीएम बोम्मई ने क्या कहा

बेंगलुरु। यूक्रेन-रूस युद्ध में मारे गए भारतीय एमबीबीएस छात्र नवीन के शव को भारत लाने में अभी और समय लग सकता है। कर्नाटक के सीएम बासवराज

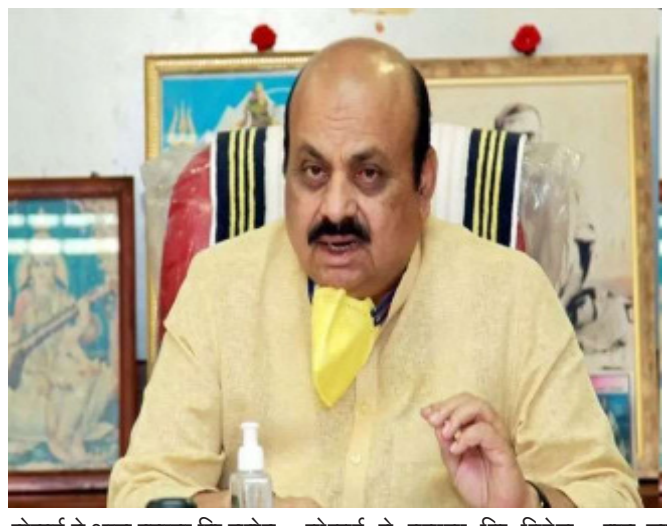

बोम्मई ने आज बताया कि यूक्रेन में लगातार गोलाबारी हो रही है। ऐसे में शव को लाने में दिक्कत हो रही है। उन्होंने कहा कि नवीन शेखरप्पा के पार्थिव शरीर को वापस लाने की प्रक्रिया वहां गोलाबारी रुकने के बाद जल्द फिर से शुरू की जाएगी। इस बीच बोम्मई ने बताया कि विदेश मंत्रालय इसपर काम कर रहा है। बता दें कि रूस द्वारा यूक्रेन पर लगातार गोलीबारी और बमबारी की जा रही है। इसी गोलीबारी का शिकार नवीन हो गए थे। गौरतलब है कि युद्ध के 10वें दिन नवीन एक सुपरमार्किट में खाना लेने के लिए लाइन में लगे थे और उसी दौरान उनपर ये हमला हो गया था। नवीन की मौके पर ही मौत हो गई थी। 21 वर्षीय एमबीबीएस छात्र नवीन खारकीव नेशनल मेडिकल यूनिवर्सिटी से अपनी पढ़ाई पूरी कर रहे थे। जानकारी के अनुसार नवीन अन्य छात्रों के साथ बंकर में रह रहे थे लेकिन वहां से कुछ देर के लिए निकलना ही उनको महंगा पड़ गया। बता दें कि यूक्रेन में मेडिकल की पढ़ाई भारत से काफी कम खर्चे में हो जाती है। यही कारण है कि नवीन वहां अपनी मेडिकल की पढ़ाई करने गए थे।

होली के त्योहार को लेकर बाजारों में लौटी रौनक

(आधुनिक समाचार सेवा)
विलास गुप्ता

प्रयागराज। होली के त्योहार के मद्देनजर बाजारों में रौनक लौट आई है। इस समय दुकानों पर रंगों के

साथ-साथ तरह-तरह की पिचकारियां देखने को मिल रही है।परिजनों के साथ घूमने आए बच्चों को अपनी ओर आकर्षित कर रही है। जिसके चलते इस बार की होली में व्यापार अच्छे होने की उम्मीद व्यापारी लगा रहे हैं।होली के त्योहार को 3 दिन ही बचे हैं, जिसको लेकर दुकानों में रौनक लौट आई है और बाजार में चारों तरफ कार्टून वाली पिचकारियां और कलर स्प्रे बच्चों को लुभाने लगे हैं।अबीर गुलाल के साथ हर्बल रंग भी दुकानों बिक रहे है। अबीर गुलाल के ब्रांडेड पैक, रंग-बिरंगे मॉस्क तथा मुखौटे, टोपी व हर्बल रंग भी ग्राहकों को आकर्षित कर रहे हैं।होली के लिए सजी दुकानों में इस बार सभी को मोदी मुखौटा अपनी और आकर्षित कर रहा है।और दुकानदारों की मांगे तो मोदी मुखौटे की मांग सबसे ज्यादा बाजार में बढ़ गई है।इसी के साथ साथ बच्चों को टीवी पर आने वाले स्पाइडर मैन, डोरेमोन, मोटू पतलू, छोटा भीम, ड्रैगन व लाल, पीले, नीले, नारंगी रंगों के बाल वाले मुखौटे को भी बच्चे सबसे ज्यादा पसंद कर रहे हैं।साथ ही कार्टूनों से सजे कपड़े भी बाजार में लोगों को आकर्षित कर रहे हैं और कपड़ों की मांग भी खूब बढ़ गई है।वहीं चौक-लोकनाथ में भी चिप्स पापड के साथ गुजियां की भी खरीददारी लोग कर रहे है।

फूलपुर टाउन एरिया कर्मचारी पदाधिकारियों का हुआ स्वागत

(आधुनिक समाचार सेवा)
सरफराज अहमद

फूलपुर। सोमवार को नगर पंचायत फूलपुर मोहल्ला फरीदाबाद में समाजवादी पार्टी जिला उपाध्यक्ष नसीरुद्दीन राईन के आवास पर उन्ही के नेतृत्व में नगर पंचायत स्वायत शासन कर्मचारी संगठन

का फूलपुर अध्यक्ष मोहम्मद सहबान वह उपाध्यक्ष कृष्ण चन्द्र शुक्ला को बनाए जाने पर सपाइयों ने फूल मालाओं से लाद कर भव्य स्वागत किया जिला उपाध्यक्ष नसीरुद्दीन राईन ने कहा कि मो सहबान वह कृष्ण चन्द्र शुक्ला हमेशा नगर वासियों के लिए अवकाश के दिन भी समर्पित रहते हैं इनके सेवा से समस्त नगर वासी खुश रहते हैं इन लोगों के मनोनयन से नगर वासियों में खुशी का माहौल है सभी ने मिठाइयां खिलाकर बधाई दी इस दौरान सयुस विधानसभा अध्यक्ष कुमार मंगल वरिष्ठ सपा नेता मो अनीस लोहिया वाहिनी फूलपुर ब्लॉक अध्यक्ष मोहम्मद इरफान नगर उपाध्यक्ष वाजिद तुफानी सभासद प्रत्याशी मो अकील वरिष्ठ सपा नेता परवेज आलम, शेर खान, अखिलेश यादव,मुराद मंसूरी,विरेन्द्र यादव याहिया सिद्दीकी, अरकान सिद्दीकी, सभाजीत पाल, आदि सपाई मौजूद रहे।

बॉलीवुड स्टार टीना दत्ता के हाथ से बाँदा की बेटी नेहा कश्यप को मिला सम्मान

(आधुनिक समाचार सेवा)

प्रयागराज। एक बार फिर नेहा कश्यप ने किया बाँदा जिले का नाम रोशन बीते 13 को झाँसी में हुए मिस बुंदेलखंड 'द इंडिया बेस्ट अचीफ़मेंट अवार्ड2022 में बाँदा की बेटी नेहा कश्यप को ''बेस्ट ऐक्टर' अवार्ड से नवाज़ा गया ।ेव् अकैडमी आर्ट सोसाययटी की ओर से 13 मार्च को झाँसी में कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें बाँदा की नेहा कश्यप को बॉलीवुड स्टार टीना दत्ता के हाथों 'बेस्ट ऐक्टर 'अवार्ड से सम्मानित किया गया ! मिस बुंदेलखंड मॉडलिंग के स्टेज पर नेहा ने अपनी कैट वॉक से जलवे बिखेर दिए टीना दत्ता ने उनकी ऐक्टिंग के साथ साथ कैट वॉक की भी बहुत तारीफ़ की और उनके उज्जल भविष्य की कामना की ।नेहा कश्यप ने बताया कि टीना दत्ता जी ने नेहा की बेहत सहराना की नेहा कश्यप को ऐक्टिंग के छेत्र में आगे बढाने की शुभकामनाएँ दी हम बता दे नेहा कश्यप ने पहले भी मिस बुंदेलखंड ,मिस इंडिया जैसे बहुत से खिताब अपने नाम किए है इनको मॉडलिंग के साथ साथ ऐक्टिंग लाइन में भी बहुत रुझाव है नेहा कश्यप ऐक्टिंग लाइन में भी अपना कैरीअर बनाना चाहती है और बहुत आगे जाना चाहती है नेहा अपने साथ साथ बाँदा का नाम

रोशन करना चाहती है । इन्होंने हमें बताया कि इनका बचपन से मॉडलिंग ऐक्टिंग डान्स में शुरू से काफ़ी दिलचस्प रहा है ये एक यूटूबर भी है यूटूब में डान्स के विडीओ उपलोड करती रहती है इनके काफ़ी मात्रा में यूटूब में सब्स्क्राइबर भी है नेहा कश्यप सेंट मैरी के पास ज्योति नगर की रहने वाली है नेहा ने बताया की ये पहले भी बहुत सी वेबसेरिस शॉर्ट मूवी में भी कम कर चुकी है नेहा कश्यप ने बताया की इसका श्रेय वो अपने माँ पापा को देगी जिन्होंने उन्हें बहुत सपोर्ट किया और आगे बढाया है नेहा उनका सपना पूरा करना चाहती है उन्हें गर्व महसूस करना चाहती है और माता पिता के साथ साथ वो बाँदा का नाम भी रोशन करना चाहती है

होली पर नहीं बिकेगी शराब,दुकानें रहेंगी बन्द

(आधुनिक समाचार सेवा)
डॉ0रणजीत सिंह

प्रतापगढ़। जिला मजिस्ट्रेट डॉ0 नितिन बंसल ने बताया कि जनपद में दिनांक 17/18/19 मार्च को होली का त्योहार मनाया जायेगा।इसे दृष्टि में रखकर शराब की दुकानें बंद रहेगी।होली त्योहार के मद्देनजर मदिरा की खपत में उत्तरोत्तर वृद्धि होने के दृष्टिगत मदिरा का अवैध निर्माण, संग्रह, अवैध विक्री तथा तस्करी में असामाजिक तत्वों के सक्रिय होने की शक्यता से इन्कार नही किया जा सकता है। इस प्रकार की गतिविधियों से जहॉ एक ओर आबकारी राजस्व की हानि होती है वही दूसरी ओर इस बात की सम्भावना से इन्कार नही किया जा सकता है कि रंजिशन या सस्ती मदिरा के प्रलोभन के तौर पर ऐसी विषाक्त मदिरा का प्रचलन हो जाये, जिससे जन हानि हो। जिला मजिस्ट्रेट ने होली त्योहार के दृष्टिगत समस्त ठेकों पर विशेष अभियान चलाकर व्यापक जांच/छापेमारी हेतु तहसीलवार टीमों का गठन कर दिया है। उन्होंने नगर क्षेत्र हेतु अपर उपजिलाधिकारी (प्रथम), पुलिस क्षेत्राधिकारी नगर एवं क्षेत्रीय थाना स्टाफ को, तहसील सदर हेतु उपजिलाधिकारी सदर, पुलिस क्षेत्राधिकारी सदर एवं क्षेत्रीय थाना स्टाफ का गठन किया है। इसके अलावा नगर क्षेत्र व तहसील सदर हेतु आबकारी निरीक्षक क्षेत्र1 सदर को टीम में सम्मिलित किया गया है। इसी प्रकार तहसील पट्टी हेतु उपजिलाधिकारी पट्टी, पुलिस क्षेत्राधिकारी पट्टी व आबकारी निरीक्षक क्षेत्र-2 पट्टी को, तहसील कुण्डा हेतु उपजिलाधिकारी कुण्डा, पुलिस क्षेत्राधिकारी कुण्डा व आबकारी निरीक्षक क्षेत्र-3 कुण्डा को, तहसील लालगंज हेतु उपजिलाधिकारी लालगंज, पुलिस क्षेत्राधिकारी लालगंज व आबकारी निरीक्षक क्षेत्र-4 लालगंज को तथा तहसील रानीगंज हेतु उपजिलाधिकारी रानीगंज, पुलिस क्षेत्राधिकारी रानीगंज व आबकारी निरीक्षक क्षेत्र-5 रानीगंज की टीम गठित की गयी है। उन्होने गठित टीमों को निर्देशित किया है कि होली के त्योहार पर सघन अभियान चलाकर व्यापक जांच/छापेमारी का आयोजन कर मद्य निष्कर्षण/अवैध व अपमिश्रिम मदिरा के निर्माण एवं विक्री/भण्डारण के अड्डों को समाप्त कराते हुये समस्त ठेकों की जांच व अन्वीक्षण कर अवैध मद्य निष्कर्षण एवं विक्री पर प्रभावी अंकुश लगाने के साथ ही जहां पर अवैध शराब पूर्व में जांच के दौरान पकड़ी गयी और मुकदमें पंजीकृत हुये थे, वहां पर विशेष सतर्क दृष्टि रखते हुये जनपद में जहां भी अवैध शराब की बरामदगी हो वहां तत्परता से वैधानिक कार्यवाही सुनिश्चित की जाय।

पुस्तक विमोचन कार्यक्रम में हुआ संपादक अखिल नारायण सिंह एवं अधिवक्ता अनिल त्रिपाठी का सम्मान

(आधुनिक समाचार सेवा)
डॉ0रणजीत सिंह

प्रतापगढ़। एंजिल्स साझा काव्य संग्रह का विमोचन कार्यक्रम बंधन पैलेस में भव्यता एवं के साथ मनाया गया। संगम लाल त्रिपाठी भँवर की अध्यक्षता में हुए इस कार्यक्रम के

मुख्य अतिथि लोकेश शुक्ला निदेशक आकाशवाणी प्रयागराज, विशिष्ट अतिथि डॉ0आर0के0 सिंह एवं संचालक डॉ श्याम शंकर शुक्ल श्याम रहेंकार्यक्रम का आरम्भ दीप प्रज्ज्वलन एवं गाजियाबाद की कववयित्री गार्गी कौशिक की सरस्वती वन्दना से हुआ।कई जनपदों के रचनाकारों ने सहभागिता की।वाराणसी से इन्द्रजीत तिवारी निर्भीक, प्रयागराज से डॉ बालकृष्ण, मंजू पांण्डे,संतोष शुक्ल, वन्दना शुक्ला, जया मोहन, सुलतानपुर से सपना मिश्रा,अमेठी से गंगाधर शुक्ल,अनिरुद्ध कुमार मिश्र, भदरी, कुंडा से प्रामिला त्रिपाठी, और जनपद प्रतापगढ़ से डॉ दयाराम मौर्य रतन,डॉ राजमूर्ति सिंह सौरभ,सुनील प्रभाकर, नागेन्द्र अनुज,डॉ मो.अनीस, विनय शुक्ल, गजेन्द्र विकट, जयराम राही, सुरेश ठव्योमठ, सत्यम शार्दूल, श्रीनाथ, सुरेश संभव,सीमा त्रिपाठी,आभा मिश्रा, श्री सचिन मिश्रा, तनवीर फात्मा,सरिता त्रिपाठी,अंजनी अमोघ,डॉ विंध्याचल सिंह आदि उपस्थिति रहे। कार्यक्रम में पत्रकार कृष्णकांत त्रिपाठी, शैलेन्द्र मिश्रा, संतोष भगवन, संजय द्विवेदी , ओम प्रकाश गुप्ता भी उपस्थित रहे।प्रबन्धक सम्पादक एवं आयोजिका डॉ शाहिदा ने सभी अतिथियों का स्वागत किया। वरिष्ठ पत्रकार एवं संपादक अखिल नारायण सिंह एवं वरिष्ठ अधिवक्ता अनिल त्रिपाठी प्रवात का सारस्वत अभिनंदन किया गया।कुछ अन्यलोगों को प्रशस्ति पत्र, अंगवस्त्रम और पुस्तक देकर सम्मानित किया।कार्यक्रम के अंत में स्वागताध्क्ष बी.के. सोनी प्रधानाचार्य न्यु एन्जिल्स स्कूल ने सभी का आभार व्यक्त किया।

पूर्व भाजपा विधायक रानीगंज धीरज ओझा के भाई पर सरेराह फायरिंग

प्रयागराज। यूपी चुनाव में अबकी प्रतापगंज की रानीगंज सीट से पराजित पूर्व भाजपा विधायक धीरज ओझा के भाई नीरज ओझा पर

फायरिंग की घटना से पुलिस-प्रशासन में खलबली मची है। घटना सोमवार दोपहर बाद करीब की है जब वह कार में घर से जाते वक्त बभनमई चौराहे पर रुके थे। कई बाइक पर आए लोगों ने समाजवादी पार्टी का नाम लेकर उनसे मारपीट की और फिर फायरिंग कर भाग गए। वह बाल-बाल बच गए। खबर मिली तो पुलिस वहां पहुंची और हमलावरों की तलाश शुरू की। सीओ के साथ पुलिस टीम छापेमारी कर रही है। नीरज ओझा ने बताया कि जान से मारने की नीयत से उन पर दो फायर किए गए थे। घटनाक्रम यूं है। रानीगंज के पूर्व विधायक धीरज ओझा के बड़े भाई नीरज ओझा सोमवार को शाम करीब चार बजे अपने पैतृक आवास बभनमई से कार में गांव के पास स्थित कैंप कार्यालय जा रहे थे। वह बभनमई चौराहे पर रुककर कुछ लोगों से बातचीत कर रहे थे। नीरज का आरोप है कि इसी बीच चार बाइक पर 10-12 लोग वहां पहुंचे और समाजवादी पार्टी के पक्ष में नारेबाजी करते हुए उनसे भिड़ गए।

फूलपुर तहसील में फाइलें डंप, घूसखोरी चरम पर: शमीम अहमद

(आधुनिक समाचार सेवा)
सरफराज अहमद

फूलपुर। तहसील फूलपुर में बीते 2 माह से एसडीएम तहसीलदार के ना बैठने से ग्रामीण दूर दराज से आकर लौट जाते हैं। ऐसे में घूसखोरी का बोलबाला है। अधिवक्ता संघर्ष समिति के अध्यक्ष शमीम अहमद सिद्दीकी ने कहा। कि फूलपुर के अधिकारी जिले पर बैठकर मौज मारते हैं। अधिवक्ता एवं वादकारी दंश झेल रहे हैं। उन्होंने ज्वाइंट बैठक कर कहां। कि सरकार फूलपुर तहसील में व्याप्त भ्रष्टाचार और अधिकारियों की गैर हाजिरी पर अपना बुलडोजर क्यों नहीं चला रही। जब तक सख्ती नहीं होगी। तब तक तहसील कार्य में सुधार अपेक्षित नहीं है। मौके पर सत्यनारायण, सौरव यादव, प्रकाश यादव, विजय बहादुर, शिवप्रकाश, महेश यादव, जाकिर जैदी, सद्दाम आदि लोग मौजूद रहे।

मुजतबा सिद्दीकी ने नजदीकी लोगों को सुनाई आपबीती

(आधुनिक समाचार सेवा)
सरफराज अहमद

फूलपुर। पूर्व विधायक प्रतापपुर एवं सपा प्रत्याशी फूलपुर मोहम्मद

मुजतबा सिद्दीकी ने कार्यकर्ताओं तथा अपने करीबियों से मतगणना में हुई अनियमितता शेयर करते हुए दुःख जताया। उन्होंने कहा। कि मुझे अफसरान ने जानबूझकर हराया। जीती हुई सीट हाथ से निकल गई। उन्होंने आगे कहा। कि अब हम 5 वर्ष पीछे चले गए। आगे कहा कि लोकतंत्र को मजाक तंत्र बना दिया गया। तीन बार विधायक पद पर विजय हुई। परंतु ऐसी लूट खसोट नहीं देखी। बीबीपैट तथा ईबीएम पकड़े जाने पर कोई कार्यवाही नहीं हुई। यदि ईवीएम का यही हाल रहा। तो चुनाव लड़ने का लोग बाग मन ही नहीं बना पाएंगे। एक सवाल के जवाब में कोर्ट जाने की बात को उन्होंने एक सिरे से खारिज करते हुए कहा। कि तब तक 5 साल बीत जाएंगे।

इलाहाबाद यूनिवर्सिटी की छात्रा को परेशान करने पर छात्र निलंबित जानिए क्या हरकत की थी उसने

प्रयागराज। इलाहाबाद केंद्रीय विश्वविद्यालय की विधि छात्रा को परेशान करने पर एलएलबी प्रथम सेमेस्टर के छात्र को निलंबित कर दिया गया है। चीफ प्राक्टर प्रोफेसर हर्ष कुमार ने छात्रा की शिकायत पर आरोपित छात्र को कारण बताओ नोटिस जारी कर स्पष्टीकरण मांगा है। देवरिया जिले के दानोपुर साउथ स्थित न्यू बस्ती टीचर कालोनी निवासी सुनील यादव का पुत्र शुभांशु सिंह यादव इलाहाबाद विश्वविद्यालय में एलएलबी प्रथम सेमेस्टर का छात्र है। चीफ प्राक्टर के मुताबिक विधि विभाग की एक छात्रा ने सोमवार को लिखित शिकायत की। इस छात्रा का आरोप है कि शुभांशु सितंबर 2020 से ही लगातार विश्वविद्यालय परिसर एवं बैक रोड पर उसे प्रताड़ित करता रहता है। आरोप यह भी है कि साथियों के साथ निरंतर विश्वविद्यालय परिसर में उस पर अभद्र टिप्पणी की जाती है। सोमवार को अपराह्न 3:15 पर छात्रा बैंक रोड चौराहे पर बस का इंतजार कर रही थी। इस दौरान शुभांशु ने अपने साथियों के साथ उसे रोक रखा। इससे वह मानसिक तौर पर काफी प्रताड़ित हुई। इसके बाद उसने चीफ प्राक्टर से इस बारे में शिकायत की।चीफ प्राक्टर के मुताबिक यह कृत्य घोर अनुशासनहीनता की श्रेणी में आता है। इस लिहाज से शुभांशु को तत्काल प्रभाव से विश्वविद्यालय से निलंबित कर दिया गया।

नैनी औद्योगिक प्रशिक्षण केन्द्र, प्रयागराज

भारत सरकार की कौशल विकास योजना में अगस्त 2021 से प्रारम्भ हो रहे सत्र के लिए निम्नलिखित ट्रेडों में दाखिले के लिए आवेदन पत्र आमंत्रित ट्रेड प्रवेश योग्यता तथा प्रस्तुत विभिन्न पाठ्यक्रमों की अवधि इस प्रकार है-

क0सं0	ट्रेड का नाम	ट्रेड की अवधि	योग्यता
1.	कोपा	1 वर्ष	12वीं पास
2.	फिटर	2 वर्ष	10वीं पास
3.	बेसिक कम्प्युटिंग	6 माह	साक्षर
4.	डाटा इंट्री ऑपरेटर	6 माह	10वीं पास
5.	फायर प्रिवेन्शन एण्ड इंडस्ट्रियल सेफ्टी	6 माह	8वीं पास
6.	सेक्योरिटी सर्विस	6 माह	8वीं पास
7.	कम्प्यूटर हार्डवेयर एण्ड एसेम्बली	1 वर्ष	10वीं पास
8.	सर्टिफिकेट इन कम्प्युटर एप्लीकेशन	1 वर्ष	10वीं पास
9.	इलेक्ट्रिकल टेक्निशियन्स	1 वर्ष	8वीं पास
10.	रेफरिजरेटर एण्ड एयर कन्डिसनिंग	1 वर्ष	8वीं पास
11.	योगा असिस्टेन्ट	1 वर्ष	10वीं पास
12.	वेल्डिंग टेक्नोलॉजी	1 वर्ष	8वीं पास
13.	कम्प्यूटर टीचर ट्रेनिंग कोर्स	1 वर्ष	10वीं पास

1.प्रमाण पत्रः- सफल प्रशिक्षणार्थियों को भारत सरकार द्वारा प्रमाणपत्र दिए जाते है, जो केंन्द्रीय सरकार एवं राज्य सरकार के अधीनस्थ पद एवं सेवा में भर्ती के लिए मान्य है। **2.चयन की प्रक्रियाः-** इस वर्ष कोविड-19 महामारी के चलते सभी सीटों पर दाखिले पहले आओ-पहले पाओ के आधार पर किये जायेंगे। **3.आयु सीमाः-** उम्मीदवारों की आयु 1 अगस्त 2021 को न्यूनतम 14 वर्ष से अधिक होनी चाहिए। **4.आवेदन कैसे करेः-** आवेदन फॉर्म संस्थान की वेबसाइट पर जाकर ऑनलाइन भरे जा सकते है तथा संस्थान के कार्यालय से निःशुल्क भी प्राप्त किया जा सकता है। **5.**आवेदन फॉर्म भरते समय पंजीकरण शुल्क रूपये 2665/- का भी देय होगा। **6.कक्षायें/उपस्थितिः-** छात्रों की उपस्थिति में दो भाग शामिल है- थ्योरी क्लास और ट्रेनिंग इस वर्ष कोविड-19 स्थिति के कारण सभी छात्र संस्थान द्वारा आयोजित ऑनलाइन कक्षाओं में भाग लेंगे तथा उसके लिए संस्थान में छात्रों की भौतिक उपस्थिती की अनिवार्यता नहीं है, जब तक कोविड-19 की वर्तमान स्थिति समाप्त नहीं हो जाती है। प्रशिक्षण के लिए छात्रो को प्रधानाचार्य की अनूमति के साथ, अपने सम्बंधित मूल स्थानों पर प्रशिक्षण पूरा करने की अनुमति है। परीक्षा के समय छात्रों की उपस्थिति अनिवार्य होगी। **7.छात्रवृत्तिः-** दाखिले के उपरांत शुल्क प्रतिपूर्ति के लिए सभी ट्रेडों में आरक्षित श्रेणी के अभ्यर्थी, जिनके पास आय प्रमाण पत्र एवं सम्बन्धित दस्तावेज मौजूद हो वे सभी भारत सरकार की छात्रवृत्ति योजनाओं में आवेदन कर सकते है। **8.** अधिक जानकारी के लिए संस्थान की वेबसाइटः- **www.nainiiti.com** देखें। **9.दाखिले की अंतिम तिथिः-** 31 मार्च 2022

सम्पर्क सूत्र :- 0532-2695959, 9415608710, 9807278552, 9415608790

व्यक्ति से ही परिवार व समाज बना है यदि व्यक्ति बदला तो समझो कि युग बदल रहा है

(आधुनिक समाचार सेवा)
सर्वेश कुमार यश

वाराणसी। रोहनिया मोहनसराय गंगापुर रोड स्थित चौराहे पर हो रहे तीन दिवसीय गायत्री महायज्ञ एवं प्रज्ञा पुराण कथा सकुशल संपन्न हुआ। जिसके दौरान रविवार को अंतिम दिन प्रातः 9 बजे से 12 बजे तक गायत्री महायज्ञ तथा गायत्री परिवार द्वारा 70 लोगों को दीक्षा संस्कार तथा 5 महिलाओं का पुंसवन संस्कार तथा नामकरण संस्कार सहित अन्य कई संस्कार कराया गया। इसके बाद शाम को 6 बजे से रात्रि 9 बजे तक संगीतमय पावन प्रज्ञा पुराण कथा व विराट दीप यज्ञ एवं गायत्री परिवार के आए हुए कर्मकांड़ीयों की विदाई किया गया। प्रज्ञा पुराण कथा के दौरान पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी के संदेशवाहक विद्याधर मिश्र ने बताया कि युग निर्माण हेतु व्यक्ति के निर्माण ही

आधार है। व्यक्ति से ही परिवार व समाज बना है यदि व्यक्ति बदला तो समझो कि युग बदल रहा है। इस अवसर पर मनोज कुमार शर्मा एनडीआरएफ कमांडेंट, संतोष कुमार सिंह, एफ ओ काशी विद्यापीठ, श्यामधर पांडे असीम सिंह, आशुतोष पांडेय,ओमेश्वर सेपट, बृजेश पटेल, बृजेश चौहान, उषा किरण सिंह, पूर्णिमा भारद्वाज, प्रदीप कुमार सिंह, रूपेश कुमार सिंह, सत्यनारायण यादव, रमाकांत पाठक इत्यादि लोग शामिल रहे।

होली : वेतन के लिए नपा कर्मचारियों ने किया प्रदर्शन

आजमगढ़ । वेतन और पेंशन के बकाए को लेकर आंदोलित स्थानीय निकाय कर्मचारी संघ ने सोमवार को नगर पालिका परिसर में धरना-प्रदर्शन किया। होली से पहले वेतन भुगतान की मांग की। बताया कि शासन ने 27 फरवरी को ही वेतन मद में धनराशि जारी कर दी है, लेकिन उसका भुगतान नहीं किया जा रहा है। होली से पहले भुगतान न होने पर कर्मचारियों ने आगे भी आंदोलन की चेतावनी दी। स्थानीय निकाय कर्मचारी महासंघ के मंडल अध्यक्ष असलम खान ने बताया कि शासन ने कर्मचारियों के वेतन और पेंशन मद में 1.23 करोड़ रुपये 27 फरवरी को ही जारी कर दिया, लेकिन अभी तक भुगतान नहीं किया गया। अब तक हम लोग यह सोचकर संतोष कर रहे थे कि अधिकारी चुनाव में व्यस्त हैं, लेकिन परिणाम की घोषणा के बाद भी भुगतान अधर में है, जबकि होली जैसा खर्चीला त्योहार सिर पर है। इसके अलावा कर्मचारियों ने कहा कि निर्धारित समय तक काम करने के बाद किसी वक्त कर्मचारियों को सफाई के लिए बुला लिया जाता है। पुराने

मानक के अनुसार 10 हजार की आबादी पर 28 सफाई कर्मचारियों की जरूरत है, लेकिन नायकों को सफाई कर्मचारी आज तक उपलब्ध नहीं कराया गया। चार वर्ष से जाड़े और गर्मी की वर्दी उपलब्ध नहीं कराई गई। धरना-प्रदर्शन में काशी वाल्मीकि, संजय, सगीर, भकालू, रनने, चंदा आदि शामिल थीं।

विश्व शांति का मार्ग प्रशस्त करते हैं संत

चक्रपानपुर (आजमगढ़)। हथियाराम मठ के पीठाधीश्वर भवानी नंदन यती ने कहा कि संत महात्मा राष्ट्र का ही नहीं, अपितु विश्व कल्याण का मार्ग प्रशस्त करते हैं। वह सोमवार को अपराह्न श्रीराम जानकी मंदिर परिसर में नवनिर्मित संत आश्रय स्थल तथा आध्यात्मिक पुस्तकालय के लोकार्पण के पश्चात उपस्थित जनमानस को संबोधित कर रहे थे। कहा कि दुनिया साधु संतों को प्रणाम करती है और मैं राहुल जी को प्रणाम करता हूं। राष्ट्रभाषा के गौरव महापंडित राहुल सांकृत्यायन की पुण्यभूमि पर मैं अपने आपको धन्य महसूस कर रहा हूं। उन्होंने आध्यात्मिक मार्गदर्शन के सवाल पर कहा कि जब मार्ग का पता ही नहीं, तो दर्शन कहां हो सकता है। उन्होंने कहा कि सच्चिदानंद सन्मय, चिन्मय और आनंदमय हैं। चेहरा और दर्पण का उदाहरण देते हुए कहा कि चेहरे के दाग को दर्पण साफ नहीं कर सकता, लेकिन चेहरा देखने के लिए दर्पण जरूरी है। उसी प्रकार मंदिर जाना भी जरूरी है, लेकिन मंदिर जाने मात्र से ही भगवान के दर्शन नहीं होते। इसके लिए ईश्वर को अंतरमन से तलाशना होता है। आयोजक आचार्य सहदेव पांडेय सांकृत्यायन की प्रशंसा करते हुए कहा कि महापंडित राहुल सांकृत्यायन आज भले ही नहीं हैं, परंतु उनकी विरासत जिदा है।इससे पहले लोगों ने भवानी नंदन यती का स्वागत गाजे-बाजे

के साथ फूल मालाओं से किया। इसके बाद उन्होंने मंदिर परिसर में बने श्री त्रिलोचन नाथ महादेव का कर्मकांडी ब्राह्मणों बदन पांडेय, आनंद शुक्ला, हरिप्रसाद मिश्र के साथ पूजन-अर्चन करने के पश्चात संत आश्रय स्थल का लोकार्पण कर रुद्राक्ष का पौधा लगाया। अध्यक्षता संस्कृत महाविद्यालय चंडेश्वर के पूर्व प्राचार्य अमरनाथ पांडेय तथा संचालन शंभू दास ने किया। डा. माहेश्वरी कांत पांडेय, डा. सहजानंद पांडेय, डा. दिनकर राय, शेषनाथ सिंह, अशोक सिंह, रामाश्रय पांडेय, अखिलेश पांडेय आदि रहे।

होली : 1974 स्थलों पर जलेगी होलिका, बीट के सिपाही करेंगे निगरानी

आजमगढ़। जिले के 1974 स्थलों पर होलिका दहन और 13 स्थलों से निकलने वाले होली जुलूस को लेकर पुलिस ने कमर कस ली है। गई है। होलिका दहन समिति में गांव के 10 सम्मानित लोगों को शामिल किया गया है। जिले में सबसे अधिक होलिका जीयनपुर

होलिका दहन के दौरान शांति व्यवस्था बनाए रखने के लिए बीट के सिपाहियों के साथ क्षेत्र के सम्मानित लोगों को जिम्मेदारी सौंपी में 151 स्थलों पर जलाई जाती है। वहीं 13 स्थलों पर होली रंग जुलूस निकाला जाता है। इसमें शहर कोतवाली के 64, सिधारी 86, रानी की सराय 22, कंधरापुर 88, मुबारकपुर 87, जहानागंज 84, निजामाबाद 47, गंभीरपुर 27, देवगांव 128, मेहनाजपुर 72, बरदह 25, मेंहनगर 115, तरवां 60, जीयनपुर 151 , महराजगंज 101, बिलरियागंज 34, रौनापार 66, अतरौलिया 40, अहरौला 91, कप्तानगंज 62, फूलपुर 133, पवई 132, सरायमीर 65 और दीदारगंज के 116 गांव में होलिका दहन होता है। 13 स्थलों पर निकलता होली रंग का जुलूस होली के दिन जिले के 13 स्थलों पर जुलूस निकलता है। इसमें कोतवाली व पवई क्षेत्र दो-दो, कंधरापुर, मुबारकपुर,गंभीरपुर, मेंहनगर, महराजगंज, बिलरियागंज, अहरौला, फूलपुर व सरायमीर थाना में एक-एक जगह होली का जुलूस निकाला जाता है। होलिका दहन शांति पूर्वक कराने के लिए सभी थानाध्यक्षों को निर्देश दिए गए हैं। विवादित स्थलों पर पुलिस की लगातार नजर है। जनता से बातचीत कर सौहार्दपूर्ण वातारण में त्योहार संपन्न कराया जाएगा।

रिंग रोड से सठियांव गांव में जाने को बने रास्ता

आजमगढ़। तहसील सदर की ग्राम पंचायत सठियांव के ग्रामीणों ने पूर्वांचल एक्सप्रेस-वे के पास बन रहे रिंग रोड से गांव में जाने की लिए रास्ता निर्माण की मांग की है। जिलाधिकारी कार्यालय के समक्ष प्रदर्शन कर ज्ञापन सौंपा। गांव के बाबूलाल चौहान ने बताया कि उनके गांव से सटे पूर्वांचल एक्सप्रेस-वे बना है। गांव से सटकर रिंग रोड भी बन रहा है लेकिन उस रिंग से नीचे गांव वालों के लिए कोई रास्ता नहीं मिल रहा है। गांव की जलनिकासी भी रुकी है, जिसके लिए एक पुल की आवश्यकता है। रिंग रोड बनाने वाली कार्यदायी संस्था के लोग नहीं सुन रहे हैं। रिंग रोड और जलनिकासी की समस्या के समाधान की व्यवस्था कराई जाए।

होली के लिए बाजार में सजे रंगीन बम व पटाखे

गाजीपुर । होली पर्व को लेकर जिले में नगर से देहात तक के बाजार गुलाल की खुशबू से महक रहे हैं। रंग, गुलाल व पिचकारियों से दुकानें सज गई हैं। साथ ही इस बार होली में बम-पटाखों व बंदूक से रंगों की बौछार होगी। दरअसल, इस बार खास तरह के रंग उपलब्ध हैं। इसमें स्मोग गुलाल, थंडर स्प्रे, मैजिक आइस व टैग शामिल हैं। लोग होली पर स्मोग गुलाल से बम फोड़ कर लोगों में गुलाल बरसा सकेंगे, तो वही थंडर स्प्रे के जरिए बिना छुए एक-दूसरे को गुलाल लगा सकेंगे। टैग (बैगनुमा) की मदद से बच्चे रंगों की बारिश कर सकेंगे। बता दें कि इस बार बाजार में 50 रुपये से लेकर एक हजार रुपये तक की पिचकारी उपलब्ध है। साथ ही चेहरे पर लगाने के लिए मूंछ, जादुई आंख, बाल व रंगीन टोपी भी बिक रहे हैं। बाजार में होली को लेकर लोगों में उत्साह है। मांग को देखते हुए दुकानदार थोक दुकानों से खरीद में व्यस्त हैं। व्यापारियों ने कहा कि वे इस साल होली में अच्छे व्यापार की उम्मीद कर रहे हैं। हर्बल गुलाल की ज्यादा मांग लोग होली में अपने स्वास्थ्य को लेकर ज्यादा जागरूक हो गए हैं। इस बार हर्बल गुलाल की ही लोग मांग कर रहे हैं और केमिकल वाले रंग से दूरियां बनाए हुए हैं। दुकानों में केमिकल युक्त रंग बहुत कम है। अधिकांश दुकानों में गुलाल ही बेचा जा रहा है। इसके अलावा खुशबू वाली सेंटेड गुलाल की मांग ज्यादा है। रंगों की दोनाली बंदूक, अनार बम से हरे, नीले, पीले और लाल रंगों की बौछार से सराबोर कर सकेंगे। गुलाल की वैरायटी भी अलग-अलग है। 12 रंग का गुलाल बाजार में है। चेहरे को नुकसान नहीं पहुंचाने वाला हर्बल गुलाल भी है। सुगंधित रंग भी पिचकारी से छूटेंगे। पिचकारी और रंग, गुलाल काउंटर पर सज गए हैं। इस बार क्या है खास स्प्रे गुलाल, इससे बिना छुए एक-दूसरे को लेकर गुलाल लगा सकेंगे। - स्मोग कलर (पटाखानुमा) को जलाने पर इससे रंग-बिरंगे गुलाल की बौछार होगी। - पब्जी लवर्स के लिए (पब्जी गन) स्पेशल पिचकारी। बच्चों के लिए स्पेशल कार्टून कैरेक्टर वाली पिचकारियां - बाजार में बच्चों के लिए स्पेशल कार्टून कैरेक्टर के लिए पिचकारियां उपलब्ध हैं। होली - इस बार लोग दिवाली के अंदाज में भी होली मना सकेंगे। क्योंकि इस बार बाजार में स्मोग गुलाल उपलब्ध है। बाहर से देखने में यह बिल्कुल स्काई शोट पटाखे की तरह है। जिसको जलाने पर गुलाल की बौछार होगी। इसके अलावा बाजार में स्प्रे गुलाल भी उपलब्ध हैं। जिससे लोग बिना छुए एक-दूसरे को गुलाल लगा सकेंगे। कुर्ता-पायजामा व बंडी की भी बढ़ी मांग : इसके साथ होली का रंग कपड़ा बाजार में चढ़ने लगा है।

विक्रेताओं का कहना है कि इस बार पब्जी पिचकारी की खासी मांग है। इसके साथ ही डोरीमान, मोटू पतलू, मिक्की माउस, छोटा भीम, मारिओ, स्पाइडर मैन, कैप्टन अमेरिका, आयरन मैन समेत करीब 30 से अधिक पिचकारियां हैं। दिवाली के अंदाज में स्मोग गुलाल से मनाएं कपड़ा व्यवसायियों के मुताबिक अभी खुदरा व्यवसायी कुर्ता-पायजामा और बंडी की खरीदारी के लिए पहुंच रहे हैं। हालांकि खुदरा बाजारों में खरीदारी के लिए अभी छिटपुट ग्राहक ही पहुंच रहे हैं। व्यवसायियों के मुताबिक एक-दो दिनों में बाजार में खरीदारी को लेकर भीड़ बढ़ने की संभावना है।

खेल विपरीत परिस्थितियों में जीने की कला सिखाता

मुहम्मदाबाद (गाजीपुर) । शहीद स्मारक राजकीय महाविद्यालय परिसर में सोमवार से दो दिवसीय 18वां वार्षिक क्रीड़ा समारोह का शुभारंभ मुख्य अतिथि उपजिलाधिकारी आशुतोष कुमार व विशिष्ट अतिथि सीओ रवींद्रनाथ वर्मा ने मां सरस्वती के चित्र के समक्ष दीप प्रज्ज्वलित कर किया। इसके पश्चात विद्यालय के स्काउट गाइड के कैडेटों व खिलाड़ियों ने मार्च पास्ट किया। मुख्य अतिथि ने खिलाड़ियों को शपथ दिलाई। खेल का शुरुआत उपजिलाधिकारी आशुतोष कुमार ने पिछले वर्ष के विजेता धावकों को मशाल पकड़ाकर किया। समारोह में उपजिलाधिकारी ने कहा कि कोरोना काल में दो वर्ष के अंदर कोई खुले में कार्यक्रम नहीं हुआ। युवा घरों में मोबाइल लेकर बैठे रहे। घर के अंदर रहने से पर्सनैलिटी का विकास नहीं होता। कहा कि खेल विपरीत परिस्थितियों में जीने की कला सिखाता है। साथ ही व्यक्ति के अंदर धैर्य व संघर्ष करने की क्षमता को बढ़ाता है। इस मौके क्रीड़ा प्रभारी डा. माधवम सिंह ने अतिथियों का अंगवस्त्रम प्रदानकर स्वागत किया। इस मौके पर डा. शशिकांत, सुमंत पांडेय, डा. श्रीप्रकाश तिवारी, डा. अवनीश कुमार सिंह, डा. आस्था साक्षी, डा. मृत्युंजय कुमार, डा. निलेश कुमार राय, डा. सोनू यादव, मो. राशिद रब्बानी आदि मौजूद रहे। अध्यक्षता डा. राजेश कुमार व संचालन डा. अरुण कुमार ने किया।

होली : होली स्पेशल बसों के संचालन से अब यात्रा होगी सुगम

आजमगढ़। विधानसभा चुनाव खत्म होती ही रोडवेज बसों का संचालन भी पटरी पर आ गया है। चुनाव के दौरान यात्रियों को काफी परेशानी का सामना करना पड़ा था। होली को देखते हुए परिवहन विभाग ने अपनी सभी व्यवस्थाएं दुरुस्त कर ली हैं। यात्रियों की सुविधा के लिए परिक्षेत्र में सभी बसों को संचालन शुरू कर दिया है। 13 से 22 मार्च तक होली स्पेशल बस सेवा शुरू की गई है। इससे यात्रियों को काफी सुविधा होगी। आजमगढ़ परिक्षेत्र के अंतर्गत करीब 406 बसें संचालित होती हैं। इसमें मऊ 20, बलिया 32, डा. आंबेडकर नगर 32, शाहगंज 17, बिल्थरारोड 23, आजमगढ़ 41, दोहरीघाट डिपो की 26 बसें हैं। इसके अलावा वाराणसी, सुल्तानपुर, लखनऊ, जौनपुर, गोरखपुर के लिए भी बसें चलती हैं। होली के समय इन रूटों पर यात्रियों को बसों के लिए ज्यादा समय इंतजार नहीं करना पड़ेगा। चुनाव में लगी रोडवेज बसें लौटीं विधान सभा चुनाव में फरवरी से ही रोडवेज बसों को लगाया गया था। बसों की कमी से जूझ रहे यात्रियों की समस्या अब दूर हो

गई है। चुनाव ड्यूटी से बसों के लौटने के बाद वर्कशाप में मरम्मत किया गया। इसके बाद अपने-अपने रूटों पर लौट आई हैं। डा. आंबेडकर नगर डिपो के सहायक क्षेत्रीय प्रबंधक गौतम कुमार ने बताया कि होली के त्योहार पर घर जाने वाले यात्रियों के लिए होली स्पेशल बस सेवा 13 मार्च से शुरू हो गई।

सारनाथ निवासी दारोगा ने सर्विस रिवाल्वर से खुद को मारी गोली, गंभीर हाल में इलाज के लिए बीएचयू रिफर

वाराणसी। चितईपुर थाने में तैनात एक दारोगा को संदिग्ध हाल में सोमवार की दोपहर गोली लगने के बाद आनन फानन उसे इलाज के लिए सिंह मेडिकल ले जाया गया। जहां पर प्राथमिक इलाज के बाद हालत चिंताजनक होने की वजह से उसे बीएचयू रेफर कर दिया गया। वहीं दारोगा को गोली लगने की जानकारी होने के बाद महकमे में हड़कंप मच गया और आनन फानन पुलिस अधिकारियों ने सारनाथ थाने से प्रकरण की जानकारी ली। पुलिस के अनुसार पारिवारिक विवाद में उप निरीक्षक मनीष सिंह ने खुद के सर्विस रिवाल्वर से सारनाथ स्थित शक्ति पीठ आश्रम के पास आवास पर खुद को गोली मार ली। गोली लगते ही वह लहूलुहान होकर जमीन पर गिर पड़े। पत्नी के शोर मचाने पर आसपास के लोग मौके पर पहुंच गए। साथ ही मौके पर पहुंचे सारनाथ थाना प्रभारी अर्जुन सिंह घायल उप निरीक्षक मनीष सिंह को लेकर सिंह मेडिकल पहुंचे, जहां स्थिति सामान्य नहीं होने पर चिकित्सकों ने बीएचयू रिफर कर दिया। मौके पर डीसीपी काशी आरएस गौतम, एडीसीपी वरुणा प्रबल प्रताप सिंह समय जिले के कई थानेदार भी पहुंच गए। प्रारंभिक जानकारी के अनुसार पारिवारिक विवाद में दारोगा मनीष सिंह ने खुद को दोपहर में विवाद होने पर गोली मार ली। गोली मारने की जानकारी होने के बाद लोगों के सहयोग से दारोगा को अस्पताल ले जाया गया। जख्म गहरा होने की वजह से दारोगा को बीएचयू रिफर कर दिया गया। चिकित्सकों के अनुसार दारोगा की हालत गोली लगने की वजह से चिंताजनक बनी हुई है। सारनाथ के शक्तिपीठ कालोनी में निवास कर रहे चितईपुर थाने में तैनात मनीष सिंह पारिवारिक विवाद के चलते अपने सरकारी रिवाल्वर से दोपहर 12:30 बजे खुद को गोली मार ली। वह मूलरूप से रोहतास बिहार के रहने वाले हैं।

काशी में भोले के भक्तों ने चिता भस्म से खेली होली, बाबा के गणों का छलका उल्लास

वाराणसी। भगवान शिव की नगरी काशी भी गौरा का गौना रंगभरी एकादशी पर होने के साथ उत्साह और उल्लास से भर जाती है। इसी कड़ी में बाबा की नगरी काशी में शिव के गणों ने विविध भूत प्रेत पिशाच का स्वांग धरा और हर हर महादेव के उद्घोष के साथ चिता भस्म की होली खेलने गंगा तट पर पहुंच गए। तस्वीरों में देखें बाबा के भक्तों का काशी में सड़क से लेकर गंगा घाट तक चिता भस्म की अल्हड़ और अलमस्त होला चिता भस्म की होली बाबा की नगरी में मस्त मलंग उनके भक्तों की टोली बैंड बाजा और बरात लेकर गौरा के गौना के रंगभरी एकादशी के मौके पर चिता भस्म की होली खेलने शहर से लेकर गंगा घाटों तक नजर आए। चिता भस्म की होली भूत प्रेत और पिशाच का स्वांग भरकर बाबा के भक्तों ने कपाल मुंडों की माला के साथ नाचना

गाना शुरू किया तो काशी परंपराओं में पगी नजर आने लगी। चिता भस्म की होली बाबा भोलेनाथ के नेह के डोर में पगे भक्तों ने आशीष के नेग की कामना के साथ नाच गाना शुरू किया तो चिताओं की भस्म से पूरा वातावरण शिवमय नजर आने लगा। चिता भस्म की होली : शिव के नीलकंठ और मशाननाथ के स्वरूपों का स्वांग धुआं और चिता भस्म के गदीगुबार के बीच उल्लास में डूबा तो फिजा में हर हर महादेव का उद्घोष भी गूंज उठा। चिता भस्म की होली बाबा के भक्तों ने विविध स्वांग धरा तो महाश्मशान पर बाबा मशाननाथ के रूप में मौजूद शिवशंकर के स्वरूप मानों काशी में दोबारा जीवंत नजर आने लगे। चिता भस्म की होली बाबा के भक्तों ने चिताओं की राख पर जब तांडव नृत्य शुरू किया तो काशी का रोम रोम शिव शंकर के कंकर-कंकर शंकर का मान उल्लास से परिपूर्ण नजर आया। चिता भस्म की होली गंगा घाट पर आस्था का मेला उमड़ा तो हर हर महादेव का उद्घोष गंगा तट पर शिव के स्वरूपों में नजर आने लगा। चिता भस्म की होली शिव के गणों ने बाबा की नगरी में उल्लास का रंग बिखेरा तो गलियों से गंगा घाट तक रंग एकादशी की परंपराएं जीवंत हो उठीं। चिता भस्म की होली औघड़दानी भगवान शिव की नगरी काशी में भूत प्रेत पिशाच के रंगों में रंगी पगी और बलिहारी काशी नगरी का उल्लास होली के खत्म होने तक नजर आता रहेगा। चिता भस्म की होली : राग विराग से पगी काशी नगरी में मृत्यु भी उत्सव है और यहां उत्सवी रंग महाश्मशान के घाटों पर भी नजर आता है ।

बीएचयू में आयुर्वेद में एमडी एमएस की सीटें बढ़ाने को लेकर छात्रों ने ओपीडी बंद कराई

वाराणसी। बीएचयू में आयुर्वेद में एमडी एमएस की सीटों को बढ़ाए जाने की मांग को लेकर छात्रों ने ओपीडी बंद कर दी है। ओपीडी सेवा बंद होने के बाद से मरीज और

तीमारदार भी परेशान होकर भटक रहे हैं। ओपीडी सेवा बहाली को लेकर विवि प्रशासन की ओर से पहल भी की जा रही है। अब सोमवार से छात्रों का प्रदर्शन उग्र होने की ओर होने के साथ ही विवि प्रशासन की ओर से भी दोबारा ओपीडी शुरू करने के लिए प्रयाश शुरू कर दिया गया है। आयुर्वेद में एमडी और एमएस की सीटों को बढ़ाने को लेकर बीते चार दिनों से छात्र कुलपति आवास पर धरना दे रहे थे। मांगे पूरी नहीं होने पर ओपीडी बंद करने का कदम उठाया तो परिसर में गहमागहमी व्याप्त हो गई। वहीं धरना दे रहे छात्रों की ओर से मौके पर प्रदर्शन और नारेबाजी भी शुरू कर दी गई। इसकी वजह से सुबह से परिसर में चिकित्सा सेवाओं में काफी चुनौती शुरू हो गई है। वहीं जानकारी होने के बाद वरिष्ठ अधिकारियों ने छात्रों से धरना प्रदर्शन खत्म करने के लिए अपील किया लेकिन चार दिनों से आंदोलित छात्र अपनी मांगों को पूरा करने के लिए अपनी मांग पर अड़े रहे।

ट्रक व हाइवा आमने सामने की टक्कर में एक की मौत एक घायल

(आधुनिक समाचार सेवा)
अनिल कुमार अग्रहरि

चोपन (सोनभद्र)। स्थानीय हाथी नाला थाना क्षेत्र के पिपरी बॉर्डर रेणुकूट वाराणसी राज्य मार्ग पर

हाइवा आमने सामने भिड़ गए मिली जानकारी के मुताबिक सोमवार शाम साढ़े चार बजे के करीब को हाथीनाला थाना क्षेत्र के पिपरी बॉर्डर रेणुकूट वाराणसी राज्य मार्ग पर हाईवा व ट्रक आमने सामने टक्कर हो इस घटना में हाईवा के चालक चंद्रशेखर उम्र लगभग 40 वर्ष पुत्र सोती चौहान निवासी ग्राम महूआव थाना चोपन को आनन फानन हिंडालको अस्पताल ले जाते समय रास्ते में मृत्यु हो गई व परिचालन सुरक्षित है और ट्रक के चालक अरविंद कुमार उम्र लगभग 32 वर्ष पुत्र कमलेश गौड़ निवासी ग्राम गोझवा थाना मुंगरा बादशाहपुर जौनपुर को घायल अवस्था पीआरबी 3091 द्वारा सीएचसी दुद्धी भेजवाया गया वाराणसी शक्ति नगर राज्य मार्ग पर हुए सड़क दुघर्टना में क्षती ग्रस्त हाईवा व ट्रक को क्रेन द्वारा सड़क के किनारे करा कर यातायात बहाल करवाया किया गया मृतक के शव को कब्जे में लेकर आवश्यक विधिक कार्रवाई करते हुए हिंडालको अस्पताल रेणुकूट रखवाया गया तथा परिजनों को सूचना दे दी गई है

जाइलो कार से ४० किलो अवैध गांजा ले जा रहे दो अभियुक्त गिरफ्तार

(आधुनिक समाचार सेवा)
अनिल कुमार अग्रहरि

चोपन (सोनभद्र)। पुलिस अधीक्षक के दिशा निर्देश पर अवैध मादक पदार्थो की तस्करी के रोकथाम को लेकर चलाये जा रहे अभियान के तहत बिते रविवार की देर शाम लगभग 7.30 बजे थाना क्षेत्र अंतर्गत सोनपूल के समीप बैरियर पर पुलिस द्वारा वाहन चेकिंग किया जा रहा था तभी मुखबिर के द्वारा सुचना मिली की एक लाल रंग की जायलो कार न0 65 3888 से भारी मात्रा में अवैध गांजा की खेप जा रही है जिसके बाद पुलिस चौकन्ना हो गई तभी एक लाल रंग की जायलो कार आती हुई दिखाई दी जिसके बाद पुलिस ने तत्काल घेराबंदी कर उक्त कार को अपने कब्जे में लेते हुए तलाशी किया तो तीन बोरियों में लगभग 40 किलो अवैध गांजा बरामद हुआ साथ ही कार में बैठे दो लोगों को पुलिस ने अपनी गिरफ्त में लिया और कड़ाई से पुछताछ करने पर बताया कि हम लोग उड़ीसा से गांजा लेकर गाजीपुर जा रहे थे।पकड़े गए दोनों अभियुक्त अपना नाम अरविंद कुमार यादव पुत्र राजन यादव निवासी

अवडीहार खुर्द थाना सैदपुर जनपद गाजीपुर एवं सुनील कुमार यादव पुत्र पारस यादव निवासी राजन पुर थाना सैदपुर जनपद गाजीपुर को संबन्धित धाराओं में मुकदमा दर्ज कर माननीय न्यायालय में पेश कर दिया गया।वहीं गिरफ्तार करने वाली टीम में प्रभारी निरीक्षक के के सिंह, डाला चौकी इंचार्ज मनोज ठाकुर, हेड कांस्टेबल अनिलेश सिंह, अर्पित मिश्रा, विशाल कुमार ,शामिल रहे।

ट्रैक्टर से कुचलकर मजदूर की मौत, स्वजन ने सड़क किया जाम

गैपुरा (मीरजापुर)। विध्याचल थाना क्षेत्र के विजयपुर स्टेट बैंक के पास ईट लदे ट्रैक्टर ने रविवार की शाम राजेश कुमार मोदनवाल (36) को कुचल दिया। पहिए के नीचे आने से उनकी घटना स्थल पर ही मौत हो गई। हादसे की खबर लगते ही स्वजन आक्रोशित हो गए और ग्रामीणों संग गैपुरा - लालगंज मार्ग को जाम कर दिया। मौके पर पहुंचे विध्याचल निरीक्षक नीरज पाठक शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजवाने लगे तो स्वजन शव देने से इनकार कर दिए। आक्रोशित ग्रामीण पीड़ित पक्ष को मुआवजा देने के लिए उच्चाधिकारियों को बुलाने की मांग कर रहे थे। विजयपुर गांव निवासी राजेश कुमार मोदनवाल मजदूरी करते थे। रविवार की शाम वह पैदल ही विजयपुर बाजार सब्जी लेने जा रहे थे। बाजार के पास पीछे गैपुरा से विजयपुर की तरफ ईट लादकर जा रहे ट्रैक्टर ने राजेश को टक्कर मारते हुए कुचल दिया। इससे उनकी मौके पर ही मौत हो गई। हादसे की खबर लगते ही स्वजन के साथ ग्रामीण आक्रोशित हो गए और सड़क जाम कर दिया। ग्रामीण पीड़ित पक्ष को मुआवजा देने की मांग कर रहे थे। राजेश दो भाइयों में सबसे बड़े थे। मृतक की पत्नी बीनू और पुत्र विशेष एक वर्ष तथा पुत्री कनक तीन वर्ष की है। स्वजन का रो रोकर बुरा हाल है। देर रात तक ग्रामीण सड़क जाम किए हुए थे। पुलिस भी उच्चाधिकारियों के आने का इंतजार कर रही थी।

डाला पुलिस चौकी में पिस कमेटी कि बैठक हुआ समपन

(आधुनिक समाचार सेवा)
अनिल कुमार अग्रहरि

चोपन (सोनभद्र)। सोमवार के दोपहर बाद आगामी होली व शबे ए बरात त्योहार के मद्देनजर डाला चौकी इंचार्ज मनोज कुमार ठाकुर प्रभारी के नेतृत्व में पीस कमेटी की बैठक संपन्न हुई। बैठक में चौकी प्रभारी मनोज कुमार ठाकुर ने लोगों से शांति व्यवस्था बनाए रखने का

आग्रह किया। और उन्होंने कहा कि होली के त्यौहार व शबे ए बरात के त्यौहार व उसी रोज शुक्रवार यानी जुम्मे का दिन होने के कारण विशेष सतर्कता को देखते हुए संभ्रांत नागरिक के साथ होली और शबे ए बरात के त्यौहार को शांति पूर्ण तरीके से संपन्न कराने के लिए लोगों से अपील की। चौकी इचार्ज ने यह भी कहा कि त्यौहार मे किसी तरह से खलल डालने वालो बख्शा नहीं जाएगा। साथ ही लोगों से आश्वस्त किया गया कि त्योहारों में अगर किसी भी तरह के अराजकता फैलाने वालों पर कड़ी कार्यवाही कि जाएगी। साथ ही त्यौहार शांतिपूर्ण ढंग से मनाऐ और होली त्यौहार आपसी प्रेम व सौहार्द प्रतीक है। साथ उन्होंने कहा कई स्थान पर होलिका दहन कि जाएगी और उन्होंने कहा कि होलिका दहन के स्थान पर किसी प्रकार का समस्या उत्पन्न हो रही हो तो तत्काल पुलिस को सूचना करें। त्योहारों को परंपरागत व हर्षोल्लास से मनाए।पुलिस फोर्स क्षेत्रों में चक्रमण करती रहेगी। इस दौरान , मुकेश जैन,श्रीकांत तिवारी ,सुभाष पाल,राणा सुभाष राव अंबेडकर, भैरव बाबा ,राजू शुक्ला,मनीष तिवारी,अनिकेत निषाद,शाहनवाज शाह,हनुमान सिंह,अवधेश कुमार,नागेंद्र पासवान के साथ तमाम सम्मानित लोग मौजूद रहे।

शांतिपूर्ण ढंग से मनाएं होली अराजकतत्वों पर रहेगी नजर

मीरजापुर । होली त्योहार के मद्देनजर रविवार को जनपद के विभिन्न थाना के अलावा चौकी परिसर में एसडीएम सदर व चुनार तथा सीओ लालगंज ने दोनों समुदायों के साथ बैठक की। बैठक में कहा गया कि होली का त्योहार भाईचारे का पर्व है। दोनों समुदाय के लोग आपस में इस पर्व को मिलजुलकर मनाएं। अराजकतत्वों और शरारतीतत्वों पर पुलिस व प्रशासन की पैनी नजर होगी। अगर किसी ने पर्व को खराब करने की कोशिश की तो उसकी खैर नहीं होगी। एसडीएम सदर चंद्रभानू सिंह ने होली पर्व को लेकर क्षेत्र के लोगों के साथ बैठक की। उन्होंने क्षेत्र में होलिका के बारे में जानकारी लेने के साथ ही कही विवाद की स्थिति बनती है तो उसके भी बारे में पूछताछ की। लोगों ने बताया कि आही बधवां गांव से जूलूस निकलता है। इस

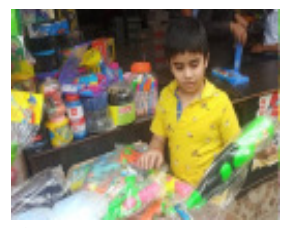

दौरान जमुआ गांव में सुरक्षा की ष्टिकोण से पर्याप्त पुलिस बल के साथ पीएसी बल भी रहता है, क्षेत्र संवेदनशील है। एसडीएम ने कहा कि कोई भी विवाद और तनाव की स्थिति नहीं बननी चाहिए। कही कुछ होता है तो तत्काल पुलिस को सूचना दें। इस दौरान थाना प्रभारी रामस्वरूप वर्मा, कस्बा प्रभारी धर्मेंद्र कुमार आदि रहे। अदलहाट एसडीएम चुनार नीरज प्रसाद पटेल ने कहा कि त्योहारों पर कोई भी नई परंपरा नहीं डाली जाएगी। हुड़दंग मचाने वालों को किसी भी कीमत पर नहीं बख्शा जाएगा। सीओ रामानंद राय ने कहा कि किसी को कोई परेशानी आती है तो पुलिस को अवगत कराएं। ऐसी कोई भी परंपरा नहीं डाली जाए जिससे की प्रशासन को सख्ती करनी पड़े। इस अवसर पर प्रभारी निरीक्षक नवीन कुमार तिवारी, इरफान खां, प्रधान डा.अशोक कुमार आदि थे।

शहीद दिवस पर दिन व रात्रि में कवि सम्मेलन

(आधुनिक समाचार सेवा)
चिन्ता पान्डेय

सोनभद्र। शहीद स्थल प्रबंधन ट्रस्ट करारी व लता देवी वात्सल्य सेवा समिति शहीद स्थल तियरा रामगढ़ के तत्वावधान में तेइस मार्च शहीद दिवस के परिप्रेक्षय में दिन में करारी व रात में तियरा रामगढ़ शहीद स्थल पर राष्ट्र भक्ति सदभावन समरसता एकता अखंडता को समर्पित कविसम्मेलन आयोजित किया गया है जिसकी अध्यक्षता वरिष्ठ साहित्यकार अजयशेखर करेंगे तो वहीं मुख्य अतिथि सदर विधायक भूपेश चौबे होंगे जिनका अभिनंदन किया जायेगा । विशिष्ट अतिथिगण कथाकार रामनाथ शिवेंद्र समाजसेवी महेशानंद दुध्दी वरिष्ठ साहित्यकार पूर्व प्रशासनिक अधिकारी वाराणसी ओम धीरज पूर्व चेयरमैन रा0 गंज विजय कुमार जैन, ब्लाक प्रमुख रा 0 गंज अजीत रावत पारसनाथ मिश्र केअलावा मनोज मधुर व नवल स्वतंत्र श्रीवास्तव, कवयित्री जय श्री राय शिवदास चंदौली से नरसिंह साहसी धर्म देव चंचल अहरौरा पंकज प्रखर मऊ, रामनरेश पाल वाराणसी अभिनव अरूण वाराणसी के साथ

ही साथ सोनभद्र से जगदीश पंथी ईश्वर विरागी सुशील राही सरोज कुमार सिंह प्रभात चंदेल कौशिल्या कुमारी चौहान दीपक कुमार केसरवानी दिलीप सिंह दीपक विकास वर्मा राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त किशोर न्याय बोर्ड के सदस्य ओम प्रकाश त्रिपाठी वरिष्ठ पत्रकार भोलानाथ मिश्र व विजय विनीत प्रद्युमन त्रिपाठी अशोक तिवारी दिवाकर मेघ राकेश शरण मिश्र जै राम सोनी सुनील चउचक अब्दुल हई राहुल कुशवाहा प्रवाह धर्मेश चौहान काव्य पाठ करेंगे । उक्त आशय की जानकारी देते हुए संस्था के निदेशक प्रद्युमन त्रिपाठी व नर्वदेश्वर देव पांडेय ने बताया कि अमर शहीद सुखदेव राजगुरू भगतसिंह के बलिदान दिवस को एक उत्सव का रूप दिया जायेगा जिसमें बार एसोसिएशन के अध्यक्ष महामंत्री ग्राम प्रधान समेत अधिवक्तागण, आम नागरिक गण जनप्रतिनिधिगण व पत्रकार गण भाग लेंगे।

अनपरा में 55 स्थानों पर जलेगी होलिका

अनपरा (सोनभद्र) । होली एवं शबे-बरात का त्योहार एक ही दिन पड़ने पर पुलिस प्रशासन सतर्क है। इन त्योहारों के मद्देनजर अनपरा थाने में रविवार को एसडीएम दुद्धी प्रमोद तिवारी एवं सीओ पिपरी प्रदीप सिंह चंदेल ने एक बैठक आयोजित की। बैठक में अधिकारियों ने कहा कि सभी लोग इस पर्व को आपसी भाईचारे एवं सद्भावना के साथ मनाएं। निणय्य लिया गया कि 12 बजे तक होली का त्योहार भाईचारे के साथ मनाया जाए। होली के ही दिन जुमा की नमाज पड़ने पर इसे एक बजे तक अदा करा दी जाए। अनपरा परिक्षेत्र में 55 स्थानों पर होलिका जलाई जाएगी। इस पर्व पर शराब पीकर कदापि हुड़दंग न मचाया जाए। बैठक में उपस्थित नागरिकों ने बिजली और साफ-सफाई पर विशेष ध्यान देने का आग्रह किया। शांति व्यवस्था के लिए स्पेशल मोबाइल टीम बनाई गई है। एसओ श्रीकांत राय, चौकी प्रभारी राजेश प्रताप सिंह, अभियंता अनुज कुमार, बालकेश्वर सिंह, केसी जैन, गोपाल गुप्ता, शहरयार खान, मिथिलेश सिंह, कृष्णा सिंह, अमित सिंह आदि उपस्थित रहे।

डाला पुलिस ने साइबर ठगी की बढ़ती घटनाओं से बचने के बारे में किया जागरूक

(आधुनिक समाचार सेवा)
अनिल कुमार अग्रहरि

डाला (सोनभद्र)। स्थानीय पुलिस चौकी प्रभारी मनोज कुमार ठाकुर द्वारा नगर स्थित इंडियन बैंक में मौजूद सैकड़ों ग्राहकों को साइबर की बढ़ती घटनाओं से बचने के लिए जागरूक किया गया। इस दौरान बैंक में लगे सीसी कैमरा सायरन को चेक किया गया। इंडियन बैंक में दूर दराज के आदिवासी ग्रामीण क्षेत्रों से आए पुरूष व महिलाओं के साथ हो रही साइबर ठगी की घटनाओं से कैसे बचे ! इसके बारे में जानकारी देते हुए श्री ठाकुर ने कहा कि सूचना मिली है की बैंक कार्य करवाने के नाम पर बाहर बैठे कुछ लोगों द्वारा पैसा मांगा जाता है ऐसे लोगों को अंगूठा लगवाने, फार्म भरवाने के नाम पर पैसा न दें आगे कहा कि किसी भी बाहरी व्यक्ति को आधार कार्ड नंबर, एटीएम कोड नहीं बताना है ।जादा लाभ दिलाने की लालच देने वाले किसी भी व्यक्ति को पैसा

नहीं देना चाहिए। उन्होंने यह भी कहा कि साइबर अपराधी बैंक व भारतीय रिजर्व बैंक अधिकारी बन कर लोगों को फोन करते है और उनसे कहते है कि उनका डेबिट कार्ड ब्लाक हो गया है या उनका केवाइसी अपडेट नहीं है या उनका आधार बैंक खाते से जुड़ा नहीं है। आधार को बैंक खाते से जोड़ने, केवाईसी अपडेट करवाने या डेबिट कार्ड शुरू करने के बहाने उनसे उनके खाते से जुड़ी गोपनीय जानकारी प्राप्त कर खातों से राशि निकाल लेते है। इस पर उन्होंने स्पष्ट किया कि जबकि किसी भी बैंक द्वारा कभी भी डेबिट कार्ड नंबर, ओटीपी की जानकारी नहीं ली जाती। चौकी प्रभारी ने ग्रामीण उपभोक्ताओं को जानकारी देते हुए कहा है कि व्हाट्सऐप मैसेज, फोन या अन्य इंटरनेट मीडिया के माध्यम से कभी भी किसी को डेबिट कार्ड नंबर, ओटीपी इत्यादि गोपनीय जानकारी सांझा न करें। ई-मेल आइडी का पासवर्ड को भी किसी के साथ सांझा न करें। साइबर ठगी से बचने के लिए लोगों को जागरूक रहना होगा

कोई नई परंपरा न करें शुरू, शांति से मनाएं पर्व

सोनभद्र । होली, शबे बरात व जुमा को लेकर शाहगंज पुलिस चौकी में रविवार को हुई पीस कमेटी की बैठक में परंपरागत ढंग से त्योहार मनाने की अपील की गई। अध्यक्षता कर रहे अपर जिलाधिकारी राकेश सिंह ने लोगों से कोई नई परंपरा

शुरू न करने की अपील की। कहा कि रंगों का पर्व होली और शुक्रवार के चलते जुम्मा पड़ने से आमजनों से आपसी भाईचारे से पर्व परंपरागत तरीके से मनाने की अपील की। अपर पुलिस अधीक्षक विनोद कुमार ने कहा कि यदि होलिका दहन अथवा रंगों के खेलने तथा जुम्मे में पड़ने वाली स्थितियों में किसी की विशेष समस्या हो तो संबंधित थानाध्यक्ष को व्यक्तिगत रूप से अवगत कराएं। इस मौके पर एसडीएम घोरावल श्याम प्रताप सिंह, सीओ संजीव कटिहार, थानाध्यक्ष शाहगंज संजय पाल, ग्राम प्रधान शिवम कुमार मौर्य, प्रफुल पांडेय, इरशान खान, राजेंद्र चौधरी आदि मौजूद रहे। कोन थाना परिसर में होली व शबे बरात पर्व को लेकर हुई पीस कमेटी की बैठक में शांतिपूर्ण माहौल में पर्व मनाने की अपील की गई। इस दौरान ओबरा क्षेत्राधिकारी शंकर प्रसाद ने कहा कि चुनाव व व्यक्तिगत रंजिश से ऊपर उठकर त्योहार मनाएं। कोई भी व्यक्ति कानून व्यवस्था या त्योहार में खलल डालने की कोशिश करेगा, उसकी जगह जेल में होगी। इस मौके पर थाना निरीक्षक रमेश यादव, ग्राम प्रधान संतोष पासवान, वसूल अहमद, राहुल गुप्ता, संतोष कुमार, संजय पासवान, विजय जायसवाल, नीलेश कुमार आदि मौजूद रहे। गौरतलब है कि रंगोत्सव का पर्व होली शांतिपूर्वक संपन्न कराने के लिए पीस कमेटी की बैठकें थानावार आयोजित की गई है।

40ग्राम हेरोइन के साथ दो व्यक्तियों कि हुई गिरफ्तारी

(आधुनिक समाचार सेवा)
चिन्ता पान्डेय

सोनभद्र। 40ग्राम हेरोइन के साथ दो व्यक्तियों कि हुई गिरफ्तारी40ग्राम हेरोइन के साथ दो व्यक्तियों कि हुई गिरफ्तारापुलिस उप महानिरीक्षक/पुलिस अधीक्षक सोनभद्र श्री अमरेन्द्र प्रसाद सिंह के कुशल निर्देशन में जनपद में मादक पदार्थों की बरामदगी व इसमें संलिप्त अपराधियों की गिरफ्तारी हेतु चलाये जा रहे अभियान के क्रम में आज दिनांक 14.03.2022

को अपर पुलिस अधीक्षक मुख्यालय श्री विनोद कुमार व क्षेत्राधिकारी नगर श्री राजकुमार त्रिपाठी के निकट पर्यवेक्षण में क्राइम ब्रांच सोनभद्र व थाना रा0गंज पुलिस की संयुक्त टीम द्वारा चेकिंग के दौरान प्रातः ही हिन्दुआरी तिराहा करन ढाबा के पास से 02 नफर अभियुक्तगण 1- राजेश कश्यप पुत्र स्वर्गीय शिवदास निवासी राजपुर रोड शाहगंज थाना शाहगंज जनपद सोनभद्र, 2- करण कुमार पुत्र संतलाल निवासी शाहगंज थाना शाहगंज जनपद सोनभद्र को गिरफ्तार कर उनके कब्जे से कुल 40 ग्राम हेरोइन (अनुमानित कीमत 04 लाख रु0) बरामद किया गया । उपरोक्त गिरफ्तारी व बरामदगी के सम्बन्ध में थाना रा0गंज पर मु0अ0सं0 205/2022 व 206/2022 धारा-8/21 एनडीपीएस एक्ट का अभियोग पंजीकृत कर अभियुक्त उपरोक्त को न्यायिक अभिरक्षा में भेजा गया । **गिरफ्तार अभियुक्त** - 1- राजेश कश्यप पुत्र स्वर्गीय शिवदास निवासी राजपुर रोड थाना शाहगंज सोनभद्र । 2- करण कुमार पुत्र संतलाल निवासी शाहगंज थाना शाहगंज जनपद सोनभद्र । **बरामदगी** - 2- कुल-40 ग्राम हेरोईन (अनुमानित कीमत 04 लाख रु0) **गिरफ्तार करने वाली पुलिस टीम**- 1- नि0 साजिद सिद्दीकी, प्रभारी एसओजी, जनपद सोनभद्र मय टीम । 2- उ0नि0 सरोजमा सिंह, प्रभारी सर्विलांस सेल, जनपद सोनभद्र मय टीम । 3- उ0नि0 अमित कुमार त्रिपाठी, प्रभारी स्वाट टीम, जनपद सोनभद्र मय टीम। 4- उ0नि0 संजय सिंह चौकी प्रभारी कस्बा रा0गंज, जनपद सोनभद्र मय टीम। 5- उ0नि संजीव कुमार राय चौकी प्रभारी हिन्दुआरी थाना रा0गंज सोनभद्र मय टीम ।

शिक्षा चौपाल में अभिभावकों को किया गया जागरूक

रेणुकूट (सोनभद्र)। स्थानीय नगर में पिरामल फाउंडेशन और कश्यप दिव्य ज्योति सेवा संस्थान ने महिलाओं और छात्रों के साथ रविवार को शिक्षा चौपाल का आयोजन किया। इसमें गांव की 30 महिलाओं व 55 छात्रों ने भाग लिया। इस दौरान मोहल्ला क्लास के छात्रों ने ड्राइंग प्रतियोगिता के माध्यम से वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण और जल संरक्षण जैसे गंभीर मुद्दों पर अपनी अभिव्यक्ति को चित्र कला के माध्यम से दर्शाया। प्रतियोगिता में पिरामल फाउंडेशन और कश्यप दिव्य ज्योति सेवा संस्थान ने नोट बुक देकर सम्मानित किया और किशोरी बालिकाओं को शिक्षा और सशक्त बनने व समाज मे आगे आने का आह्वान किया। गांधी फेलो नीतीश झा ने बच्चों से बातचीत की और उज्जवल भविष्य के लिए प्रोत्साहित किया। कश्यप दिव्य ज्योति सेवा सोसायटी के अध्यक्ष सुभाष राय ने अभिभावकों को मोहल्ला क्लास में बच्चों की उपस्थिति को लेकर उनकी क्या जिम्मेदारी है उस पर बात की। सामाजिक कार्यकर्ता अजय राय ने महिलाओं एवं अभिभावकों को अपने अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा देने के प्रति जागरूक करते हुए बच्चों को प्रोत्साहित किया। इस मौके पर भरत सिंह कुशवाहा, संदीप कुमार, विकास शर्मा, रीमा, सुनीता देवी आदि मौजूद रहे।

रुद्र महायज्ञ में भक्तगणों ने किया हवन-पूजन,की परिक्रमा

राबर्ट्सगंज तहसील क्षेत्र के गिरिया शिवगढ़ शीतला माता मंदिर प्रांगण में चल रहा आयोजन

(आधुनिक समाचार सेवा)
चिन्ता पान्डेय

सोनभद्र। राबर्ट्सगंज तहसील क्षेत्र के गिरिया शिवगढ़ स्थित शीतला माता मंदिर प्रांगण में चल रहे विराट रुद्र महायज्ञ में सोमवार को भक्तगणों ने हवन-पूजन किया एवं

यज्ञ मंडप की परिक्रमा को भक्तगणों की भीड़ उमड़ पड़ी। वहीं भक्तगणों ने माता शीतला, दुर्गा माता, गणेश जी एवं हनुमानजी महाराज की मूर्तियों की विधिवत पूजा-अर्चना भी की। कार्यक्रम के संयोजक भिक्षु भिखारी बाबा जंगली दास महाराज ने बताया कि राबर्ट्सगंज तहसील क्षेत्र के गिरिया शिवगढ़ स्थित शीतला माता मंदिर प्रांगण में चल रहे विराट रुद्र महायज्ञ में विंध्याचल से आए आचार्य गोपाल धर द्विवेदी, आचार्य राधाकृष्ण तिवारी,आचार्य राधेश्याम तिवारी, आचार्य रेवती तिवारी, कौशल तिवारी समेत सात आचार्य लगे हुए हैं। प्रतिदिन जहां यज्ञ मंडप में भक्तगण हवन-पूजन कर रहे है, वहीं यज्ञ मंडप की परिक्रमा करने के लिए भक्तगणों की भीड़ उमड़ रही है। दोपहर एक बजे से सायं 7 बजे तक दिल्ली वृंदावन से आए आचार्य कृष्ण बिहारी तिवारी जी महाराज, वाराणसी से आयी प्रियंका पांडेय एवं विजयगढ़ के चन्द्रबली जी महाराज द्वारा श्री राम कथा एवं श्रीमद्भागवत कथा सुनाई जा रही है। प्रतिदिन दोपहर 2 बजे से सायं 5 बजे तक विशाल भंडारा चलाया जा रहा है, जिसमें भक्तगण प्रसाद ग्रहण कर रहे हैं। वहीं प्रतिदिन अनिल बृजवासी वृंदावन की टीम द्वारा सायं 7 बजे से रात्रि 11 बजे तक रासलीला का मंचन किया जा रहा है। बाबा जंगली दास जी महाराज ने यह भी बताया कि कार्यक्रम के अध्यक्ष रामधीर सिंह पटेल, कोषाध्यक्ष रामखेलावन मौर्य एवं सचिव प्रहलाद मौर्य की देखरेख में आयोजन चल रहा है। सोमवार को वीर प्रताप शर्मा गिरिया की ओर से भंडारा कराया गया है। वहीं मंगलवार को समाजसेविका ऊषा देवी की तरफ से भंडारा चलाया जाएगा। कैलाशी, निर्मला, रामप्रवेश शर्मा, रामनिवास शर्मा, आकाश शर्मा,हरिगोविंद सिंह अइलकर, नागेश्वर सिंह कबरी, जनकदुलारी, उर्मिला देवी, विमला देवी, कालो देवी, हीरा, रमेश, विफ़न देवी, वृजलाल उर्फ बिरजू पुजारी राबर्ट्सगंज, राजेश, रामवृक्ष विश्वकर्मा, ताराचंद महात्मा,रामगति जी महाराज, रामदुलारे, अलिहारी देवी, अजय कुमार मौर्या, राहुल कुमार, परमानन्द, रामधीन पटेल, फूलचंद, पुष्पा सिंह, कन्हैया सिंह, रविता देवी, पूनम, ऊदल दास, कुंदल दास, जानेश्वर महाराज, लालबिहारी विश्वकर्मा के साथ ही गिरिया गांव के लोग तथा दान दाता एवं श्रद्धालु मौजूद रहे।

श्रीलंका की बल्लेबाजी जारी, मेंडिस और करुणारत्ने के बीच मजबूत साझेदारी

नई दिल्ली । रोहित शर्मा की कप्तानी में भारतीय क्रिकेट टीम बेंगलुरु में श्रीलंका के खिलाफ डे-नाइट टेस्ट मैच खेल रही है। इस मैच में श्रीलंका की टीम खेल के तीसरे दिन खबर लिखे जाने तक एक विकेट के नुकसान पर 78 रन बना लिए हैं। श्रीलंका की तरफ से इस वक्त क्रीज पर दिमुथ करुणारत्ने और कुसल मेंडिस मौजूद हैं। इस मैच में भारतीय कप्तान रोहित शर्मा ने टास जीतकर पहले बल्लेबाजी का फैसला किया था और पहली पारी में टीम 252 रन पर आउट हो गई थी। इसके बाद पहली पारी में भारतीय गेंदबाजों के सामने श्रीलंका के बल्लेबाजों ने भी सरेंडर कर दिया और पूरी टीम 109 रन पर ही सिमट गई थी। भारतीय टीम ने दूसरी पारी में 252 रन बनाए और टीम की कुल बढ़त 446 रन की हो गई थी और उसे जीत के लिए 447 रन का लक्ष्य मिला है। भारत की तरफ से पहली पारी में श्रेयस अय्यर ने शानदार 92 रन की पारी खेली थी तो वहीं दूसरी पारी में अय्यर ने 67 तो रिषभ पंत ने 50 रन बनाए थे। भारत की तरफ से पहली पारी में बुमराह ने 5 विकेट लिए थे। भारत को पहला झटका मयंक अग्रवाल के रूप में लगा उन्हें एम्बुलडेनिया ने डी सिल्वा के हाथों कैच आउट कराया। उन्होंने 22 रन बनाए। दूसरे विकेट के रूप में रोहित शर्मा आउट हुए जिन्हें डी सिल्वा ने मैथ्यूज के हाथों कैच आउट कराया। तीसरे विकेट के रूप में हनुमा विहारी 35 रन बनाकर आउट हो गए हैं। उन्हें प्रवीण जयविक्रमा ने आउट किया। विराट कोहली 13 रन बनाकर आउट हो गए। 5वें विकेट के रूप में रिषभ पंत 50 रन बनाकर आउट हुए और उन्हें जयविक्रमा ने आउट किया। जडेजा को फर्नान्डो ने 22 रन पर बोल्ड कर दिया। श्रेयस अय्यर ने 67 रन की पारी खेली जबकि आर अश्विन ने 13 रन बनाए। अक्षर पटेल 9 रन बनाकर आउट हुए।

श्रीलंका की तरफ से जयविक्रमा ने सबसे ज्यादा चार विकेट जबकि एम्बुलडेनिया ने तीन विकेट लिए। इस मैच की पहली पारी में भारतीय ओपनर बल्लेबाज मयंक अग्रवाल 4 रन बनाकर रन आउट हो गए। तो टीम के कप्तान रोहित शर्मा ने सिर्फ 8 रन बनाए और एम्बुलडेनिया की गेंद पर डी सिल्वा को अपना कैच थमा बैठे। हनुमा विहारी ने 31 रन की पारी खेली और वो जयविक्रमा की गेंद पर आउट हुए। विराट कोहली का बल्ला पहली पारी में नहीं चला और वो 23 रन बनाकर डी सिल्वा की गेंद पर पगबाधा आउट हो गए। रिषभ पंत ने टीम के लिए 39 रन का योगदान दिया और वो एम्बुलडेनिया की गेंद पर क्लीन बोल्ड हो गए। मोहाली टेस्ट में 175 रन की नाबाद पारी खेलने वाले जडेजा इस मैच में सिर्फ चार पर पर एम्बुलडेनिया का शिकार बने। आर अश्विन सिर्फ 13 रन बनाकर कैच आउट हुए। अक्षर पटेल को 9 रन पर लकमल ने आउट किया। मो. शमी 5 रन बनाकर आउट हुए। श्रेयस अय्यर ने अच्छी बल्लेबाजी की, लेकिन 92 रन बनाकर स्टंप आउट हो गए श्रीलंका को पहला झटका जसप्रीत बुमराह ने कुसल मेंडिस को 2 रन पर आउट करके दिया। बुमराह ने श्रीलंका का दूसरा विकेट भी लिया और लाहिरू थिरिमाने को 8 रन पर श्रेयस के हाथों कैच आउट करवाया। शमी ने कप्तान दिमुथ करुणारतने को 8 रन पर क्लीन बोल्ड कर दिया। शमी ने डी सिल्वा को 10 रन पर पगबाधा आउट किया। असलंका को अक्षर पटेल ने 5 रन पर कैच आउट कर दिया। एंजेलो मैथ्यूज ने 43 रन की पारी खेली, लेकिन बुमराह ने उनका काम तमाम कर दिया। लसिथ एम्बुलडेनिया के रूप में इस टीम को 7वां झटका लगा उन्हें बुमराह ने आउट किया। 8वें विकेट के रूप में लकमल को अश्विन ने पवेलियन भेजा। श्रीलंका को 9वां झटका डिकवेला और 10वां झटका विश्वा फर्नांडो के रूप के लगा उन्हें अश्विन ने आउट किया। भारत के खिलाफ श्रीलंका का ये दूसरा सबसे न्यूनतम स्कोर है। भारत की तरफ से बुमराह ने 5 विकेट लिए और सबसे सफल गेंदबाज रहे। रोहित शर्मा (कप्तान), मयंक अग्रवाल, हनुमा विहारी, विराट कोहली, रिषभ पंत (विकेटकीपर), श्रेयस अय्यर, रवींद्र जडेजा, रविचंद्रन अश्विन, अक्षर पटेल, जसप्रीत बुमराह, मोहम्मद शमी। दिमुथ करुणारतने (कप्तान), लाहिरु थिरिमाने, कुसल मेंडिस, एंजेलो मैथ्यूज, धनंजया डी सिल्वा, चरिथ असलंका, निरोशन डिकवेला (डब्लूयू), सुरंगा लकमल, लसिथ एम्बुलडेनिया, विश्व फर्नांडो, प्रवीण जयविक्रमा।

बांग्लादेश ने विश्व कप में रचा इतिहास, पाकिस्तान का चौथी हार के बाद बाहर होना तय.....

नई दिल्ली । न्यूजीलैंड में खेली जा रही आइसीसी महिला वनडे विश्व कप में पाकिस्तान की टीम का खराब प्रदर्शन जारी है। सोमवार को बांग्लादेश के खिलाफ खेले गए मुकाबले में उसे 9 रन की हार झेलनी पड़ी। पहले बल्लेबाजी करते हुए बांग्लादेश ने 7 विकेट पर 234 रन बनाए थे जवाब में पाकिस्तान की टीम 9 विकेट पर 225 रन ही बना पाई। यह टीम की लगातार चौथी हार है और अब वह टूर्नामेंट से लगभग बाहर हो चुकी है। इस जीत के साथ ही बांग्लादेश की महिला टीम ने इतिहास रचा है। यह विश्व कप में हासिल की गई टीम की पहली जीत है। पाकिस्तान की टीम को महिला विश्व कप के अपने चौथे मैच में भी हार मिली। टास हारने के बाद पहले बल्लेबाजी करने उतरे बांग्लादेश को शमिमा सुल्ताना और शर्मिन अख्तर ने सधी शुरुआत दी। 37 रन पर टीम को पहला झटका लगा जब शमिमा 17 रन बनाकर आउट हुई। दूसरी ओपनर शर्मिन ने 55 गेंद पर 44 रन की पारी खेली जिसमें 6 चौके लगाए। टीम को पाकिस्तानी गेंदबाजों ने लगातार अंतराल पर झटके दिए लेकिन एक छोर पर रन भी बनते गए। फरजाना हक ने एक छोर को थामे रखा और अपना अर्धशतक पूरा किया। कप्तान निगार सुल्तान के साथ मिलकर फरजाना ने पारी को संभाला और सम्मानजनक स्कोर तक पहुंचने में योगदान दिया। 115 गेंद पर 5 चौके की मदद से वह 71 रन बनाकर आउट हुई। कप्तान 64 गेंद पर 1 चौके की मदद से 46 रन की अहम पारी खेली। निर्धारित 50 ओवर में टीम ने 7 विकेट पर 234 रन का स्कोर खड़ा किया। पाकिस्तान की टीम को लगातार तीन हार के बाद जीत की जरुरत थी लेकिन इसे हासिल करने में नाकाम रही। छोटे से लक्ष्य का पीछा करने उतरी टीम पाक टीम के लिए ओपनर नहीदा खान और सिद्रा अमीन ने शानदार शुरुआत की। पहले विकेट के लिए दोनों न 91 रन जोड़े। नहीदा 67 गेंद पर 43 रन बनाकर आउट हुए और यहां से टीम ने मैच में पकड़ कमजोर कर दी। एक छोर पर अमीन डटी रही और अपना शतक पूरा किया लेकिन उनके अलावा कोई भी बैटर योगदान नहीं कर पाया।

युवराज सिंह की तरह छक्के मारना चाहता है राजस्थान का ये बल्लेबाज

नई दिल्ली । जब भी कोई टीम वर्ल्ड चैंपियन बनती है तो उस देश में युवाओं को अपना हीरो मिल जाता जिसका प्रभाव उसकी जिंदगी पर पड़ता है और फिर वो उसी की तरह बनने का सपना देखने लगता है। 2011 क्रिकेट वर्ल्ड कप के दौरान भी ऐसा ही हुआ जब युवराज सिंह बल्लेबाजी कर रहे थे तो 15 साल के शुभम गढ़वाल के मन में कुछ और ही चल रहा था। शुभम इस बार आइपीएल में राजस्थान की तरफ से खेलते नजर आएंगे।

उन्होंने कहा कि 2011 वर्ल्ड कप के दौरान जब उन्होंने युवराज को बल्लेबाजी करते देखा तो उन्हीं की तरह वो भी खेलना चाहते थे। उन्होंने कहा मैं उस समय वास्तव में छोटा था, अपने होमटाउन जोधपुर में गली क्रिकेट खेल रहा था और सही तरीके से बल्ला भी नहीं पकड़ सकता था। लेकिन युवराज सिंह को बल्लेबाजी करता देख मुझे बहुत प्रेरणा मिली। मैं भी लेफ्ट हैंडर हूं इसलिए मुझे काफी पसंद था जिस तरह से वो गेंद को हिट करते थे। मुझे लगता है कि वह एक ऐसा दौर था जिसने वास्तव में मेरी जिंदगी बदल दी मैं रॉयल्स की तरफ से खेलने के लिए उत्साहित हूं। मैं खुद राजस्थान से हूं और यह मेरे जीवन का सबसे बड़ा पल है। मैंने अपने माता-पिता के चेहरे पर जो खुशी देखी है, वो मुझे टीम को अपना सब कुछ देने के लिए प्रेरित करती है। मैं वास्तव में सांगा सर के साथ भी काम करने के लिए उत्सुक हूं। वे बाएं हाथ के सबसे बड़े बल्लेबाजों में से एक हैं। मुझे यकीन है कि मुझे उनसे बहुत कुछ सीखने को मिलेगा।आक्शन के दिन को याद करते हुए उन्होंने कहा मुझे विश्वास नहीं था कि मुझे चुना जाएगा। जब मुझे खरीदा गया था वो पल मेरे लिए रोमांच से भरा हुआ था। राजस्थान अपने आइपीएल अभियान की शुरुआत 29 मार्च को सनराइजर्स हैदराबाद के साथ करेगा।

पुजारा और रहाणे के बाद अब इस बल्लेबाज की टेस्ट टीम से छुट्टी तय खुद मारी अपने पैर पर कुल्हाड़ी

नई दिल्ली । भारतीय टीम इस वक्त श्रीलंका के खिलाफ घर पर टेस्ट सीरीज में खेल रही है। दो टेस्ट मैचों की सीरीज के लिए चुनी गई टीम में अनुभवी बल्लेबाज चेतेश्वर पुजारा और अजिंक्य रहाणे को चयनकर्ताओं ने जगह नहीं दी थी। इन दोनों ही बल्लेबाजों को खराब फार्म की वजह से टेस्ट टीम के बाहर किया गया था। श्रीलंका के खिलाफ सीरीज के दोनों ही मुकाबलों में फ्लाप रहने वाले ओपनर पर भी अब गाज गिर सकती है। श्रीलंका के खिलाफ टेस्ट सीरीज को ओपनर मयंक अग्रवाल के लिए जीवनदान माना जा रहा था। पिछली सीरीज में केएल राहुल और शुभमन गिल के चोटिल होने के बाद मौका पाने वाले इस बल्लेबाज ने श्रीलंका के खिलाफ हाथ आए मौके को गंवा दिया। सीरीज के दोनों ही मैच में वह रन बनाने में नाकाम रहे। पिछली आठ पारियों में इस ओपनर ने एक भी अर्धशतक नहीं बनाया है। बतौर ओपनर वह टीम को निराश कर रहे हैं और जल्दी आउट होने की वजह से टीम पर दबाब भी बन रहा है। शुभमन गिल के टीम में होने के बाद भी कप्तान रोहित शर्मा और कोच राहुल द्रविड़ ने मयंक को मौका दिया। ओपनिंग में रन बनाने का मौका होता और घर पर खेलते हुए इस बल्लेबाज के पास बड़ा स्कोर करने का अच्छा चांस था जिसे गंवा दिया। श्रीलंका के खिलाफ पहले मैच में मयंक ने 33 रन बनाए जबकि दूसरी पारी में बल्लेबाजी का मौका नहीं आया। दूसरे टेस्ट की पहली पारी में वह महज 4 रन पर आउट हुए जबकि दूसरी पारी में 22 रन ही बना पाए। चयनकर्ताओं ने भारतीय टीम के अनुभवी बल्लेबाज पुजारा और रहाणे को लगातार खराब प्रदर्शन करने की वजह से बाहर कर दिया। इन खिलाडियों को साफ कह दिया गया है कि घरेलू क्रिकेट में रनों का अंबार लगाने के बाद ही वह टीम इंडिया में वापसी कर सकते हैं। श्रेयस अय्यर को मिडिल आर्डर में मौका दिया गया और वह लगातार रन बना रहे हैं ऐसे में इन दोनों की वापसी मुश्किल लग रही है।

कोहली, रोहित, पंत से भी ज्यादा किस खिलाड़ी का खेल पसंद है पूर्व वर्ल्ड चैंपियन कप्तान कपिल देव को, खुद बताया नाम

नई दिल्ली । इसमें कोई शक नहीं है टीम इंडिया में एक से बढ़कर एक खिलाड़ी मौजूद हैं और सब अपनेआप में बेहद प्रतिभाशाली भी हैं। अब इन सबमें किसी एक खिलाड़ी के बारे में ये कहना कि वो सबसे अच्छा खेलता है और वो भी क्योंकि वो बिना किसी की दवाब के खेलते हैं। रवींद्र जडेजा इस वक्त वर्ल्ड के नंबर वन आलराउंडर हैं और श्रीलंका के खिलाफ मोहाली टेस्ट मैच में उन्होंने नाबाद 175 रन की पारी खेली थी और 9 विकेट भी लिए थे। मोहाली टेस्ट मैच में जमकर तारीफ की। कपिल देव ने कहा कि मुझे नए क्रिकेटरों में रवींद्र जडेजा का खेल पसंद है क्योंकि वह बिना दबाव के खेलते हैं। वो क्रिकेट का आनंद लेते हैं और इसी वजह से वो गेंदबाजी के साथ-साथ बल्लेबाजी में भी अच्छे हैं। मैदान पर उनकी फील्डिंग भी शानदार होती है और मेरा मानना है कि अगर आप दवाब में होंगे तो कोई भी काम सही तरीके से नहीं कर पाएंगे। मैदान पर अगर आप दवाब लेंगे तो आपका प्रदर्शन खराब होगा ऐसे में बिना कोई दवाब लिए अपने काम को सही तरीके से करना सबसे अच्छा होता है और जडेजा ऐसा ही करते हैं।

अगर ये बात कपिल देव कहें तो इसका ये मतलब है कि इस खिलाड़ी का कद और उसकी प्रतिभा कितनी जबरदस्त होगी। भारत को अपनी कप्तानी में पहला वनडे वर्ल्ड कप खिताब दिलाने वाले टीम इंडिया के पूर्व कप्तान ने रवींद्र जडेजा की जमकर तारीफ की और कहा कि मौजूदा क्रिकेटर्स में उन्हें रवींद्र जडेजा का खेल सबसे ज्यादा पसंद है उन्हें उनके आलराउंड प्रदर्शन के लिए प्लेयर आफ द मैच चुना गया था। जाहिर है रवींद्र जडेजा ने अपने इस आलराउंड प्रदर्शन के जरिए सबका ध्यान तो अपनी तरफ खींचा ही था साथ ही साथ उन्होंने ये भी साबित किया कि वो भारतीय टीम के लिए कितने अहम हैं। रवींद्र जडेजा की इस पारी के बाद पूर्व भारतीय कप्तान कपिल देव ने उनकी

इस गेंदबाज की बराबरी करने से एक कदम दूर हैं रविचंद्रन अश्विन

नई दिल्ली । भारत और श्रीलंका के बीच खेले जा रहे दूसरे मैच में स्पिन गेंदबाज रविचंद्रण अश्विन ने श्रीलंका के खिलाफ पहली पारी में 2 विकेट लिए हैं। अश्विन ने इस मैच में विशाल फर्नांडो और लकमल का विकेट लिया। इसके साथ ही टेस्ट क्रिकेट में अब उनके नाम 438 विकेट हो गए हैं और वे दक्षिण अफ्रीका के स्टार गेंदबाज डेल स्टेन के 439 विकटों के रिकार्ड से केवल एक कदम दूर हैं। स्टेन के नाम 93 मैचों के 171 इनिंग में 439 विकेट हैं। फिलहाल अश्विन सबसे ज्यादा विकेट लेने के मामले में 9वें नंबर पर हैं। यदि वे एक और विकेट ले लेते हैं तो 8वें नंबर पर पहुंच जाएंगे। भारतीय गेंदबाजों की बात करें तो अश्विन, अनिल कुंबले के बाद सबसे ज्यादा विकेट लेने वाले दूसरे भारतीय गेंदबाज हैं। कुंबले के नाम 619 विकेट हैं और वे पहले स्थान पर हैं।वर्ल्ड क्रिकेट की बात करें तो मुथैया मुरलीधरन 800 विकेट के साथ नंबर वन पर जबकि आस्ट्रेलियाई गेंदबाज शेन वार्न 708 विकेट के साथ दूसरे नंबर पर है। विकटों के मामले में शुरुआत तीन नंबरों पर स्पिन गेंदबाजों का कब्जा है।मोहाली टेस्ट में अश्विन ने भारत के आलराउंडर कपिल देव के 434 विकटों के रिकार्ड को पीछे छोड़ दिया था। उन्होंने उस मैच में 6 विकेट लिए थे। अश्विन ने श्रीलंकाई बल्लेबाज असलांका को आउट कर अपना 435वां विकेट लिया। फिलहाल अश्विन के नाम 86 मैचों में 438 विकेट हैं।मोहाली टेस्ट में अश्विन ने बल्ले से भी अपना योगदान दिया था। अश्विन ने 61 रन की पारी खेली थी। आइसीसी द्वारा जारी आलराउंडर की ताजा रैंकिंग में वे तीसरे नंबर पर हैं जबकि रवींद्र जडेजा ने वर्ल्ड के नंबर वन आलराउंडर हैं। उन्होंने मोहाली टेस्ट में नाबाद 175 रन की पारी खेली थी और 9 विकेट भी लिए थे।

चेन्नई सुपर किंग्स की चिंता बढ़ी टीम के दो स्टार खिलाडियों की फिटनस की नहीं कोई जानकारा

नई दिल्ली । इंडियन प्रीमियर लीग के नए सीजन की शुरुआत से पहले चेन्नई सुपर किंग्स के सामने मुश्किल आ खड़ी हुई है। आइपीएल के मेगा आक्शन में 14 करोड़ की मोटी रकम देकर टीम में शामिल किए गए गेंदबाज दीपक चाहर की चोट से टीम परेशान है। उनके फिटनेस को लेकर सीएसके चिंतित है और खबर है कि वह टूर्नामेंट भी मिस कर सकते हैं। वैसे टीम मैनेजमेंट इस गेंदबाज के फिट होकर नए सीजन में खेलने की उम्मीद जता रही हैं।चेन्नई सुपरकिंग्स (सीएसके) के सीईओ काशी विश्वनाथन ने रविवार को कहा कि टीम प्रबंधन को अब भी अपने अहम खिलाडियों रितुराज गायकवाड़ और दीपक चाहर की फिटनेस पर अपडेट का इंतजार है। इन दोनों को पिछले महीने वेस्टइंडीज के खिलाफ सीमित ओवरों की सीरीज के दौरान चोट लगी थी। रितुराज के हाथ में चोट लगी है जबकि चाहर की पैर की मांसपेशियों में चोट है जिसके कारण उन्हें कम से कम छह से आठ हफ्ते तक बाहर रहना होगा। संभावना है कि चाहर आइपीएल के शुरुआती चरण में नहीं खेल पाएं। टीम को उम्मीद है कि ये दोनों ही खिलाड़ी नए सीजन के मुकाबलों के लिए तैयार हो जाएंगे।विश्वनाथन ने कहा, 'हमें उनकी मौजूदा फिटनेस स्थिति की जानकारी नहीं है और आपको नहीं बता पाऊंगा कि वे कब टीम से जुड़ेंगे। बीसीसीआइ ने हमें बताया है कि मैच फिट होने पर वे हमें जानकारी देंगे। वे अभी एनसीए में हैं।

श्रेयस अय्यर डे-नाइट टेस्ट मैच में यह खास रिकार्ड बनाने वाले पहले भारतीय बल्लेबाज बने

नई दिल्ली । बेंगलुरु में श्रीलंका के खिलाफ डे-नाइट टेस्ट मैच की दोनों पारियों में भारतीय मध्यक्रम के बल्लेबाज श्रेयस अय्यर ने बेहतरीन बल्लेबाजी की। उन्होंने दोनों पारियों में टीम के लिए अच्छी पारी खेलते हुए अर्धशतक लगाया। अपनी इस पारी के दम पर उन्होंने एक खास रिकार्ड भी अपने नाम किया। इस डे-नाइट टेस्ट मैच में भारतीय टीम ने पहली पारी में 252 रन बनाए तो वहीं दूसरी पारी में 9 विकेट पर 303 रन बनाकर पारी की घोषणा कर दी। श्रेयस अय्यर भारत की तरफ से एक डे-नाइट टेस्ट मैच की दोनों पारियों में 50 प्लस की पारी खेलने वाले पहले भारतीय बल्लेबाज बन गए। उन्होंने श्रीलंका के खिलाफ बेंगलुरु टेस्ट मैच की पहली पारी में 98 गेंदों का सामना करते हुए 4 छक्के और 10 चौकों की मदद से 92 रन बनाए थे जबकि दूसरी पारी में 87 गेंदों का सामना करते हुए 9 चौकों की मदद से 67 रन की पारी खेली। वहीं एक डे-नाइट टेस्ट मैच की दोनों पारियों में 50 प्लस की पारी खेलने वाले वो दुनिया के पांचवें बल्लेबाज बने। श्रेयस अय्यर ने श्रीलंका के खिलाफ तीन टी20 और दो टेस्ट मैच की पिछली छह पारियों में पांचवां अर्धशतक लगाया। इस क्रिकेट सीरीज में श्रीलंका के खिलाफ छह पारियों में उन्होंने 57, 7, 73, 27, 92, 67 रन की पारी खेली है। टेस्ट सीरीज के पहले खेले गए तीन मैचों की टी20 सीरीज में श्रीलंका के खिलाफ तीनों मैचों में वो नाबाद रहे थे और उन्हें प्लेयर आफ द सीरीज भी चुना गया था।

राशिफल

मेष-: आज आप काफी भावुक हो जाएंगे और इससे आप मानसिक अस्वस्थता का अनुभव करेंगे. माता से संबंध खराब होंगे या माता के स्वास्थ्य को लेकर चिंता रहेगी।

वृष-: आज जीवन के प्रति उदार दृष्टिकोण अपनाएं। अपनी स्थिति के बारे में शिकायत करने और उसके बारे में दुखी होने से कुछ हासिल नहीं होगा।

मिथुन-: कुछ नया सीखने के लिए आज का दिन अच्छा है. जीवनसाथी के साथ प्यार भरा दिन बिता सकते हैं, इससे आपका रिश्ता मजबूत होगा।

कर्क-: आज आप सभी के आकर्षण का केंद्र रहेंगे और सफलता आपकी पहुंच में रहेगी. आज शाम को आपका घर अवांछित मेहमानों से भरा हो सकता है।

सिंह-: आज अपने ख़र्चों पर नियंत्रण रखें और खुले हाथों से ख़र्च करने से बचें. बच्चों से अनबन के कारण वाद-विवाद हो सकता है और यह झुंझलाहट साबित होगी।

कन्या-: आज आपका मन पूजा के कार्यों में लगा रहेगा. आप घर पर ही कीर्तन करने का प्लान बना सकते हैं। इस राशि के प्रोफेसर के आज प्रमोशन के योग बन रहे हैं

तुला-: आज अधिकारी आपके काम से खुश हो सकते हैं. कार्यक्षेत्र में भी प्रभाव बढ़ सकता है। किसी प्रभावशाली व्यक्ति का आशीर्वाद आपको मिल सकता है।

वृश्चिक-: आप अच्छा पैसा कमा सकते हैं, बशर्ते आप पारंपरिक रूप से निवेश करें। बच्चे आपकी अपेक्षाओं पर खरे न उतरकर आपको निराश कर सकते हैं।

धनु-: आपका खोया हुआ पुराना सामान आज वापस मिलेगा. साथ ही निवेश में लाभ मिलेगा। आज दूसरे क्या कहते हैं, उस पर अच्छा ध्यान दें।

मकर-: आज का दिन आपके लिए भावुक कर देने वाला हो सकता है. भावनाओं के प्रवाह से आप बहक सकते हैं। उलझन को सुलझाएं, नहीं तो उलझन हो सकती है।

कुंभ-: मित्रों का रवैया सहयोगात्मक रहेगा और वे आपको खुश रखेंगे. खर्चों में वृद्धि होगी, लेकिन साथ ही आय में वृद्धि संतुलन बनाएगी।

मीन-: आज का दिन आपके लिए अच्छा रहेगा। अगर आप आज कोई जरूरी काम पूरा करने की सोच रहे हैं तो वो समय से पहले पूरा कर लेंगे।

सम्पादकीय

क्या करे कांग्रेस तो बन सकती है फिर से देश की नंबर एक राजनीतिक पार्टी

पांच राज्यों-उत्तर प्रदेश, पंजाब, उत्तराखंड, गोवा और मणिपुर विधानसभा चुनाव के नतीजे देश की सबसे पुरानी पार्टी कांग्रेस के लिए घोर निराशाजनक साबित हुए। किसी ने कल्पना भी नहीं की होगी कि एक दिन यह पार्टी सिर्फ राजस्थान और छत्तीसगढ़ जैसे दो राज्यों तक सीमित हो जाएगी। एक समय यह पार्टी पूरे भारत में अपनी सरकार बनाती थी, लेकिन आज मुख्य विपक्षी दल बने रहने के लिए भी संघर्ष कर रही है। कांग्रेस की यह स्थिति खुद कांग्रेस की ही देन है। विगत कुछ वर्षों में कांग्रेस एक ऐसे दल के रूप में बदल गई है, जो अपने आप में एक विरोधाभास समेटे हुए है। इसके सारे फैसले नेहरू-गांधी परिवार लेता हुआ नजर आता है। इसका शीर्ष नेतृत्व या कहें हाईकमान राज्यों के नेताओं के पारस्परिक विवादों को सुलझाने में ही लगा रहता है। इसके बाद भी वह बड़े नेताओं के झगड़े सुलझा नहीं पा रहा है। कांग्रेस नेतृत्व की यह स्थिति परवर्ती मुगलों के समान दिखाई देती है। कहने को तो उनके पास पूरा भारत था, लेकिन वास्तव में उनका साम्राज्य सिर्फ पुरानी दिल्ली से पालम तक ही चलता था। पंजाब और उत्तराखंड में इस बार कांग्रेस की जीत की अच्छी संभावनाएं दिख रही थीं। हालांकि पंजाब में नवजोत सिंह सिद्धू एवं कैप्टन अमरिंदर सिंह, फिर बाद में चरणजीत सिंह चन्नी और उत्तराखंड में हरीश रावत एवं प्रीतम सिंह के आपसी कलह ने उसे पूरे परिदृश्य से ही बाहर कर दिया। इसी तरह कांग्रेस में असंतुष्ट नेताओं का एक समूह पनप चुका है जिसे संभालना पार्टी के लिए लगातार कठिन होता जा रहा है। दिक्कत की बात यह है कि कांग्रेस नेतृत्व दशकों से इन्हीं नेताओं पर आश्रित रहा है। आज स्थिति यह है कि इन नेताओं के असहयोग के कारण कांग्रेस हर जगह असमर्थ दिखती है। कांग्रेस को चाहिए कि भाजपा की तरह वह नेताओं की नई पौध को लगातार विकसित करता रहे। उन्हें भविष्य के नायक के रूप में तराशती रहे। कांग्रेस को यह भी विचार करना होगा कि अब उसके दल का कौन-सा पुर्जा पूरी तरह से घिस चुका है, कौनसा पहिया टूट चुका है और किसे राजनीतिक समर से बाहर भेजा जाना चाहिए। वर्तमान का नुकसान भविष्य के विनाश से ज्यादा बेहतर होता है। कांग्रेस के साथ समस्या यह है कि उसके पास अपना कोई पूर्णकालिक अध्यक्ष नहीं है। इसके कारण कार्यकर्ता के साथ-साथ आम जनता कांग्रेस को एक नेतृत्वविहीन दल के रूप में पहचानने लगी है। कांग्रेस को चाहिए कि वह अपना एक पूर्णकालिक अध्यक्ष नियुक्त करे। भले ही वह पारंपरिक रूप से नेहरू-गांधी परिवार का ही क्यों न हो। पूर्णकालिक अध्यक्ष की सक्रियता कांग्रेस में स्फूर्ति का संचार करेगी। वह जनता के सामने एक जागृत और जिम्मेदार दल के रूप में दिखाई देगी। अध्यक्ष के अभाव में पार्टी का बिखरना लगातार जारी रहेगा। समय के साथ इसकी गति भी बढ़ती जाएगी। कांग्रेस समय के साथ अपने आप को नई राजनीति में भी नहीं ढाल पा रही है। अपनी नीतियों को जनता को नहीं समझा पा रही है। हरित क्रांति, श्वेत क्रांति, तमाम आइआइएम-आइआइटी आदि की सूत्रधार होकर भी कांग्रेस की छवि एक सुस्त दल की बनी हुई है। बेरोजगारी, भ्रष्टाचार और पलायन जैसी चीजों को आज भी कांग्रेस की देन माना जाता है, जबकि वास्तविकता यह है कि यह लगभग हर सरकार में रही है। कांग्रेस के साथ एक समस्या यह है कि वह अपनी छवि नहीं बदल पा रही है। वह खुद के प्रति जनता की मानसिकता को बदलने में अक्षम दिख रही है। इसके लिए कांग्रेस को पार्टी में जमीन से जुड़े नेताओं को स्थान देना चाहिए। वर्तमान नेतृत्व को समझना चाहिए कि नए नेता पार्टी में नई ऊर्जा लेकर आएंगे। यह समय मिलकर काम करने का है। उत्तरदायित्व के बंटवारे का है। जनता की मानसिकता को बदलने का है। कांग्रेस के सबसे बड़े नेता राहुल गांधी की भी छवि एक अगंभीर व्यक्ति के रूप में बन गई है। यही वजह है कि कई बार नरेन्द्र मोदी द्वारा की गई उसी गलती को लोग सामान्य मानवीय भूल मान लेते हैं, जबकि राहुल गांधी की गलती को उनकी मेधा से जोड़कर देखते हैं। कांग्रेस को चाहिए कि वह अपने नेता की छवि को भी दुरुस्त करे। जिस तरह से भाजपा अपने नेता की छवि को हर समय अपडेट करती रहती है उसी तरह कांग्रेस को भी अपने नेता की छवि को मजबूत करना होगा।

भारत में महिलाओं के स्वामित्व वाले व्यवसाय विश्व अर्थव्यवस्था को देंगे मजबूती

बिजनेस के मैदान में पहली बार उतरने वाली महिलाएं भी अब अपने धैर्य और कड़ी मेहनत के दम पर पुरुषों की तरह ही सफलता की नई इबारत लिख रही हैं। ज्यादा से ज्यादा महिलाएं अपनी उद्यमशीलता को नए आयाम दे रही हैं, और एकदम नए और गैर-परंपरागत व्यावसायिक क्षेत्रों में कदम रख रही हैं। वे अपना सारा डर ताक पर रख बेझिझक कारोबारी प्रतिस्पर्धा की दुनिया में उतर रही हैं और अपनी वित्तीय स्वतंत्रता सुनिश्चित कर रही हैं। कारोबारी परिदृश्य में इस हालिया बदलाव के पीछे भारत सरकार के कार्यक्रमों की भी अहम भूमिका रही है, जिनका उद्देश्य महिलाओं के दीर्घकालिक सशक्तीकरण को बढ़ावा देना है।विश्व बैंक के मुताबिक, कार्यबल में महिलाओं की हिस्सेदारी दोगुनी होने पर भारत की विकास दर 7.5 फीसदी से बढ़कर 9 फीसदी हो जाएगी और 2025 तक देश की जीडीपी भी बढ़कर 700 बिलियन अमेरिकी डॉलर पर पहुंच जाएगी। भारत में आज महिलाएं जिस तरह मेगा-इकोनॉमिक फोर्स बन रही हैं, उसे दुनिया में व्यापक स्तर पर पहचान भी मिल रही है। भारत में महिला उद्यमियों के स्वामित्व वाले व्यवसायों ने केवल पांच सालों में अनुमानित तौर पर 90 फीसदी की वृद्धि हासिल की है, और ब्रिटेन की महिला उद्यमियों की तुलना में कहीं ज्यादा है।शायद ही किसी ने कल्पना की होगी कि 2021 में भारत एक ही साल में 33 यूनिकार्न के आगाज के साथ इस मामले में दुनिया में तीसरे पायदान पर पहुंच जाएगा, और यहां तक कि ब्रिटेन को भी पछाड़ देगा। हालांकि, भारत में अभी 1 बिलियन डालर वाले ऐसे स्टार्ट-अप की संख्या काफी सीमित है, जिनकी संस्थापक महिलाएं हों। इसके बावजूद बदलता ट्रेंड उत्साहजनक है, क्योंकि भारत के अधिकांश स्टार्ट-अप जो आज यूनिकार्न बन चुके हैं, उनमें एक दशक पहले कोई महिला संस्थापक नहीं थी। ये बेहद रोमांचक है कि बतौर नियोक्ता महिलाओं की भूमिका और सकल घरेलू उत्पाद में उनके अहम योगदानकर्ता होने को लेकर आज गंभीरता के साथ चर्चा हो रही है।कारोबारियों के तौर पर भारतीय महिलाओं की क्षमता पूरी तरह आंकने के लिए निजी और सार्वजनिक क्षेत्रों को राष्ट्रीय और राज्य दोनों ही स्तरों पर बाजारों और वित्त पोषण तक उन्हें अधिक पहुंच मुहैया कराने की दिशा में कदम उठाने चाहिए। इसकी कितनी ज्यादा जरूरत है, इसकी पुष्टि आरबीआइ का एक सर्वेक्षण करता है, जिसमें बताया गया है कि मौजूदा समय में 43 फीसदी छोटे कारोबारों का वित्त पोषण मित्रों और परिवार के योगदान से होता है। इससे भी अहम बात यह है कि लैंगिक समानता को बढ़ावा देने के लिए एनजीओ, नीति निर्माताओं और बड़े निगमों को मिलकर काम करना होगा। खासतौर पर, यदि हम सही मायने में 2030 तक लैंगिक समानता पर संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्य-5 यानी एसडीजी-5 को पूरा करने के प्रति गंभीर है।

हिंदी प्रकाशन में रायल्टी पर रार, क्यों छलका बुजुर्ग लेखक विनोद कुमार शुक्ल का दर्द, जानिए पूरी डिटेल

हिंदी साहित्य में इन दिनों एक बार फिर से विनोद कुमार शुक्ल की चर्चा हो रही है। चर्चा उनकी किसी कृति को लेकर नहीं बल्कि उनके एक बयान को लेकर हो रही है। इंटरनेट मीडिया पर वायरल एक वीडियो में वो अपनी पुस्तकों के प्रकाशकों से नाराजगी व्यक्त कर रहे हैं। उनको इस बात का मलाल है कि उनके प्रकाशकों ने उनकी पुस्तकों पर रायल्टी कम दी या रायल्टी देने में गड़बड़ी की। इस वीडियो के पहले फिल्मों से जुड़े मानव कौल ने विनोद कुमार शुक्ल को मिलने वाली रायल्टी के बारे में लिखा थ विनोद कुमार शुक्ल की आयु 85 वर्ष से अधिक हो रही है। इस उम्र में उन्होंने रायल्टी का मुद्दा उठाया, अच्छी बात है। उनकी पुस्तकों के प्रकाशकों, राजकमल और वाणी प्रकाशन, ने भी अपना पक्ष सार्वजनिक रूप से सामने रखा। इन दोनों प्रकाशकों के प्रमुखों ने विनोद जी को सम्मानित लेखक बताया और उनको समय पर रायल्टी देने की बात कही। 1990 के बाद के वर्षों में विनोद कुमार शुक्ल को लेकर अशोक वाजपेयी और उनकी मंडली के लोग खूब चर्चा करते थे। 1994 में अशोक वाजपेयी को जब संस्कृति मंत्रालय में संयुक्त सचिव रहते साहित्य अकादमी पुरस्कार मिल गया तो उनकी मंडली ने विनोद कुमार शुक्ल के पक्ष में माहौल बनाना आरंभ किया था।उस वक्त साहित्य जगत में ये चर्चा हुई थी कि कवि विष्णु खरे ने विनोद कुमार शुक्ल के उपन्यास 'दीवार में एक खिड़की रहती थी' का प्रकाशन अरुण माहेश्वरी से बात करके वाणी प्रकाशन से करवाया था। चर्चा तो इस बात की भी हुई थी कि वाणी प्रकाशन ने उपन्यास लेखक को अग्रिम भुगतान किया था। विनोद जी हिंदी के प्रतिष्ठित लेखक हैं। उनकी बात को हिंदी जगत में गंभीरता से लिया जाता है। उन्होंने रायल्टी का मसला छेड़ा है तो उनको ये भी बताना चाहिए कि 'दीवार में एक खिड़की रहती थी' का अनुबंध कब हुआ था और उसकी शर्तें क्या

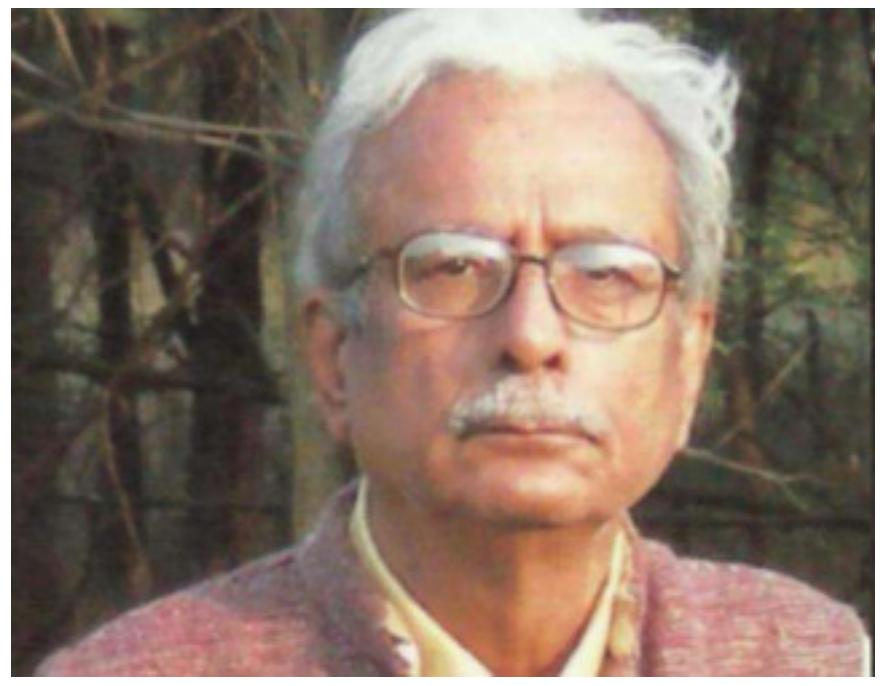

थीं। क्या पुस्तक प्रकाशन के पहले अनुबंध हुआ था या प्रकाशन के बाद, आदि।1997 में विनोद कुमार की पुस्तक 'दीवार में एक खिड़की रहती थी' का प्रकाशन हुआ और दो वर्षों के बाद 1999 में इस पुस्तक पर उनको साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला। अकादमी पुरस्कार के बाद विनोद जी की पुस्तकों की बिक्री बढ़ी होगी, ऐसा अनुमान लगाया जा सकता है। श्रद्धा से मुक्त होकर विचार करना होगा कि क्या विनोद कुमार शुक्ल की पुस्तकें अब भी उतनी ही संख्या में बिकती हैं जितनी बीस वर्ष पहले बिका करती थीं। कोई भी पुस्तक अपने प्रकाशन के दो तीन वर्षों तक अधिक संख्या में बिकती है और उसके बाद धीरे धीरे उसकी बिक्री कम हो जाती है।विनोद कुमार शुक्ल की पुस्तकें इसका अपवाद नहीं हो सकती हैं। किंडल आदि पर तो बिक्री का आंकड़ा पारदर्शी होता है। उसमें तो किसी भी तरह की गड़बड़ी की भी नहीं जा सकती। जितना डाउनलोड होगा उतनी संख्या पता चल जाएगी। हिंदी साहित्य में इन दिनों एक चिंताजनक प्रवृत्ति देखने को मिल रही है, वो ये कि साहित्य से जुड़े कुछ लोग साहित्यिक मसलों का फेसबुक पर फौरी हल चाहते हैं। इस मामले में भी ऐसा ही देखने को मिल रहा है। जिनको प्रकाशन जगत की बारीकियों का कुछ भी नहीं पता वो भी क्रांति की पताका लेकर फेसबुक पर विनोद कुमार शुक्ल के पक्ष में नारेबाजी कर रहे हैं। जबकि इस पूरे मसले को समग्रता में देखे जाने की जरूरत है।इस पर विचार करने की भी आवश्यकता है कि विनोद कुमार शुक्ल जैसे सम्मानित लेखक को इस उम्र में ऐसे सवाल क्यों उठाने पड़ रहे हैं। कुछ वर्षों पूर्व निर्मल वर्मा की पुस्तकों की रायल्टी को लेकर विवाद उठा था। निर्मल जी की पतनै गगन गिल ने तो झुब्ध होकर प्रकाशक बदल दिया था। इन दो लेखकों के अलावा भी लेखकों और प्रकाशकों के बीच रायल्टी को लेकर विवाद होते रहते हैं।दरअसल हिंदी प्रकाशन जगत अनुबंध से अधिक संबंध के आधार पर चलते रहे हैं। पुस्तक प्रकाशन के समय कम ही लेखक अनुबंध पर जोर देते हैं और इससे भी कम लेखक अनुबंध की शर्तों को लेकर प्रकाशक से बातचीत करते हैं। लेखक का जोर तो पुस्तक के प्रकाशन को लेकर रहता है। हिंदी प्रकाशन में कोई मानक अनुबंध नहीं है, अलग अलग प्रकाशकों के अलग अलग अनुबंध पत्र हैं।स्वाधीन भारत में पहली बार रायल्टी को लेकर पहले प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने टिप्पणी की थी। 13 मार्च 1954 को साहित्य अकादमी के तत्कालीन सचिव कृष्ण कृपलाणी को नेहरू ने एक पत्र लिखा था। उस पत्र में उन्होंने निराला जी की आर्थिक मदद की बात की। उसी पत्र में नेहरू ने लिखा था प्रकाशकों ने निराला की पुस्तकें बेचकर काफी मुनाफा कमाया लेकिन निराला को बहुत कम राशि मिली। नेहरू ने इसको प्रकाशकों के लेखक के शोषण का शर्मनाक मसला बताया था। उन्होंने अकादमी से कापीराइट एक्ट में बदलाव को लेकर गंभीरता से काम करने की सलाह भी दी थी। कापीराइट एक्ट में बदलाव तो हुए लेकिन रायल्टी का मसला नहीं सुलझ पाया।नेहरू के कालखंड में भी और उसके बाद भी जो लोग साहित्य की दुनिया में प्रभावशाली रहे उन्होंने लेखक प्रकाशक संबंध को लेकर कोई काम नहीं किया। अगर किया होता तो आज विनोद कुमार शुक्ल को ये सब कहने की जरूरत नहीं पड़ती। एक विशेष कालखंड में हिंदी में लेखक संघ प्रभावी रहे हैं। प्रगतिशील लेखक संघ, जनवादी लेखक संघ, जन संस्कृति मंच जैसे वाम विचार वाले लेखक संगठनों ने रायल्टी के मुद्दे पर कोई गंभीर पहल तो दूर की बात गंभीर मंथन भी नहीं किया। नामवर सिंह प्रगतिशील लेखक संघ से लंबे समय से जुड़े रहे और वो राजकमल प्रकाशन के भी सलाहकार रहे लेकिन लेखक-प्रकाशक अनुबंध के मानकीकरण की दिशा में कोई काम नहीं किया।साहित्य अकादमी में भी नामवर सिंह और उनके खेमे के लेखकों का दबदबा रहा लेकिन रायल्टी का मसला वहां भी दबा ही रहा। बात बात पर अपील जारी करनेवाले लेखकों ने भी कभी रायल्टी के मुद्दे को अपने एजेंडे में शामिल नहीं किया। कश्मीर समस्या से लेकर साप्रदायिकता पर लेखकों को एकजुट करने का दावा करनेवाले अशोक वाजपेयी ने भी रायल्टी के मसले पर कोई पहल की हो, ऐसा याद नहीं पड़ता। वामपंथी लेखकों ने भी लेखकीय अधिकार के लिए कभी एकजुट होकर आवाज नहीं उठाई। वामपंथी लेखकों ने प्रकाशकों के साथ मिलकर स्वयं का स्वार्थ साधा और खामोश रहे।विनोद कुमार शुक्ल ने अगर अपनी लोकप्रियता के कालखंड में रायल्टी का प्रशन उठाया होता तो ज्यादा असरदार होता। वाणी प्रकाशन और राजकमल प्रकाशन के बयानों को देखें तो उसमें विनोद कुमार शुक्ल को ज्यादातर समय अग्रिम भुगतान ही होता रहा है। फेसबुक के क्रांतिवीरों को भी ये देखना चाहिए और इसपर भी सवाल खड़े करने चाहिए। आज आवश्यकता इस बात की है कि रायल्टी के मुद्दे पर ठोस और सकारात्मक पहल हो। लेखकों और प्रकाशकों को अनुबंध के मानकीकरण की दिशा में काम करना होगा। रायल्टी ठीक से और समय पर मिले इसके लिए एक ऐसा तंत्र विकसित करना होगा जिसमें किसी तरह की शंका की गुंजाइश न रहे।पुस्तकों की बिक्री के आंकड़ों का रिकार्ड रखने के लिए भी एक पारदर्शी तंत्र बनाना होगा। लेखकों को भी पुस्तक प्रकाशन के पहले अनुबंध को ध्यान से देखना चाहिए। 'किसी तरह पुस्तक छप जाए' की मानसिकता से बाहर निकलना होगा। प्रकाशकों को भी खुले दिल से लेखकों के साथ बैठकर इस समस्या को दूर करना चाहिए। कोरोनाकाल में प्रकाशन जगत संकट के दौर से गुजर रहा है। लेखकों और प्रकाशकों को रायल्टी के साथ साथ पुस्तको की बिक्री बढ़ाने के उपायों पर भी संयुक्त रूप से विचार करना चाहिए।

विपक्षी दल जनादेश के संदेश को सही से समझें और अपनी रीति-नीति नए सिरे से तय करें

पांच राज्यों के चुनाव नतीजे कई दृष्टि से ऐतिहासिक होने के साथ ही भविष्य की राजनीति पर गहरा असर डालने वाले भी है। इन नतीजों को लेकर ममता बनर्जी समेत अन्य विपक्षी नेताओं की प्रतिक्रिया उनके संकुचित दृष्टिकोण को ही बयान कर रही है, जबकि आवश्यक यह है कि वे जनता के मन-मिजाज को समझने के साथ राष्ट्रीय महत्व के मुद्दों पर अपना एजेंडा स्पष्ट करें। इसलिए करें, क्योंकि चार राज्यों में भाजपा की जीत में राष्ट्रीय मुद्दों की भी भूमिका रही है। आज का मतदाता क्षेत्रीय मसलों के साथ ही राष्ट्रहित के मुद्दों को भी ध्यान में रखकर वोट देता है। इसी कारण जहां उत्तर प्रदेश में योगी आदित्यनाथ ने सत्ता में वापसी के साथ 37 साल से चला आ रहा मिथक तोड़ा, वहीं उत्तराखंड में यह धारणा खंडित की कि हर चुनाव में सत्ता बदल जाती है। चार राज्यों में भाजपा की जीत की तरह पंजाब में अरविंद केजरीवाल की आम आदमी पार्टी ने भी अकल्पनीय प्रदर्शन कर बड़ा संदेश दिया है। राजनीतिक रूप से सबसे अहम राज्य उत्तर प्रदेश में भाजपा ने सपा की चुनौती को जिस तरह मात दी, उसका महत्व इसलिए अधिक है, क्योंकि ऐसा माहौल बनाया जा रहा था कि भाजपा को सत्ता विरोधी लहर का सामना करना पड़ेगा और कथित किसान आंदोलन, लखीमपुर खीरी और हाथरस जैसे कांड उसे बहुत महंगे पड़ेंगे। ऐसा नहीं हुआ। लखीमपुर खीरी समेत 23 जिलों में विरोधी दलों का खाता भी नहीं खुला। उत्तर प्रदेश में भाजपा को कोविड महामारी से उपजी कठिन चुनौतियों के बीच भी जीत इसलिए मिली, क्योंकि जनता ने पिछले पांच साल सुशासन को महसूस किया और विपक्षी दलों के दावों पर भरोसा नहीं किया। कथित किसान आंदोलन के बहाने भाजपा को किसान विरोधी साबित करने की कोशिश जाट बहुल पश्चिमी यूपी में भी नाकाम रही। इस नाकामी की बड़ी वजह यह रही कि आम किसान यह देख रहा था कि भाजपा किसान सम्मान निधि समेत अन्य योजनाओं से उसकी समस्याएं हल करने की हर संभव कोशिश कर रही है। सपा ने भाजपा को चुनौती अवश्य दी और अपनी सीटें एवं वोट प्रतिशत भी बढ़ाया, लेकिन वह यादव-मुस्लिम समीकरण बनाकर भी आगे इसलिए नहीं बढ़ सकी, क्योंकि ऐसा कोई खाका पेश करने में नाकाम रही, जिस पर जनता भरोसा कर पाती। मुस्लिमों और यादवों की गोलबंदी सीमित असर तो डाल सकती है, लेकिन वह

निर्णायक जनादेश नहीं दिला सकती। सपा को यह भी समझना होगा कि ध्रुवीकरण के जवाब में भी ध्रुवीकरण होता है। भाजपा ने अपने राष्ट्रवादी एजेंडे के साथ अपनी राजनीति को जो स्वरूप प्रदान किया है, विपक्ष को उसकी गहराई में जाने की आवश्यकता है। जो लोग भाजपा को हिंदुत्ववादी करार देकर उसे सांप्रदायिक बताते हैं, वे भारत के सांस्कृतिक स्वरूप को नहीं समझते। भाजपा ने इसी स्वरूप को अपनी राजनीति का एक आधार बनाया है। जो हिंदुत्व भाजपा के डीएनए में है, वह सनातन संस्कृति का संस्कार है। जब कोई इस संस्कार को नकारता है या भारतीयता के पर्याय हिंदुत्व को लांछित करता है तो जनता में उसकी प्रतिक्रिया होती है, जिसका लाभ भाजपा उठाती है। इसी कारण विपक्ष प्रधानमंत्री मोदी के करिश्मे का कोई तोड़ नहीं खोज पा रहा है। चार राज्यों और खासकर उत्तर प्रदेश में भाजपा ने डबल इंजन सरकार की क्षमता प्रदर्शित कर जीत हासिल की। यह जीत इसलिए आसान हो गई, क्योंकि प्रधानमंत्री मोदी और गृह मंत्री अमित शाह के साथ मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ सपा शासन में कानून एवं व्यवस्था की बदहाली और जंगलराज वाले खौफ को बयान करने में सफल रहे। यह एक तथ्य है कि योगी सरकार कानून का राज कायम करने में सफल रही।उत्तराखंड में भाजपा ने कांग्रेस की बदहाली का भी फायदा उठाया। तीन बार मुख्यमंत्री बदले जाने के बावजूद पुष्कर सिंह धामी बिगड़ते हालात संभालने में सफल रहे। कांग्रेस ने अपनी निष्क्रियता और निर्णयहीनता के कारण भाजपा की राह आसान बना दी। अब यह भी साफ हो गया कि गांधी परिवार में न तो कांग्रेस को दिशा देने की राजनीतिक सूझबूझ है और न ही यह समझने की क्षमता कि तमाम समस्याओं की जड़ में खुद उसका रवैया है। एक समस्या यह भी है कि कांग्रेस राष्ट्रीय मसलों पर वैसी ही संकीर्णता दिखाने लगी है, जैसी क्षेत्रीय दल दिखाते हैं। उत्तराखंड में राहुल गांधी ने हरीश रावत पर भरोसा नहीं किया और पंजाब में अमरिंदर सिंह पर। नवजोत सिंह सिद्धू के कहने पर अमरिंदर को मुख्यमंत्री पद से अपमानजनक तरीके से हटाकर कांग्रेस ने अपने पैरों पर कुल्हाडि मार ली। रही-सही कसर चरणजीत सिंह चन्नी और सिद्धू की लड़ाई ने पूरी कर दी। इसका लाभ आप को मिला, जो पहले से ही पंजाब में अपनी जड़ें जमा रही थी। उसे कांग्रेस की आपसी लड़ाई के साथ ही भरोसा खो चुके अकाली दल के कारण प्रचंड जीत मिली। यह जीत क्षेत्रीय दलों के लिए एक सबक भी है, लेकिन आप के नेताओं को यह ध्यान रखना होगा कि उनके सामने उन समस्याओं से पार पाने की चुनौती भी है, जिनसे आज पंजाब जूझ रहा है। पंजाब सरीखे सीमांत राज्य का शासन चलाने के लिए कहीं अधिक राजनीतिक परिपक्वता की आवश्यकता है।जब भाजपा चार राज्यों में मिली जीत को 2024 के आम चुनाव में विजय के आधार के रूप में देख रही है, तब एक खास सोच वाले लोग उसकी सफलता को लोकतंत्र के लिए गंभीर चुनौती बता रहे हैं। आम तौर पर ये वही लोग हैं जिनका एजेंडा ही हर सूरत में भाजपा का अंध विरोध करना है। उन्हें न तो भारतीयता की समझ है और न ही राष्ट्रवाद की। इसी समझ का अभाव कांग्रेस और अन्य क्षेत्रीय दलों में भी है। मोदी को अलोकतांत्रिक बताने वाले यह देखने से इन्कार करते हैं कि कांग्रेस समेत अन्य दल किस तरह परिवारवाद में डूबे हैं और सामंती तरीके से संचालित हो रहे हैं। आखिर जो दल अपने परिवार हित को सवीच्च प्राथमिकता देते हों, वे समाज और लोकतंत्र का भला कैसे कर सकते हैं? इसी सवाल पर प्रधानमंत्री ने फिर यह कहा कि परिवारवादी राजनीति ने राज्यों को पीछे धकेला है और चूंकि मतदाता इसे समझ चुके हैं, इसलिए वे ही एक दिन इस राजनीति का सूर्यास्त करेंगे। विपक्षी दलों के लिए यही बेहतर है कि वे जनादेश के संदेश को सही से समझें और अपनी रीति-नीति नए सिरे से निर्धारित करें। ऐसा करके ही वे अपना और देश का भला कर सकेंगे।भूपेंद्र यादव। एक नया भारत बनाने के लिए प्रतिबद्ध भाजपा की यात्रा में 10 मार्च, 2022 की तारीख ऐतिहासिक दिन के रूप में दर्ज हुई है। इस दिन विकास की राजनीति ने धर्म, जाति और वर्ग केंद्रित वोट बैंक की राजनीति को आईना दिखाया। पार्टी ने उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, गोवा और मणिपुर में अपनी कल्याणकारी नीतियों, सुदृढ़ और पारदर्शी शासन के आधार पर जनता का विश्वास हासिल किया। भाजपा की सत्ता में वापसी प्रमाण है कि जनमानस में विशेषकर महिलाओं में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के दूरदर्शी नेतृत्व के प्रति अटूट विश्वास है। राजनीतिक मुकाबलों में विपक्ष के लिए सत्ताधारी दल के खिलाफ खड़ा होना स्वाभाविक है। यह एक स्वस्थ, सशक्त और जीवंत लोकतंत्र के लिए जरूरी भी है। साथ ही उतना ही सच है कि इन सबके बीच विपक्ष की भूमिका भी रचनात्मक होनी चाहिए। भाजपा से लड़ते हुए कांग्रेस ने अर्धसत्य और पूर्ण झूठ का सहारा लिया। फिर चाहे वह कृषि कानूनों पर कुछ किसान समूहों की चिंता का राजनीतिकरण करना रहा हो या सीमावर्ती राच्य की सुरक्षा से समझौता करना। या उत्तर प्रदेश में दुर्भाग्यपूर्ण दुष्कर्म पर कुत्सित राजनीति करना। कांग्रेस सहित भाजपा विरोधी दलों ने ऐसे तमाम हथकंडे अपनाए, लेकिन इससे उन्हें कुछ लाभ नहीं हुआ। उलटे मतदाताओं की नजर में उन्होंने अपनी साख ही गंवाई। आज कांग्रेस इस हाल में पहुंच गई है कि उसे अपनी असफलता पर आत्मचिंतन के बजाय इसमें च्यादा संतोष होता है कि भाजपा कहां सफल नहीं हुई। कांग्रेस को इसी बात का दिलासा है कि पंजाब में भाजपा के बजाय किसी अन्य दल की सरकार बनने जा रही है। इतना ही नहीं, भाजपा को मिले जनादेश को भी ध्रुवीकरण का परिणाम बताकर जनता के मत का अवमूल्यन करने में लगी है। इससे कांग्रेस की मनोदशा सहज ही समझी जा सकती है। जनसंख्या एवं राजनीतिक दृष्टि से देश के सबसे बड़े और महत्वपूर्ण राज्य उत्तर प्रदेश में भाजपा के मत प्रतिशत में वृद्धि हुई है। वर्ष 2017 में भाजपा को राज्य में 39.67 प्रतिशत मिले थे, जो अब बढ़कर 41.6 प्रतिशत हो गए हैं। इसके साथ ही भाजपा 1985 के बाद पहली ऐसी पार्टी बनी, जिसने उत्तर प्रदेश की सत्ता में लगातार दूसरी बार वापसी की। पंजाब में आम आदमी पार्टी यानी आप को भी 42 प्रतिशत मत प्राप्त हुए, लेकिन यह भारी सत्ता विरोधी रुझान का परिणाम रहा, क्योंकि वहां जनता में कांग्रेस सरकार के प्रति गहरा आक्रोश था। इस नाते भी उत्तर प्रदेश में भाजपा की जीत कहीं ज्यादा महत्वपूर्ण है, क्योंकि यहां जनता ने सरकार को वापस लाने के लिए मतदान किया। देश के सबसे बड़े प्रदेश में इतनी बड़ी जीत यही दर्शाती है कि भाजपा पर बार-बार लोगों का मजबूत होता भरोसा कोई संयोग नहीं है। उत्तर प्रदेश में पहले 2014 के आम चुनाव, फिर 2017 के विधानसभा चुनाव, उसके बाद 2019 के आम चुनाव और अब विधानसभा चुनाव में मिला भारी जनादेश यही बताता है कि जनता मोदी जी का सुशासन और डबल इंजन वाली सरकार चाहती है। पूर्वोत्तर में असम के बाद मणिपुर ने भी भाजपा पर फिर से विश्वास जताकर पूर्ण जनादेश दिया है। मणिपुर में 2017 के बाद से कोई बम विस्फोट और कफर्यू नहीं देखने को मिला। इससे लोगों को भरोसा हुआ कि भाजपा न सिर्फ वादे करती है, बल्कि उन्हें निभाती भी है। प्रदेश में पांच साल की शांति और विकास ने मणिपुर के मतदाताओं के मन में कोई संदेह नहीं रखा और उन्होंने भाजपा को दिल खोलकर अपना समर्थन दिया।ˇ भाजपा लगातार तीसरी बार सरकार बनाने जा रही है। उत्तराखंड में भी भाजपा ने स्पष्ट बहुमत के साथ सत्ता में वापसी कर विकास की राजनीति को मुखरता के साथ परिभाषित किया। जहां तक पंजाब की बात है तो इसमें कोई संदेह नहीं कि वहां खुद को मजबूत करने के लिए भाजपा को और वक्त एवं मेहनत की जरूरत है। 2022 के चुनाव परिणामों ने राजनीतिक दलों के लिए स्पष्ट संदेश दिया है कि नए भारत में वंशवाद, जातिवाद, धर्म और अवसरवादी गठबंधनों की राजनीति नहीं चलने वाली है।

संक्षिप्त समाचार

रियल एस्टेट डेवलपर के ठिकानों पर आयकर विभाग की कार्रवाई, दिल्ली और यूपी समेत कई जगहों पर छापेमारी

नई दिल्ली। रियल एस्टेट डेवलपर ओमैक्स ग्रुप पर आयकर विभाग ने शिकंजा कसा है। आयकर विभाग की टीम ओमैक्स ग्रुप के कई ठिकानों पर छापेमारी कर रही है। सूत्रों के मुताबिक, आयकर विभाग की कार्रवाई अभी भी जारी है। सूत्रों ने बताया कि आईटी विभाग ग्रुप के दिल्ली, यूपी, हरियाणा और पंजाब के ठिकानों पर छापेमारी कर रही है। बता दें कि ओमैक्स ग्रुप का नेटवर्क यूपी, पंजाब, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, राजस्थान, हरियाणा और मध्य प्रदेश के कई इलाकों में फैला है। दिल्ली-एनसीआर में भी ओमैक्स के कई प्रोजेक्ट हैं।

चीन में कोरोना के बढ़ते मामलों को लेकर केंद्र वहां से आवागमन नियंत्रित करने पर करे विचार अशोक गहलोत

जयपुर। राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने सोमवार को केंद्र सरकार को चीन में कोरोना के मामलों की बढ़ती संख्या को देखते हुए वहां से लोगों की आवाजाही को नियंत्रित करने की सलाह दी है। गहलोत ने ट्वीट में लिखा कि चीन में कोविड के मामलों में तेजी से बढ़ोतरी हुई है। जब दुनियाभर में कोविड के मामले कम हुए हैं, तब चीन में कोविड केस बढ़ना चिंताजनक है, क्योंकि दो साल पहले कोरोना वायरस की शुरुआत भी यहीं से हुई थी। एक अन्य ट्वीट में गहलोत ने लिखा कि भारत सरकार को चीन के हालातों को देखकर वहां से आवागमन नियंत्रित करने पर विचार करना चाहिए। पूर्व में आई कोविड की तीनों लहरों से सबक लेकर कोई लापरवाही नहीं बरती जानी चाहिए। गौरतलब है कि चीन में वुहान जैसे हालात फिर बन रहे हैं। रिपोर्ट है कि चीन वुहान के बाद अपने सबसे बड़े संकट के कगार पर है। दुनिया के लगभग सभी हिस्सों में फैलने से पहले कोरोना वायरस ने पहली बार दिसंबर 2019 में वुहान में ही कहर बरपाया था। चीन के आइटी हब कहे जाने वाले शेनझेन शहर में कोरोना के मामले तेजी से बढ़ रहे हैं। इधर, दक्षिण कोरिया में लगातार दूसरे दिन साढ़े तीन लाख से अधिक मामले दर्ज किए गए। कोरिया डिजीज कंट्रोल एंड प्रिवेंशन एजेंसी ने कहा कि पिछले 24 घंटे में दक्षिण कोरिया में कोरोना के 3,50,190 नए मामले दर्ज किए गए। एक दिन पहले यहां 3,83,664 मामले दर्ज किए गए थे। संक्रमण पर लगाम लगाने के लिए सरकार ने शहर के प्रमुख बिजनेस सेंटर को बंद कर दिया है। इस शहर के 1.7 करोड़ लोग घरों में कैद हैं। सोमवार से रविवार तक बस और मेट्रो सेवाओं को स्थगित कर दिया गया है।

साथी को मारने के लिए बैग में रखा सुतली बम, यूट्यूब से सीखा बनाने का तरीका

(आधुनिक समाचार सेवा)
देव मणि शुक्ल

नोएडा। एक हफ्ते पहले नोएडा के बहलोलपुर पुश्ता रोड पर सब्जी खरीद रहे युवक की पीठ पर लदे बैग में अचानक विस्फोट हो गया था। इसके कारण युवक गंभीर रूप से घायल हो गया था। इस मामले में युवक को साथी ने मारने की नीयत से बम बनाकर बैग में रखकर दिया था। पुलिस ने आरोपी युवक को शनिवार को गिरफ्तार कर लिया हैं। पुलिस ने आरोपी के खिलाफ धारा 307 और बम अधिनियम के तहत कार्रवाई की है। हरदोई निवासी कपिल नोएडा चोटपुर कॉलोनी में किराए के कमरे में रहता है। बताया गया है कि वह सेक्टर 63 में एक्सपोर्ट कंपनी में काम करता है। पांच मार्च की रात वह ड्यूटी के बाद कमरे पर लौट रहा था। इस दौरान जब वह बहलोलपुर पुश्ता रोड पर पहुंचा तो सब्जी खरीदने लगा। तभी हरदोई निवासी उसका परिचित राम सुबेक आया और कुछ देर के लिए उसे एक बैग पकड़ने के लिए दिया था। उसने बैग को ले लिया तभी बैग में जोरदार विस्फोट हुआ और वह गंभीर रूप से घायल हो गया था। इस मामले में जांच कर रही सेक्टर-63 थाना पुलिस ने शनिवार को आरोपी राम सुबेक को गिरफ्तार कर लिया। पुलिस के अनुसार पकड़ा गया आरोपी राम सुबेक और पीड़ित कपिल एक ही कंपनी में कार्य करते है। कंपनी में कपिल को राम सुबेक के स्थान पर नियुक्त करके नौकरी से निकाल दिया था। इसके कारण रामसुबेक पीड़ित कपिल को मारना चाहता था। इस मामले में कपिल ने आरोपी के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कराई थी। पुलिस ने आरोपी के पास से सुतली, बैट्री और पीड़ित का मोबाइल भी बरामद किया है।

सेक्टर 82 (पाकेट 7) में 8 अप्रैल से श्री राम कथा की होगी अमृत वर्षा

(आधुनिक समाचार सेवा)
देव मणि शुक्ल

नोएडा। सेक्टर 82 पाकेट 7 सेन्ट्रल पार्क मे 8 अप्रैल से कथा व्यास अनंत श्री विभूषित महामंडलेश्वर श्री श्री 1008 स्वामी पंचमानंद जी महाराज (श्री पंचायती महा निर्वाणी अखाडा) के मुखारविंद से नव दिवसीय श्री राम कथा की अमृत वर्षा होगी । श्री राम कथा 8 अप्रैल कलश यात्रा के साथ शुरू होकर 17 अप्रैल हवन आरती और विशाल भंडारे के साथ पुर्णाहुति होगी । कथाव्यास अनंत श्री विभूषित महामंडलेश्वर श्री श्री 1008 स्वामी पंचमानंद जी महाराज ने बताया कि यह कथा सार्वजानिक कथा है ।नोएडा सेक्टर 82 के सभी श्री राम भक्तो के सहयोग से हो रही है।यह कथा 8 अप्रैल से 17 अप्रैल तक चलेगी। जिसमें आप सभी सेक्टर एवं नोएडा वासी सादर आमंत्रित है । आप सभी पहुंच कर कथा का रसास्वादन लेते हुये धर्म लाभ अर्जित करें ।

नप सकते हैं पंगेबाजी करने वाले मंत्री मुकेश सहनी

पटना । उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव में खुलकर विरोध करने के बाद विकासशील इनसान पार्टी (वीआइपी) ने बिहार में भी भाजपा के विरुद्ध मोर्चा खोल दिया है, जबकि जदयू को उसने अपना समर्थन दिया है। ऐसा तब जबकि वीआइपी संस्थापक मुकेश सहनी भाजपा के बूते राज्य के पशुपालन

व मत्स्य संसाधन मंत्री बने हुए हैं। अब उन्हें सरकार से बाहर किए जाने के लिए भाजपा नेता मुखर हो चुके हैं। बहुत संभव है कि सप्ताह भीतर वे चलता कर दिए जाएं। ऐसे में यूपी का बदला बिहार में भाजपा ले सकती। उल्लेखनीय है कि बिहार में राजग की सरकार में भाजपा और जदयू दो बड़े साझीदार हैं, जबकि वीआइपी और हिंदुस्तानी अवाम मोर्चा (हम) क्रमश भाजपा और जदयू के कोटे से सरकार में भागीदार बने हुए हैं। अभी विधानसभा में वीआइपी के तीन विधायक हैं और विधान परिषद में एकमात्र सदस्य मुकेश सहनी हैं। अभी स्थानीय प्राधिकार कोटे से विधान परिषद की 24 सीटों पर चुनाव की प्रक्रिया चल रही है। रविवार को बागी तेवर दिखाते हुए सहनी ने सात सीटों पर अपने उम्मीदवारों के नामों की घोषणा कर दी। राजग में वे सभी सीटें भाजपा कोटे की हैं। सहनी ने 15 सीटों पर राजग प्रत्याशियों को समर्थन भी दिया है, जिनमें 11 जदयू कोटे की हैं। केंद्रीय मंत्री पशुपति कुमार पारस की राष्ट्रीय लोक जनशक्ति पार्टी के एकमात्र प्रत्याशी को भी वे समर्थन दे रहे। इसके अलावा भाजपा को तीन सीटों (औरंगाबाद, कटिहार और गोपालगंज) पर सहनी ने समर्थन देने की घोषणा की है। फिर भी उनके इस स्टैंड से भाजपा के लिए असहज स्थिति पैदा हो गई है।दरअसल, सहनी ने बोचहां विधानसभा सीट पर भी अपनी दावेदारी ठोक दी है, जहां वीआइपी विधायक मुसाफिर पासवान के असामयिक निधन के कारण 12 अप्रैल को उप चुनाव निर्धारित है। 2020 के विधानसभा चुनाव में महागठबंधन छोड़कर राजग में आए वीआइपी को भाजपा ने अपने कोटे से जो 11 सीटें दी थीं, उनमें से एक बोचहां भी थी। उप चुनाव में भाजपा यहां से बेबी कुमारी को प्रत्याशी बनाने जा रही, जबकि सहनी कह रहे कि मुख्यमंत्री नीतीश कुमार इस सीट से राजग प्रत्याशी के नाम की घोषणा करेंगे। इसी के साथ उन्होंने कहा कि बोचहां पर पहली दावेदारी वीआइपी की बनती है और 22 मार्च को पार्टी प्रत्याशी का नामांकन होगा। भाजपा की दावेदारी के संदर्भ में उन्होंने कहा कि जो चाहे, वह चुनाव लड़? के लिए स्वतंत्र है, लेकिन वीआइपी मुसाफिर पासवान के स्वजनों के साथ है। वे विधान पार्षद कोष की राशि भी बोचहां के विकास पर खर्च करेंगे। उल्लेखनीय है कि विधानसभा चुनाव में पराजित हो जाने के बाद सहनी को भाजपा ने अपने कोटे से विधान परिषद भेजा था। मुकेश सहनी को भाजपा के विरुद्ध प्रत्याशी उतारना बिहार में महंगा पड़ने वाला है।

16 मार्च को फाल्गुन महोत्सव एवं मिलन समारोह होगा

(आधुनिक समाचार सेवा)
देव मणि शुक्ल

नोएडा। सेक्टर 41 के सेन्ट्रल मार्केट में उत्तर प्रदेश उद्योग व्यापार मंडल नोएडा महानगर द्वारा फाल्गुन

महोत्सव एवं मिलन समारोह 16 मार्च को आयोजित किया जाएगा ।उद्योग व्यापार मंडल के अध्यक्ष सुनील गुप्ता ने बताया कि 16 मार्च को शाम 5 बजे से यह कार्यक्रम रखा गया है।जिसमें मुख्य अतिथि गौतम बुद्ध नगर पुलिस आयुक्त आलोक सिंह,मुख्य कार्यपालक अधिकारी नोएडा रितु माहेश्वरी एवं गौतम बुद्ध नगर के जिलाधिकारी सुहास एल वाई रहेगे तथा संयुक्त अपर कमिश्नर मुक्तेश चंद्र पान्डेय,संयुक्त अपर कमिश्नर रश्मि श्रीवास्तव एवं डिप्टी कमिश्नर अमित कुमार विशिष्ट अतिथि रहेंगे ।गौतम बुद्ध नगर के सांसद डा महेश शर्मा,विधायक पंकज सिंह, कैं विकास गुप्ता,विमला वाथम ,नवाब सिंह नागर,जोगिन्दर सिंह अवाना की गरिमामयी उपस्थिति रहेगी ।उक्त जानकारी उत्तर प्रदेश व्यापार मंडल की वरिष्ठ सदस्या नीता वाजपेयी ने दिया ।

बंपर सेल के साथ संपन्न हुआ सरस मेला

(आधुनिक समाचार सेवा)
देव मणि शुक्ल

नोएडा। केंद्रीय ग्रामीण विकास मंत्रालय द्वारा नोएडा के सेक्टर 33ए नोएडा हाट मैं आयोजित सरस

आजीविका मेला 2022 का रविवार को 17वें दिन बंपर सेल के साथ समापन हो गया। निरंतर 17 दिनों तक चले सरस मेले में जहां विभिन्न राज्यों के स्वयं सहायता समूह नोएडा वासियों के व्यवहार से संतुष्ट रहे वही नोएडा वासियों को भी देश के विभिन्न राज्यों के उत्पाद नोएडा वासियों को खासे पसंद आए केंद्रीय ग्रामीण विकास मंत्रालय के सरस मेले का आयोजन नोएडा में दूसरी बार हुआ। इससे पूर्व पहला आयोजन 2021 में हुआ था। इस बार का आयोजन पूर्व के आयोजन की तुलना में अधिक सफल रहा है। हालांकि लोगों को समाचार पत्र एवं प्रचार होल्डिंग के माध्यम से जानकारी थी कि रविवार 13 मार्च को मेले का अंतिम दिन होगा। इसीलिए पूर्व नियोजित कार्यक्रम के अनुसार महिलाओं एवं युवतियों कि यहां सुबह से ही आवाजाही शुरू हो गई थी। मेले में खरीददारी के साथ ही सांस्कृतिक कार्यक्रम तथा चोखी हवेली एवं फूड कोर्ट के व्यंजन यहां आकर्षण का केंद्र रहे सरस मेले में अधिकतर बिक्री हैंडलूम तथा हैंडीक्राफ्ट के उत्पादों की रही। जो पहले दिन से लेकर अंतिम दिन तक नोएडा वासियों की निरंतर पसंद बने रहे।इसके अतिरिक्त विभिन्न राज्यों के प्रसिद्ध उत्पादों की भी लोगों ने जमकर खरीददारी की। जिनमें हिमाचल तथा महाराष्ट्र की गाय का शुद्ध देसी घी,मसाले, हेयर, ऑयल, ज्वैलरी एवं अन्य उत्पादों की बिक्री जोरों पर रही। कर्नाटक के कुर्ते मिडी तथा गुजराती बेडशीट की सर्वाधिक बिक्री रही। मेले के पहले दिन से लेकर अंतिम दिन तक कुछ उत्पाद नोएडा वासियों के लिए खास बने रहे। इनमें गुजरात के श्री कृष्णा स्वयं सहायता समूह की बेडशीट तथा कर्नाटक के नंदिनी स्वयं सहायता समूह के कुर्ते तथा मिडी शामिल है। गुजरात के समूह का संचालन पूनमबेन करती है। इनके उत्पाद जूट तथा कुशन द्वारा हाथ से तैयार किए जाते हैं। साथ ही कर्नाटक समूह का संचालन शीला रानी करती है। इनके उत्पाद हस्त निर्मित तथा कर्नाटक के सुप्रसिद्ध उत्पादों में शामिल है। 17 दिन तक चले सरस मेले में जहां समूह के विक्रेताओं एवं खरीददारों की व्यवस्थाओं पर ध्यान दिया गया। वही कोविड-19 प्रोटोकॉल के पालन पर भी पूरा ध्यान दिया गया। देश का सबसे कामयाब मेला नोएडा में रहा : सिंह नोएडा केंद्रीय ग्रामीण विकास मंत्रालय के जॉइंट सेक्रेटरी चिरंजीत सिंह ने सरस मेले में सर्वाधिक बिक्री वाले स्वयं सहायता समूहों को अवार्ड देकर सम्मानित किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि सरस मेले का आयोजन देश भर के अन्य राज्यों में भी होता है। मगर नोएडा हाट में आयोजित यह मेला लॉकडाउन के बाद सबसे अधिक कामयाब रहा। वहीं मेले की कामयाबी एवं सकुशल संपन्न होने पर नोएडा हाट की ओर से देश भर के सभी महिला समूह एवं नोएडा वासियों का आभार व्यक्त किया गया ।इस अवसर पर यहां केंद्रीय ग्रामीण विकास मंत्रालय तथा राष्ट्रीय ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज संस्थान के अधिकारी उपस्थित रहे।

विधायक पंकज सिंह को बधाइयो का ताता

(आधुनिक समाचार सेवा)
देव मणि शुक्ल

नोएडा। भारतीय जनता पार्टी शहरी विकास मोर्चा नोएडा महानगर के सभी कार्यकर्ताओं ने जहाँ एक तरफ़ चुनाव में नोएडा विधायक पंकज

सिंह के लिए ज़मीन वह बूथ स्तर तक काम किया वहीं विभिन्न,सेक्टर व अनेक सोसाइटी, समाज जैसे गढ़वाली समाज, बंगाली समाज, उडिया समाज। कश्मीरी पंडित समाज, मलयालम समाज व इंटेलेक्चुअल को भारतीय जनता पार्टी की नीति व उद्देश्य के साथ जोड़ने का कार्य भी इस मोर्चा के द्वारा किया गया। साथ के साथ विपक्षियों के दावों की पोल खोलना हो या विधायक पंकज सिंह के पाँच साल के कार्य को जन जन तक पहुँचाने का कार्य भी इस मोर्चा के द्वारा किया गया। इस क्रम में भाजपा शहरी मोर्चा अध्यक्ष डॉ प्रसनजीत मैत्रा साथ ही उनकी टीम ने पुनः विधायक बनने पर पंकज सिंह जी को उनकी प्रचंड जीत वह पूरे प्रदेश में जीत के मार्जिन में नंबर एक पर रहने की बधाई उनके कार्यालय पर जाकर दी जिसमें सत्य नारायण महावर , दीपक अवाना, चंदन शर्मा, मनोज भारद्वाज, नेत्रपाल अवाना, अरुण शर्मा, अमित नागपाल, डॉ वी के सिंह ,विकास शर्मा, संतोष खंडूड़ी, मनमोहन आर्या, विनोद मिश्रा, संजय बैसला, अनमोल सहगल,ब्रजेश नारायण शुक्ला,प्रदीप भारद्वाज, परमिंदर राघव ,अखिलेश पाल, अशोक आर्या ,कैप्टन रंजीत मुखर्जी, सार्थकी दें वह अन्य भाजपा देवतुल्य कार्यकर्ता साथ रहे।

13 मार्च को सेक्टर 137 स्थित बायो डायवर्सिटी पार्क में राष्ट्र सेविका समिति का वन विहार कार्यक्रम

(आधुनिक समाचार सेवा)
देव मणि शुक्ल

नोएडा। नोएडा महानगर के श्रद्धानंद नगर का वन विहार और होली मिलन का कार्यक्रम रखा गया । इस

कार्यक्रम में करीब 500 महिलाऐ एवं 150 बच्चों ने भाग लिया । प्रातः शाखा लगाने के बाद विभिन्न आयु वर्ग के अनुसार खेलों का आयोजन हुआ जिसमें महिलाओं एवं बच्चियों की उत्साहपूर्ण प्रतिभागिता रही । जलपान के उपरांत सांस्कृतिक कार्यक्रम हुए जिसमे महिलाओं ने देशभक्ति एवं होली त्योहार से जुड़ी सुंदर गीत प्रस्तुत किए और बच्चियों ने सुंदर नृत्य प्रस्तुत किया । कार्यक्रम के अंत में राष्ट्र सेविका समिति की विभाग कार्यवाहिका श्रीमती सुषमा तिवारी जी और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के महानगर कार्यवाह श्री सत्येंद्र नारायण जी का संबोधन रहा । इस अवसर पर सह विभाग कार्यवाहिका एवं प्रांत सह शारीरिक प्रमुख दीप्ति शर्मा जी और विशेष अतिथि, विभाग बौद्धिक प्रमुख कंचन वासुदेव जी, गाजियाबाद महानगर संपर्क प्रमुख पूर्णिमा जी एवं गाजियाबाद महानगर निधि प्रमुख रेणु तिवारी जी का सान्निध्य प्राप्त हुआ ।महानगर से इंद्राणी मुखर्जी , पद्मा सिंह , प्रियंका सिंह और नगर की बहने डॉ अनिता वार्ष्णेय, संध्या तिवारी , प्रियंका चौधरी , अंजू , रेखा , अनुपमा , विनीता , विभा , मानसी , स्वर्णाली , प्रीति , सपना दत्ता , वर्षा ,लवली प्रीति ,अनुराधा ,सुनीता राघव आदि बहनों का कार्यक्रम के सफल आयोजन में योगदान रहा ।

पंजाब की वो ११ महिलाएं, जो दिग्गज नेताओं को धराशायी कर बनीं विधायक, इनके बारे में जान

जालंधर। पंजाब विधानसभा चुनाव में इस बार आम आदमी पार्टी (आप) की ऐतिहासिक जीत (117 सीटों में 92 पर विजयी) में 13 महिलाएं चुनाव जीतकर विधायक बनी हैं। इनमें से 11 अकेले आप से हैं। गुनीव कौर शिअद की टिकट पर

मजीठा हलके और कांग्रेस नेत्री अरुणा चौधरी दीनानगर विधानसभा क्षेत्र से जीती हैं। सबसे बड़ी बात आप की महिला प्रत्याशी जाइंट किलर के रूप में उभरी हैं। आज हर कोई जानना चाहता है कि नवजोत सिंह सिद्धू को उनके गढ़ में पटकनी देने वाली डा. जीवन ज्योत कौर कौन है। युवा आप नेत्री नरिंदर कौर भराज कौन है, जिन्होंने संगरूर में कांग्रेस के दिग्गज और करोड़पति प्रत्याशी कांग्रेस के पूर्व मंत्री विजय इंदर सिंगला को 36 हजार से ज्यादा मतों से शिकस्त दी है। आइए हम आपको मिलवाते हैं आप की उन सभी 11 प्रत्याशियों से, जो इस चुनाव में दिग्गज विरोधियों को चारों खाने चित्त करके पंजाब विधानसभा में पहुंची है। जाइंट किलर में पहला नाम अमृतसर की डा. जीवन ज्योत कौर (50) का है। उन्होंने अमृतसर पूर्वी सीट से कांग्रेस के दिग्गज प्रदेश अध्यक्ष नवजोत सिंह सिद्धू और बिक्रम सिंह मजीठिया को शिकस्त दी। जीवन ज्योत कौर को अपने समाजसेवी कार्यों के लिए पंजाब की पैड वुमन के रूप में जाना जाता है। अमृतसर पूर्वी में उन्हें 39679, सिद्धू को 32929 औप बिक्रम मजीठिया को 25112 वोट मिले। मात्र 27 साल की नरिंदर कौर भराज ने कांग्रेस के दिग्गज नेता और कैबिनेट मंत्री विजय इंदर सिंगला को चुनाव में करारी शिकस्त दी है। नरिंदर कौर ने वर्ष 2014 में आप ज्वाइन करने के बाद लगातार संगरूर में मेहनत की। साधारण परिवार की नरिंदर कौर ने विजय इंदर सिंगला को लगभग 37 हजार वोटों से हराया। राजिंदर कौर ने पहली बार विधानसभा का चुनाव लड़ा और पहली ही बार में बड़ा उलटफेर कर दिया।

महाराष्ट्र के पूर्व गृह मंत्री अनिल देशमुख की जमानत याचिका खारिज

मुंबई, एएनआइ। महाराष्ट्र की राजधानी मुंबई में मनी लांड्रिंग मामले में विशेष पीएमएलए अदालत ने सोमवार को महाराष्ट्र के पूर्व गृह मंत्री अनिल देशमुख की जमानत याचिका खारिज कर दी है। अवैध वसूली के आरोप में अनिल देशमुख को प्रवर्तन निदेशालय ने दो नवंबर, 2021 को गिरफ्तार किया था। अनिल देशमुख फिलहाल मुंबई की आर्थर रोड जेल में न्यायिक हिरासत में बंद हैं। मुंबई के पूर्व पुलिस आयुक्त परमबीर सिंह ने आरोप लगाया था कि अनिल देशमुख, जो उस समय गृह मंत्री थे, ने मुंबई के कुछ चुनिंदा पुलिस अधिकारियों को रेस्तरां और बार से प्रति माह 100 करोड़ रुपये वसूलने के लिए कहा था। अनिल देशमुख ने इन आरोपों से इन्कार किया है।

शासकीय उचित मूल्य के दुकानों में कम से कम 60 दिवस का खाद्यान्न रखवाना सुनिश्चित करें- अपर कलेक्टर

शहडोल 14 मार्च 2022- अपर कलेक्टर श्री अर्पित वर्मा की उपस्थिति में आज कलेक्ट्रेट कार्यालय की विराट सभागार में समय-सीमा की बैठक आयोजित हुई। बैठक में अपर कलेक्टर ने जिले के सभी अनुविभागीय अधिकारी राजस्व एवं जिला खाद्य आपूर्ति नियंत्रक को निर्देशित किया कि शासकीय उचित मूल्य दुकानों में कम से कम से 60 दिवस का राशन रखा जाए जिससे गोदाम एवं वेयरहाउस में आने वाले रबी फसल के खाद्यान्न रखाव के लिए प्रर्याप्त स्थान हो एवं अनावश्यक खाद्यान्न परिवहन पर व्यय भी नियंत्रित हो। बैठक में अपर कलेक्टर श्री अर्पित वर्मा ने सीएम हेल्पलाइन के लंबित प्रकरणों की विभागवार समीक्षा करते हुए खाद्य, कृषि, खनिज एवं सहकारिता तथा श्रम विभाग के अधिकारियों को निर्देश दिए कि प्रकरणों का पृथक-पृथक अध्ययन कर उनका निराकरण कराएं और निराकरण में औचित्यपूर्ण विवरण लिखा जाए कोई भी प्रकरण अनअटेंडेड न रहें। इस बात का विशेष ध्यान रखा जाए। इसी प्रकार 100 दिवस के ऊपर के लंबित सभी प्रकरणों का निराकरण होना चाहिए विभागीय अधिकारी सुनिश्चित करें। उन्होंने कहा कि विभागीय अधिकारी सीएम हेल्पलाइन के प्रकरणों के निराकरण में रूचि नही दिखा रहें जिसके कारण आधिकाधिक प्रकरण निराकरण के अभाव में लंबित रहते है। 20 मार्च के पूर्व सभी अधिकारी अपने विभाग से संबंधित लंबित प्रकरणों का शीघ्रातिशीघ्र निराकरण कराएं। जिससे उनके ग्रेडिंग में सुधार आ सकें। जिले के सी एवं डी ग्रेट के विभागों पर अपर कलेक्टर ने नाराजगी व्यक्त की और कहा कि आप लोगों के कारण जिले की ग्रेडिंग प्रदेश स्तर पर पिछड़ रही है। बैठक में अपर कलेक्टर ने केन्द्र सरकार पोर्टल में लंबित शिकायतों की समीक्षा की और पंचायत एवं ग्रामीण विकास सहित अन्य विभागों को शिकायतों की जॉच कर तत्काल समाधान करने के निर्देश दिए। बैठक में अपर कलेक्टर ने कहा कि संबल योजना, प्रसूति सहायता योजना व अन्य जनहितकारी योजनाओं का लाभ हर पात्र हितग्राही को मिल सकें इसके लिए सभी संबंधित अधिकारी संवेदनशीलता से कार्य करें तथा योजनाओं का क्रियान्वयन इस प्रकार करें कि इसका शत-प्रतिशत लाभ हितग्राहियों को मिल सकें। बैठक में अपर कलेक्टर ने केसीसी प्रकरणों की समीक्षा करते हुए एलडीएम अग्रणी बैंक को पशुपालन, उज्जवला योजना, दुग्ध उत्पादन समिति, मत्स्य विभाग, कृषि विभाग का लंबित केसीसी प्रकरणों का निराकरण करा कर प्रगति लाना सुनिश्चित करें। बैठक में अपर कलेक्टर ने आयोग के लंबित प्रकरणों का निराकरण करने के भी निर्देश दिए। बैठक में अपर कलेक्टर ने कहा कि 5 अप्रैल को होने वाली समाधान ऑनलाइन एट्रिब्यूट की जानकारी के आधार पर अभी से समाधान कराना सुनिश्चित करें। अपर कलेक्टर ने समय-सीमा की बैठक में न आने वाले अधिकारियों उच्च शिक्षा विभाग, जिला परिवहन विभाग व अन्य पर नाराजगी व्यक्त करते हुए जिला लोक सेवा प्रबंधक श्री अवनीश दुबे को निर्देषित किया कि संबंधित अधिकारियों को पत्र लिखा जाए कि अनिवार्य रूप से समय-सीमा की बैठक में आना सुनिष्चित करें। बैठक में अपर कलेक्टर ने सभी अनुविभागीय अधिकारी राजस्व एवं तहसीलदारों को फसलों के सत्यापन का कार्य प्राथमिकता के आधार पर कराने के निर्देश दिए। बैठक में अपर कलेक्टर ने रबी फसल, किसान पंजीयन, खरीफ फसल, परिवहन की भी समीक्षा की। बैठक में संयुक्त कलेक्टर श्री दिलीप कुमार पांडेय, अनुविभागीय अधिकारी राजस्व सोहागपुर श्री नरेंद्र सिंह धुर्वे, कार्यपालन यंत्री पीआइ-यू श्री रमाकांत पांडेय, जिला कार्यक्रम अधिकारी महिला एवं बाल विकास विभाग श्रीमती शालिनी तिवारी, सहायक आयुक्त जनजाति कार्य विभाग श्री रणमत सिंह, जिला खाद्य आपूर्ति नियंत्रक श्री कमलेश टांडेकर, जिला कोषालय अधिकारी श्री आरएम सिंह, उप संचालक कृषि श्री आरपी झारिया, उप संचालक पशु चिकित्सा डॉ. व्हीव्हीएस चौहान, जिला स्वास्थ्य अधिकारी क्र.02 डॉ. वाई पासवान, सहायक संचालक मत्स्य श्री शिवेन्द्र सिंह परिहार एवं तहसीलदार श्री लवकुश शुक्ला सहित अन्य अधिकारी उपस्थित थें।

दर्शकों को झकझोर रही है 'द कश्मीर फाइल्स' लोग अनुपम खेर से बोले- 'हम सच में नहीं जानते कि कश्मीरी पंडितों के साथ ये सब हुआ

नई दिल्ली। इन दिनों अगर किसी फिल्म की जोर- शोरो से चर्चा है तो वो है विवेक अग्निहोत्री के निर्देशन में बनी द कश्मीर फाइल्स की। इस फिल्म ने रिलीज होते ही बॉक्स ऑफिस धमाल मचाया हुआ है। शुरुआत में केवल 700 स्क्रीन्स पर रिलीज की गई इस फिल्म को दर्शकों की डिमांड के बाद अब देशभर में 2000 स्क्रीन्स पर दिखाया जा रहा है। फिल्म में सभी कलाकारों ने शानदार काम किया है, लेकिन जिसकी एक्टिंग की सबसे ज्यादा चर्चा हो रही है वह अभिनेता अनुपम खेर और अभिनेत्री पल्लवी जोशी है। दर्शक अनुपम खेर से मिलकर फिल्म 'द कश्मीर फाइल्स' और उनकी एक्टिंग की तारीफ कर रहे हैं। इस बात का खुलासा खुद दिग्गज अभिनेता ने सोशल मीडिया के जरिए किया है। अनुपम खेर सोशल मीडिया पर काफी सक्रिय रहने वाले कलाकारों में से एक है। वह अपने फैंस से जुड़े रहने के लिए अक्सर अपनी खास तस्वीरें और वीडियो भी शेयर करते रहते हैं। अनुपम खेर ने अपने आधिकारिक कू ख्दद अकाउंट पर 'द कश्मीर फाइल्स' से जुड़ी अपनी कुछ तस्वीरें शेयर की हैं। इन

तस्वीरों के साथ उन्होंने अपने पोस्ट में लिखा, 'जब एयरपोर्ट पर आपको 12-15 लोग बोलें, आपकी द कश्मीर फाइल्स देखी। माफ कीजिएगा हमें पता ही नहीं था कि कश्मीरी पंडितों के साथ यह सब हुआ था। और फिर सिक्योरिटी कहे, खेर साहब! आपकी फिल्म ने दहला दिया। तो इसका मतलब है हमारी फिल्म लोगों के दिलों तक जा रही है। झकझोर रही है जय हो सोशल मीडिया पर अनुपम खेर का यह पोस्ट तेजी से वायरल हो रहा है। अभिनेता के फैंस उनकी पोस्ट को खूब पसंद कर रहे हैं। साथ ही कमेंट कर अपनी प्रतिक्रिया दे रहे हैं। गौरतलब है कि हाल ही डायरेक्टर विवेक अग्निहोत्री, प्रोड्यूसर अभिषेक अग्रवाल और पल्लवी जोशी पीएम मोदी से मिले। पीएम मोदी ने मेकर्स की तारीफ की कि उन्होंने इस विषय पर फिल्म बनाने की हिम्मत दिखाई। विवेक अग्निहोत्री ने भी एक ट्वीट कर पीएम मोदी का आभार जताया है। आपको बता दें कि 'द कश्मीर फाइल' ने धीमी शुरुआत के बाद बॉक्स ऑफिस पर रफ्तार पकड़ ली है। शनिवार की तरह रविवार को भी फिल्म ने बंपर कमाई की है। इस फिल्म ने पहले दिन जोरदार प्रदर्शन करते हुए उम्मीद से अधिक 3.35 करोड़ का कलेक्शन कर डाला था। हैरानी की बात यह है कि इस फिल्म का बजट ही 14 करोड़ है। दूसरे दिन फिल्म ने 8.25 करोड़ और तीसरे दिन रिकॉर्डतोड़ 14 करोड़ का कलेक्शन किया है। फिल्म ने तीन दिन में करीब 26 करोड़ रुपये का कलेक्शन कर डाला है।

टीवी की 'छोटी बहू' रुबीना दिलैक ने साड़ी छोड़ पहनी मोनोकिनी

नई दिल्ली। रुबीना दिलैक टीवी की सबसे पॉपुलर एक्ट्रेस में से एक हैं। बिग बॉस 14 की विनर ये एक्ट्रेस फिलहाल छोटे पर्दे से गायब हैं पर सोशल मीडिया पर अपनी दिलकश अदाएं बिखेरती रहतीं हैं। रुबीना अक्सर अपने ग्लैमर्स फोटोशूट से फैंस को दीवाना बनाती

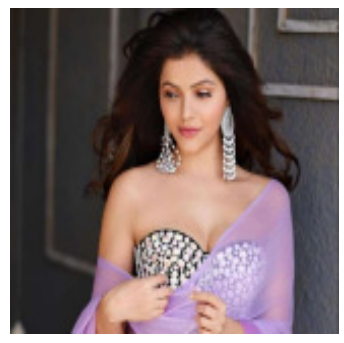

हैं। हाल ही में उन्होंने इंटरनेट पर अपने बिकिनी अवतार से आग लगा दी। एक्ट्रेस की ये तस्वीरें जमकर वायरल हो रही हैं। 'छोटी बहू' की राधिका सिर्फ पर्दे पर ही पल्लू में नजर आतीं हैं, रियल लाइफ में रुबीना काफी बोल्ड हैं। एक्ट्रेस अपने परफेक्ट फिगर को फ्लॉन्ट करने का कोई मौका नहीं छोड़ती। यहां तक कि बिकिनी में भी पोज करने से परहेज नहीं करतीं। हाल ही में रुबीना ने आबुधाबी से कुछ पूल पोज शेयर किए है। यहां देखें तस्वीरें बॉटल ग्रीन कलर की मोनोकिनी में रुबीना काफी हॉट लग रही है। बालों का जूड़ा बनाकर उन्होंने अपने लुक शेड्स के साथ पेयर किया है। तस्वीरों पोस्ट करते हुए कैप्शन में रुबीना ने अपने नए शो वंडर लस्ट का प्रमोशन भी कर दिया। रुबीना कहा कि असली में मेरे जैसा फन करना चाहते हैं को मैक्स्प्लेयर पर वंडर लस्ट देखें। फैंस अपनी फेवरेट स्टार के इस ग्लैमर्स लुक को देखकर काफी खुश हो रहे हैं। लोग कमेंट सेक्शन में फायर इमोजी और हार्ट इमोजी पोस्ट कर रहे हैं। वर्क फ्रंट की बात करें तो रुबीना जल्द ही बॉलीवुड में डेब्यू करने वाली हैं। फिल्म 'अर्ध' में रुबीना अपनी एक्टिंग के जलवे बिखेरने के लिए पूरी तरह से तैयार हैं। हाल ही में फिल्म का पोस्टर लॉन्च किया गया जिसमें रुबीना एक अलग ही अवतार में नजर आईं। इस फिल्म में रुबीना के साथ कुलभूषण खरबंदा, राजपाल यादव और हितेन तेजवानी जैसे सितारे अहम भूमिकाओं में नजर आएंगे। देंगे। इसके साथ ही हाल ही में उनका गाना 'इश्क' रिलीज हुआ है जिसे उनके फैंस से खूब प्यार मिला।

विद्या बालन की फिल्म 'जलसा' को बताया अमिताभ बच्चन के बंगले की बायोपिक, एक्ट्रेस ने दिया ये मजेदार जवाब

नई दिल्ली। एक्ट्रेस विद्या बालन और शेफाली शाह आजकल अपनी अपकमिंग फिल्म 'जलसा' को लेकर काफी चर्चा में बनी हुई हैं। जिसके प्रामोशन के लिए दोनों काफी मेहनत कर रही हैं। हाल ही में विद्या और शेफाली ने एक इंटरव्यू में हिस्सा

लिया। जहां विद्या ने अपनी फिल्म के नाम को लेकर एक मजेदार किस्सा बताया। जब किसी ने उनकी फिल्म 'जलसा' का नाम अमिताभ बच्चन के बगले से जोड़ दिया था। दरअसल, अमिताभ बच्चन के एक बंगले का नाम भी जलसा है। जिसे लेकर किसी ने विद्या की फिल्म को अमिताभ बच्चन के बंगले की कहानी समझ ली। बॉलीवुड हंगामा को दिए एक इंटरव्यू में विद्या ने एक घटना को याद करते हुए बताया कि एक बार किसी ने उनसे पूछा कि क्या उनकी फिल्म अमिताभ बच्चन के बंगले जलसा की बायोपिक है जिसे सुन एक्ट्रेस को काफी अजीब लगा लेकिन विद्या ने भी अपने मजाकिया अंदाज में जवाब दिया और अमिताभ बच्चन के दूसरे बंगले प्रतीक्षा का नाम लेते हुए कहा, 'इस सवाल के जवाब के लिए आपको प्रतीक्षा करनी होगी।' जिसे सुन शेफाली शाह हंसने लगती हैं। विद्या ने आगे कहा, 'इस सवाल का और क्या जवाब दिया जा सकता था।सुरेश त्रिवेणी द्वारा निर्देशित 'जलसा' अमेजन प्राइम पर 18 मार्च को रिलीज होगी। जो एक क्राइम ड्रामा बेस्ड फिल्म है। कुछ दिनों पहले ही फिल्म का ट्रेलर रिलीज किया गया था। जिसके अनुसार 'जलसा' की कहानी विद्या और शेफाली के किरदारों के इर्द-गिर्द घूमती है। विद्या जहां एक हाई प्रोफाइल पत्रकार के किरदार में हैं, वहीं शेफाली उनकी कुक का किरदार निभा रही हैं। शेफाली की बेटी का रोड एक्सिडेंट में डेथ हो जाती है। जो बाद में एक हाई प्रोफाइल मर्डर केस बन जाता है और विद्या इस केस के तह तक जाती है और सच सामने लाने की कोशिश करती है।जलसा का निर्माण अबुंदतिया एंटरटेनमेंट और टी-सीरीज ने किया है। फिल्म में मानव कौल, रोहिणी हट्टंगड़ी, इकबाल खान, विधात्री बंदी, श्रीकांत मोहन, शफीन पटेल और सूर्या कसीभटला भी अहम किरदारों में नजर आने वाले है।

आराध्या बच्चन की शुद्ध हिंदी सुन लोगों को याद आए अमिताभ बच्चन मां ऐश्वर्या राय बच्चन से की तुलना

नई दिल्ली। अमिताभ बच्चन की पोती और अभिषेक बच्चन व ऐश्वर्या राय की बेटी आराध्या बच्चन फिल्म इंडस्ट्री की पॉप्युलर स्टार किड्स में से एक है। 10 साल की छोटी सी उम्र में भी वह लंबी-चौड़ी फैन फॉलोइंग रखती है। आराध्या की एक झलक के लिए उनके फैंस बेताब रहते हैं। हाल ही में आराध्या का एक वीडियो सोशल मीडिया पर खूब वायरल हो रहा है। जिसमें वह शुद्ध हिंदी में कविता सुनाती हुई नजर आ रही हैं। आराध्या का यह वीडियो उनके फैन पेज से शेयर किया गया है। वीडियो में वह लाइट ब्लू कलर की स्कूल ड्रेस पहने दिख रही हैं और बालों को दोनों साइड से पोनी किए हुए बहुत क्यूट नजर आ रही हैं। वीडियो में आराध्या पहले कविता की लाइनें बोलती हैं फिर बताती हैं कि किसी भी भाषा को आसानी से सीखना हो तो कविता द्वारा सीखो। इसके बाद वह अपने स्कूल के प्राइमरी के बच्चों द्वारा सुंदर कविताएं प्रस्तुत करने

की जानकारी देती हुई नजर आती हैं। आराध्या का यह वीडियो इंटरनेट पर खूब वायरल हो रहा है और जमकर लाइक्स और कमेंट्स मिल रहे हैं। एक यूजर ने आराध्या को उनके दादा से कंप्येर करते हुए कहा, 'बिग बी की तरह उसकी आवाज भी पावरफुल है।' एक यूजर ने उनकी तारीफ करते हुए परिवार के संस्कारों की बात कही और लिखा, 'तुम बहुत अच्छी हो बेटा परिवार का संस्कार अच्छे से मिला है आपको। वहीं कुछ लोगों ने आराध्या को उनकी मां ऐश्वर्या राय से तुलना करते हुए उनकी जैसी खूबसूरत और अक्लमंद बताया। एक यूजर ने लिखा, 'अपनी मां की तरह वह भी ब्यूटी विद ब्रेन है।' एक अन्य यूजर ने लिखते हैं, 'आराध्या की आवाज उनी मां ऐश्वर्या की तरह ही है। बता दें कि आराध्या बच्चन का जन्म 16 नवंबर 2011 को हुआ था। वह धीरूभाई अंबानी इंटरनैशनल स्कूल में पढ़ती हैं और यह वीडियो उनके स्कूल फंक्शन का है।

The Kashmir के इस एक्टर ने मांगी माफी, कहा- कश्मीरी पंडितों की दुर्दशा पर चुप रहना मेरी गलती

नई दिल्ली। 'द कश्मीर फाइल्स' में अहम रोल प्ले करने वाले एक्टर प्रकाश बेलावाड़ी ने कश्मीरी पंडितों के साथ हुए बरबरता पर खामोश रहने पर अब माफी मांगी है। प्रकाश बेलावाड़ी ने इस मुद्दे पर फिल्म बनाने के लिए विवेक अग्निहोत्री की तारीफ की है। उन्होंने कहा कि 1990 में कश्मीरी पंडितों पर जो अत्याचार हुआ था तब एक पत्रकार होते हुए भी उन्होंने किसी भी पक्ष का सपोर्ट नहीं करने का फैसला किया था। एक्टर ने एक वीडियो शेयर कर लोगों से ये फिल्म देखने की अपील की है। उन्होंने कहा, 'द कश्मीर फाइल' का हिस्सा बनने मेरे लिए सौभाग्य की बात है। जब मुझे विवेक अग्निहोत्री ने पढ़ने के लिए स्क्रिप्ट भेजी तो मैं शॉक्ड था, क्योंकि तब तक मेरे पास उस हादसे और उस तकलीफ की बारीक जानकारी नहीं थी जो 1990 में

कश्मीरी पंडितों ने जम्मू-कश्मीर में झेली थी।' इस मुद्दे पर खामोश रहने के फैसले की माफी मांगते हुए विवेक ने कहा, 'मैं बहुत शर्मिंदा हूं। उन्होंने कहा, 'मैं गिल्टी फील करता हूं क्योंकि एक पत्रकार के तौर पर और उस वक्त हो रही घटनाओं को कवर करते हुए मैं खुद पर गर्व महसूस करता था, लेकिन अब मैं समझ पाता हूं कि चीजें कितनी अलग थीं। मुझे लगता है कि लंबे वक्त तक इस सबका हिस्सा बने रहकर भी खामोश रहने के लिए मुझे इस समुदाय से माफी मांगनी चाहिए। प्रकाश ने आगे कहा कि मैं विवेक अग्निहोत्री को बधाई देना चाहता हूं और इस विषय पर उनकी रिसर्च और इस मुद्दे को खुलकर सामने लाने के लिए उनकी हिम्मत की मैं दाद देना चाहता हूं। मैं प्रत्येक भारतीय से अपील करता हूं कि जाकर इस फिल्म को देखें और जानें कि उस दौर में उनके ही देशवासियों ने क्या कुछ झेला है। देश के हर एक नागरिक को न्याय का पूरी अधिकार है, उन्हें जो जमीन मिलनी चाहिए जो उनकी है।

जेल से 'दसवीं' करते दिखे अभिषेक बच्चन, एक्टर ने किया फिल्म की रिलीज डेट का एलान

नई दिल्ली। जूनियर बच्चन अभिषेक बच्चन की फिल्म दसवीं की रिलीज डेटा का एलान हो चुका है। ये फिल्म अब ओटीटी प्लेट फॉर्म नेटफ्लिक्स पर स्ट्रीम होगी। फिल्म के रिलीज होने की जानकारी को अभिनेता ने अपने इंस्टाग्राम पर एक वीडियो साझा कर दी हैं, जिसमें अभिषेक बच्चन का अतरंगी रूप दिख रहा है। इस वीडियो में अभिनेता अपने एजुकेशन राइट की बात करते हुए दिख रहे हैं। वीडियो को शुरुआत में अभिनेता कहते हैं, अरे ओ अपराधियों ज्यादा शोर ना करिओं अब से, मैं दसवी की तैयारी कर रहा हूं, जेल से दसवी करना हमारा एजुकेशन राइट है। एक विद्यार्थी द्वारा दूसरे विद्यार्थी को, दसवी की परीक्षाओं के लिए ढेर सारी शुभकामनाएं। साथ ही उन्होंने फिल्म की रिलीज डेट के बारे में जानकारी देते हुए लिखा, दसवीं 7 अप्रैल को नेटफ्लिक्स पर स्ट्रीम होगी। फिल्म दसवीं की कहानी आपको बता दें, तुषार जलोटा के निर्देशन में बनी रही फिल्म 'दसवीं' में अभिषेक बच्चन प्रभावशाली नेता गंगाराम चौधरी का किरदार निभा रहे हैं।

नेपोटिज्म पर भड़कीं सलमान खान की ये एक्ट्रेस, कहा- ऐसे माहौल में मेरे जैसे लोगों को कैसे काम मिलेगा

नई दिल्ली। बॉलीवुड एक्ट्रेस जरीना खान इन दिनों बड़े फायर मूड में हैं। इसलिए तो उन्होंने नेपोटिज्म जैसे मुद्दे पर बेबाक बयान दे, आग में घी डालने का काम किया है। एक्ट्रेस इस बात

से भी खासी खफा हैं कि उन्हें जो भी काम मिलता है उसका श्रेय कई सलमान खान को कैसे दे सकता है। उनका मानना है कि इससे उनकी मेहनत को नजरअंदाज कर दिया जाता है। जैसा कि सभी जानते हैं, जरीन ने वीर में सलमान खान के साथ बॉलीवुड में अपनी शुरुआत की थी। अभिनेत्री को कैटरीना कैफ की सेकेंड कॉपी भी कहा जाता था। उन्हें अपने वजन को लेकर काफी ट्रोल्स का सामना करना पड़ा और इस सब से निपटने में उन्हें काफी मुश्किलों का सामना करना पड़ा। इंडस्ट्री में 12 साल तक रहने के बावजूद, जरीन खान अभी भी अपनी जगह तलाश रही हैं और उन्हें लगता है कि उनकी क्षमता का अभी तक उपयोग नहीं किया गया है। यह पूछे जाने पर कि उन्होंने बहुत सारे प्रोजेक्ट्स में काम क्यों नहीं किया, एक्ट्रेस ने हिंदुस्तान टाइम्स को बताया, 'बहुत सारे कारण हैं। सबसे पहले इस इंडस्ट्री का हिस्सा बनने के लिए सबसे जरूरी है कि आप बेहद सोशल रहें, सभी पार्टियों में शामिल हों और लोगों से जुड़ें। किसी तरह अपने करियर की शुरुआत में, मुझे नहीं पता था कि नेटवर्क कैसे बनाया जाता है और इन पार्टियों में दिखना आपके काम के लिए बहुत महत्वपूर्ण है।' जैसा कि ज्यादातर लोग जानते हैं, जरीन खान किसी फिल्मी बैकग्राउंड से ताल्लुक नहीं रखती है। अपने करियर की शुरुआत के दौरान ज्यादा मेलजोल न करने के उनके फैसले से उनके करियर को नुक्सान ही हुआ है। अब एक्ट्रेस ने इसपर अपना रिएक्शन दिया है। जरीन खान ने कहा, 'चूंकि मैंने इंडस्ट्री के लोगों के साथ फ्रेंड बनने के लिए इतना प्रयास नहीं किया, इसलिए मेरे पास अवसरों की कमी थी। इस समय लोग ये सोचते हैं कि इंडस्ट्री में लोग अपने दोस्तों को ही काम देते हैं। अगर लोग बॉलीवुड में अपने दोस्तों की सिफारिश करते रहेंगे तो मेरे जैसे लोगों को काम कैसे मिलेगा वर्कफ्रंट पर बात करें तो जरीन खान को आखिरी बार 'हम भी अकेले तुम भी अकेले' में देखा गया था, जो एक ओटीटी रिलीज थी।

जल्द दूसरी शादी करेंगी 'बेबी डॉल' सिंगर कनिका कपूर

नई दिल्ली। मशहूर गायिका कनिका कपूर ने एक बार फिर से शादी करने का फैसला किया है। वह जल्द अपने एनआरआई ब्वॉयफ्रेंड

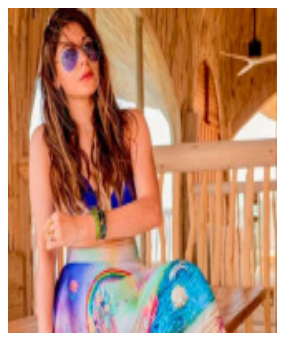

से शादी करने वाली हैं। कनिका कपूर की यह दूसरी शादी होगी। कनिका कपूर ने 'बेबी डॉल' और 'लवली' सहित बॉलीवुड के कई शानदार गाने गाए हैं। 'बेबी डॉल' ने उन्हें असली पहचान दिलाई है। उनकी शादी को लेकर काफी समय से चर्चा थी। अंग्रेजी वेबसाइट टाइम्स ऑफ इंडिया की खबर के अनुसार कनिका कपूर इस साल मई में ब्वॉयफ्रेंड गौतम से शादी करने वाली हैं। इससे पहले भी उन्होंने एनआरआई राज चंदोक से शादी की थी, लेकिन साल 2012 में कनिका कपूर और राज चंदोक का तलाक हो गया था। अब एक बार फिर से गायिका ने एनआरआई की पत्नी बनने का फैसला किया है। खबरों के अनुसार पिछले छह महीने से गौतम कनिका से शादी करने की प्लानिंग कर रहे हैं। वहीं कनिका और गौतम एक साल से एक-दूसरे को डेट कर रहे हैं। इन दोनों ने लंदन में शादी करने का फैसला किया है। वहीं कनिका कपूर ने अपनी शादी की खबरों का न ही खंडन किया और न ही कोई प्रतिक्रिया दी है। आपको बता दें कि कनिका कपूर तीन बच्चों की मां हैं।

रुमर्ड ब्वॉयफ्रेंड के साथ स्पॉट हुई सुजैन खान

नई दिल्ली। बॉलीवुड अभिनेता ऋतिक रोशन की एक्स वाइफ सुजैन खान का नाम बीते कुछ समय से अर्सलान गोनी के साथ जुड़ रहा है। अर्सलान टीवी अभिनेता और बिग बॉस के एक्स कंटेस्टेंट अली गोना के भाई हैं। सुजैन खान और

अर्सलान गोनी को अक्सर साथ में देखा जाता है। ऐसे में फिल्मी गलियारों में इस तरह की खबरें हैं कि यह दोनों एक-दूसरे को डेट कर रहे हैं। हालांकि न तो सुजैन खान और न ही अर्सलान गोनी ने अपने रिश्ते को लेकर आधिकारिक बयान दिया है। इस बीच एक बार फिर से इस कपल को साथ देखा गया है। जिसके बाद से सुजैन खान सोशल मीडिया यूजर्स के निशाने पर आ गई हैं और उन्हें जमकर ट्रोल किया जा रहा है। दरअसल सिलेब्रिटी फोटोग्राफर विरल भियानी ने अपने आधिकारिक इंस्टाग्राम अकाउंट पर एक वीडियो शेयर किया है। यह वीडियो सुजैन खान और अर्सलान गोनी का है। उनका यह वीडियो एयरपोर्ट का है। वीडियो में सुजैन खान ब्लैक और ब्लू ड्रेस में दिखाई दे रही हैं। वहीं अर्सलान गोनी भी स्मार्ट लुक में नजर आ रहे हैं। वीडियो में सुजैन खान और अर्सलान गोनी ने पैपराजी के सामने पोज भी दिए हैं। सोशल मीडिया पर इन दोनों का यह वीडियो तेजी से वायरल हो रहा है। वहीं कई सोशल मीडिया यूजर्स उन्हें ट्रोल भी कर रहे हैं। नाम के यूजर ने सुजैन खान और अर्सलान गोनी के वीडियो पर कमेंट करते हुए लिखा, 'अरे सुजैन आंटी जी ऋतिक रोशन रोशन में क्या कमी थी। ने कमेंट में लिखा, 'उसकी पर्सनालिटी कैसे बदली है जब वह ऋतिक के साथ थी तो वह कोमल और परिपक्व दिखती थीं अब वह 20 साल की लगती है जो नहीं जानती कि वह क्या करना चाहती है बस मस्ती और मस्ती करती है यह हैरान कर देने वाला है। 2377 ने लिखा, 'वह डायमंड और कांच के टुकड़े में फर्क नहीं जानती इसलिए उन्होंने ऋतिक को छोड़ दिया और अर्सलान को चुना।

Radhe Shyamed 3 ही दिन में 100 करोड़ वे क्लब में शामिल हुई बाहुबली प्रभास की राधे श्याम, कमाएं इतने करोड़

नई दिल्ली। बाहुबली स्टार प्रभास और पूजा हेगडे की फिल्म राधे श्याम रिलीज होने के बाद से ही बॉक्स ऑफिस पर अपनी पकड़ बना रही है। रविवार को फिल्म की कमाई का काफी उछाल दिखाई दिया है। फिल्म में केवल तीन दिनों में ही 100 करोड़ के क्लब में शामिल हो गई मनोबाला विजयबालन के ट्विटर के अनुसार फिल्म ने पहले दिन 72.41 करोड़ की कमाई की, दूसरी दिन 39.65 करोड़ रुपए की कमाई की थी। इसके साथ ही फिल्म राधे श्याम वर्ल्ड वाइड लगभग 100 करोड़ का कलेक्शन किया है। वहीं कई रिपोर्ट्स के अनुसार में रविवार को (साउथ इंडिया में) लगभग 35 करोड़ का

कलेक्शन किया है और हिंदी बैल्ट में बाहुबली की फिल्म ने लगभग 4 करोड़ का कलेक्शन किया है। राधे श्याम की बॉक्स ऑफिस पर इस धमाकेदार शुरुआत को फिल्म निर्माता एक अच्छा संकेत मान रहे हैं। देखना होगा कि प्रभास की ये फिल्म अल्लू अर्जुन की 'पुष्पा द राइज' के बराबर कमाई करने के मामले में फिल्म की बराबरी कर पाती है या नहीं। क्योंकि 'बाहुबली' के बाद से हिन्दी बेल्ट में भी प्रभास की काफी अच्छी फैन फॉलोइंग है। फिल्म राधे श्याम की कहानी साल 1970 के दशक में यूरोप में स्थापित एक रोमांटिक ड्रामा है, जिसमें प्रभास और पूजा हेगडे मुख्य भूमिका निभा रहे हैं। इस रोमांटिक फिल्म में प्रभास ने एक हस्तरेखाविद विक्रमादित्या का किरदार निभाया है, जो एक डॉक्टर के प्यार में पड़ जाता है। वहीं, फिल्म में एक्ट्रेस ने डॉक्टर प्रेरणा किरदार निभाया है। राधा कृष्ण कुमार द्वारा निर्देशित इस फिल्म में प्रभास और पूजा हेगड़े के अलावा भाग्यश्री, सचिन खेडेकर जयराम, जगपति बाबू और मुरली शर्मा ने भी अहम भूमिका निभाई हैं। कृष्णम राजू द्वारा गोपी कृष्ण मूवीज के बैनर तले यूवी क्रिएशन्स और टी-सीरीज द्वारा निर्मित ये फिल्म लगभग 3 साल बाद 11 मार्च को सिनेमाघरों में रिलीज हुई है। कोरोना महामारी के चलते फिल्म की रिलीज डेट और शूटिंग को कई बार पोस्टपोन किया गया था।

स्वत्वाधिकारी एवं मुद्रक
डा0 दीपक अरोरा द्वारा
रामा प्रिन्टर्स 53/25/1 ए
बेली रोड न्यू कटरा प्रयागराज
(उ.प्र.) 211002 से मुद्रित
एवं सी-41 यूपी एसआईडीसी
औद्योगिक क्षेत्र नैनी प्रयागराज।
(उ.प्र.) 211010 से प्रकाशित।
सम्पादक/प्रकाशक
डा0 पुनीत अरोरा
मो0न0 09415608710
RNI No. UPHIN/2015/63398
website:www.adhuniksamachar.com

नोटः- इस समाचार पत्र में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा इनसे उत्पन्न समस्त विवाद इलाहाबाद न्यायालय के अधीन ही होंगे।